Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 276 ● वर्ष : 11 ● रायपुर, मंगलवार 30 अप्रैल 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

दुनिया का सबसे अच्छा साथी
आपका अपना निश्चय है।
Your decision is the best
friend of the world.
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

राहुल गांधी ने बिलासपुर की आमसभा में कहा- कांग्रेस पार्टी संविधान को बचाने की कोशिश कर रही है : राहुल गांधी

रायपुर (आरएनएस)। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र के सकरी में सभा को संबोधित करते हुये कहा कि ये चुनाव मामूली चुनाव नहीं है, इसमें विचारधारा की लड़ाई है। एक तरफ कांग्रेस पार्टी और दूसरी तरफ बीजेपी, जो लोग राजनीतिक को समझते हैं। हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग हैं उनको मालूम है ये संविधान का चुनाव है संविधान को बचाने का संविधान है। इसको प्रधानमंत्री जी, बीजेपी के नेता, आरएसएस के लोग खत्म करना चाहते है, बदलना चाहते है। एक तरफ वो कांस्टिट्यूशन को बदलने में लगे हैं तो दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी संविधान को बचाने की कोशिश कर रही है। ये 2024 का चुनाव एक प्रकार से संविधान का चुनाव है। संविधान सिर्फ एक किताब नहीं है। ये इस देश में गरीबों को अधिकार देता है, गरीबों की रक्षा करता है, उनके भविष्य की देखभाल करता है, और देश में उनकी आवाज और उनका जीने का तरीका है उसका रक्षा करता है। बीजेपी चाहती है इसे फाड़कर फेंक दिया जाये और 20-25 अरबपति लोग राज करे और बाकी जनता देखती रहे। बीजेपी के नेता कहते हैं एक नहीं अनेक ने कहा है हमारी सरकार बनेगी तो इस बार हम कांस्टिट्यूशन को संविधान को खत्म कर देंगे। दूसरे नेता कहते है कि रिजर्वेशन को खत्म कर देंगे। संविधान से रिजर्वेशन निकला,

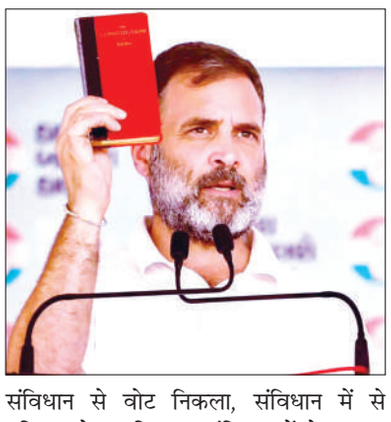

संविधान से वोट निकला, संविधान में से पब्लिक सेक्टर निकला, संविधान में से आपका अधिकार निकला, ये सब संविधान की देन है। और अगर ये चला जायेगा तो आदिवासियों की जल, जंगल, जमीन, जीने का तरीका आशायें गायब हो जायेगी। बीजेपी के लोग आप को वनवासी कहते है। आप लोग आदिवासी हो।

राहुल गांधी ने आगे कहा कि आदिवासी का मतलब वो लोग इस देश के पहले मालिक थे और ये चाहते है आपको वनवासी कहते है, आपके जल, जंगल, और जमीन चले जाये और दूसरे प्रदेशों में जाके आप भीख मांगों। दलितो को अगर अधिकार मिला तो संविधान ने दिया। पिछड़ो को रिजर्वेशन मिला तो संविधान ने दिया। इसके बिना हिन्दुस्तान के गरीब लोगों के लिये कुछ नहीं बचने वाला है। रिजर्वेशन एक सोच है, रिजर्वेशन का मतलब हिन्दुस्तान के पिछड़ों को, दलितो को, आदिवासियों को देश में भागीदारी मिलनी चाहिये। जब ये ठेकेदारी प्रथा लागू करते है तो ये रिजर्वेशन को खत्म करते है। जब ये अग्निवीर जैसे योजना को लाते है तो ये रिजर्वेशन को खत्म करते है। पब्लिक सेक्टर में दलितो को, आदिवासी को, पिछड़ों को जगह मिलती थी जैसे ही पब्लिक सेक्टर को प्राइवेट कर दिया जाता है, प्राइवेट सेक्टर में न दलित को, न पिछड़ों को, न आदिवासी को जगह मिलती है। ये सच्चाई है। मैं चैलेंज करता हूं किसी भी बीजेपी के नेता को वो कह दे हम पब्लिक सेक्टर यूनिट को प्राइवेटाइज नहीं करेंगे। अगर वो कह दे हम ठेकेदारी प्रथा को बंद कर देंगे। वो कह दे हम किसानों का कर्जा माफ कर देंगे, ये लोग कर नहीं कर सकते क्योंकि इनकी विचारधारा अंबेडकर जी, नेहरू जी, गांधी जी की नहीं है। इनकी विचारधारा चुने हुये लोगों की मदद करने की है, इनकी विचारधारा अंबानी, अडानी जैसे लोगों को हिन्दुस्तान की जल, जंगल, जमीन देने की है। अब हिन्दुस्तान की जनता को ये बात समझ आ गयी, पता लग रहा है चुनाव में दलित को, पिछड़ों को, आदिवासी को ये बीजेपी के लोग नरेंद्र मोदी संविधान को खत्म करने में लगे है।

कांग्रेस और I.N.D.I.A पर पीएम मोदी का हमला, कहा- दो चरण के चुनाव में ही विपक्षी गठबंधन का हुआ डब्बा गोल

देश की सत्ता हथियाने का सपना देख रही कांग्रेस : प्रधानमंत्री

सोलापुर (एजेंसी)। देशभर में लोकसभा चुनाव का माहौल बना हुआ है। पहले और दूसरे चरण के चुनाव समाप्त हो गए हैं। अब आगामी चरणों के चुनाव के लिए सभी राजनीतिक दल रैलियां और जनसभाएं कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी ताबड़तोड़ चुनावी रैलियां कर रहे हैं। आज प्रधानमंत्री मोदी महाराष्ट्र के पुणे शहर में एक मेगा रैली करेंगे। उससे पहले उन्होंने सोलापुर में जमकर कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस फिर से देश की सत्ता हथियाने का सपना देख रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस चुनाव में आप अगले पांच वर्ष के लिए विकास की गारंटी को चुनेंगे। दूसरी ओर वो लोग है जिन्होंने 2014 से पहले देश को आतंकवाद, भ्रष्टाचार और कुशासन के गर्त में

धकेल दिया था। अपने कलंकित इतिहास के बाद भी कांग्रेस फिर से देश की सत्ता हथियाने का सपना देख रही है। इन्हीं अंदाजा ही नहीं कि पहले दो चरण के चुनाव में विपक्षी गठबंधन का डब्बा गोल हो चुका है।

इंडी गठबंधन में नेता के नाम पर महायुद्ध चल रहा : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि इंडी गठबंधन में नेता के नाम पर महायुद्ध चल रहा है। क्या आप इतना बड़ा देश किसी ऐसे व्यक्ति को सौंप सकते हैं जिसका नाम तय न हो, जिसका चेहरा न मालूम हो? क्या इतना बड़ा देश आप उन्हें दे सकते हैं? ये नकली शिवसेना वाले कह रहे हैं कि उनकी पार्टी में प्रधानमंत्री पद के लिए कई लोग हैंऔर उनके एक नेता ने कहा कि हम एक साल चार पीएम बनाए तो क्या जाता है?

वोट बैंक के लिए धर्म आधारित आरक्षण की योजना बना रही कांग्रेस : मोदी

बंगलूरू (एजेंसी)। तीसरे चरण के मतदान से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर्नाटक के बागलकोट में चुनाव प्रचार किया। इस दौरान उन्होंने एक रैली को संबोधित भी किया। रैली में प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी कांग्रेस को कई मुद्दों पर घेरा। उन्होंने विपक्षी पार्टी पर वोट बैंक की राजनीति के लिए देश में धर्म आधारित आरक्षण की योजना बनाने का आरोप लगाया है। पीएम मोदी ने बताया कि वह देश में कभी भी ऐसा होने नहीं देंगे। राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए प्रस्ताव लेकर आई है, क्योंकि उन्हें मालूम है कि अल्पसंख्यकों का समर्थन भाजपा के साथ है। रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि कर्नाटक में कांग्रेस ने संविधान बदलने और एससी/एसटी और ओबीसी के अधिकार छीनने का अभियान शुरू किया है। हमारा संविधान धर्म आधारित आरक्षण को स्वीकार नहीं करता है। लेकिन कर्नाटक सरकार ने ओबीसी आरक्षण का एक हिस्सा मुसलमानों को दिया है।

संक्षिप्त समाचार

जमानत के लिए निचली अदालत में क्यों नहीं गए अरविंद केजरीवाल : सुको

नई दिल्ली (आरएनएस)। दिल्ली आबकारी नीति केस में तिहाड़ जेल में बंद दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पूछा है कि मुख्यमंत्री ने निचली अदालत में जमानत की अर्जी क्यों नहीं दायर की। केजरीवाल की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि गिरफ्तारी गैर कानूनी होने के कारण जमानत के लिए अर्जी दायर नहीं की गई थी। दरअसल केजरीवाल ने ईडी की तरफ से की गई गिरफ्तारी को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। केजरीवाल की याचिका पर सुनवाई जस्टिस संजीव खन्ना की बेंच कर रही है।

उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने वापस लिया नामांकन; बीजेपी में हुए शामिल

इंदौर (आरएनएस)। मध्य प्रदेश के इंदौर संसदीय क्षेत्र में कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। यहां से पार्टी के उम्मीदवार अक्षय कांति बम ने अपना नामांकन वापस ले लिया है। इस तरह अक्षय कांति बम ने एक तरह से सियासी बम फोड़ दिया है। इंदौर में कांग्रेस के अक्षय कांति बम और भाजपा के उम्मीदवार शंकर लालवानी के बीच मुकाबला था, मगर सोमवार को अक्षय ने निर्वाचन कार्यालय पहुंचकर अपना नामांकन वापस ले लिया। अक्षय कांग्रेस को झटका देने के बाद भाजपा में शामिल हो गए हैं।

अरब सागर में 1200 करोड़ की हेरोइन जब्त; दो गिरफ्तार

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारतीय तटरक्षक तथा गुजरात के आतंकवाद रोधी दस्ते ने अरब सागर में संयुक्त अभियान में एक भारतीय नौका को पकड़ कर 1200 करोड़ रुपये कीमत की 173 किलोग्राम हेराइन जब्त कर उस पर सवार दो लोगों को गिरफ्तार किया है। यह लगातार दूसरा दिन है, जब ड्रग्स की इतनी बड़ी खेप पकड़ी गई है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने चुनावी रैली में कहा- देश को मजबूर नहीं मजबूत नेतृत्व चाहिए

बेगूसराय (आरएनएस)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मंत्रिमंडल में सहयोगी और बेगूसराय से भाजपा के प्रत्याशी गिरिराज सिंह के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कि देश को मजबूर नहीं मजबूत नेतृत्व चाहिए, जो देश को आगे ले जा सके।

उन्होंने कहा कि जब आपने 300 सीटें दी तो हमने 370 हटाया। इस बार 400 सीट दीजिए नरेंद्र मोदी दुनिया में देश को नंबर वन बनाने का काम करेंगे। नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का मतलब है देश को दुनिया में नंबर तीन का अर्थ तंत्र बनाना और आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देना। उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन वाले कहते हैं कि वे जब वापस आएंगे तो ट्रिपल तलाक लाएंगे। मैं देशवासियों से पूछना चाहता हूं कि क्या इस देश में ट्रिपल तलाक रहना चाहिए? ये कहते हैं कि हम वापस आएंगे तो मुस्लिम पर्सनल लॉ लाएंगे। लालू यादव जी आपको वापस आना भी नहीं है और पर्सनल लॉ आना भी नहीं है। पूरे देश में यूसीसी लागू करने का काम भारतीय जनता पार्टी करेगी। उन्होंने कहा कि चारा चुराने वाली सरकार जाने के बाद नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार की सरकार ने बिहार को आगे बढ़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। बिहार, कम्युनिस्टों की कृपा से नक्सलवाद से पीड़ित था, सैकड़ों युवा मारे गए। पीएम मोदी ने पूरे बिहार और झारखंड को नक्सलवाद से मुक्त किया। उन्होंने लोगों से प्रत्याशी गिरिराज सिंह को वोट करने की अपील करते हुए कहा कि इन्हें दिया गया एक-एक वोट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाएगा। यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि लालू यादव, शरद पवार, राहुल गांधी, ममता बनर्जी, अरविंद केजरीवाल जैसे घमंडिया गठबंधन के नेताओं में देश को चलाने की ताकत नहीं है।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल हरिचंदन ने रामलला के दरबार में लगाई हाजिरी

अयोध्या (आरएनएस)। प्राण प्रतिष्ठा के बाद से लगातार देश के विभिन्न प्रदेशों के राज्यपाल रामलला का दर्शन करने के लिए अयोध्या पहुंचा रहे हैं। इस क्रम में सोमवार को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन अयोध्या पहुंचे। भगवान श्रीराम के बाल स्वरूप विग्रह का विधि-विधान से दर्शन पूजन किया। श्रीराम का दीदार कर वे भाव विभोर हो गए। वहीं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर अतिथियों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए चाक-चौबंद इंतजाम किए गए थे। राज्यपाल ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि मैं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का दर्शन कर रहा हूं, लंबे समय तक जो संघर्ष चला है, मेरी भी इसमें भूमिका रही है।

4 सेकंड देर न होता तो खत्म हो जाता चंद्रयान-3, इसरो ने बताया क्यों लेट हुई थी लॉन्चिंग

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने हाल ही में अपनी एक रिपोर्ट में खुलासा किया है कि अंतरिक्ष में मलबे और उपग्रहों से टक्कर होने की आशंका और उससे बचाव के लिए ही चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग चार सेकंड की देरी से की गई थी। वैज्ञानिकों ने अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हुए अगर ऐसा नहीं किया होता तो चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग सफल नहीं हो पाती और शायद अंतरिक्ष में मलबे से टकरा गया होता।

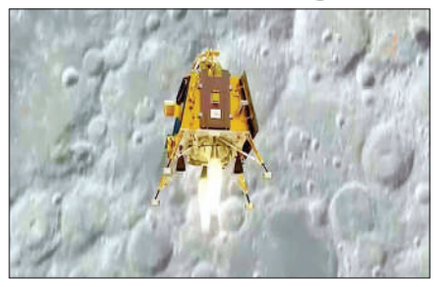

बता दें कि पिछले साल 14 जुलाई को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से मून मिशन के तहत चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण किया गया था। ISRO ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है, एलवीएम3-एम4/ चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण को COLA विश्लेषण के आधार पर नाममात्र के चार सेकंड के लिए रोका गया था, ताकि परिचालन ऊंचाई के ओवरलैप होने के कारण अंतरिक्ष के मलबे और उनके कक्षीय चरण में इंजेक्ट किए गए उपग्रहों के बीच निकट संपर्क से बचा जा सके।

दरअसल, किसी भी सैटेलाइट या स्पेस्क्राफ्ट को लॉन्च करने से पहले वैज्ञानिक कोलिज़न एवॉयडेंस एनालिसिस (COLA) करते हैं, ताकि अंतरिक्ष मलबे या किसी उपग्रह से संभावित टक्कर का पता लगाया जा सके। इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ ने शुक्रवार को ही भारतीय अंतरिक्ष स्थिति आकलन रिपोर्ट (ISSAR) 2023 पेश किया, जो अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश की प्रगति का सालाना लेख-जोखा पेश करता है। इसे इसरो के सुरक्षित और सतत अंतरिक्ष संचालन प्रबंधन प्रणाली (ISyOM) द्वारा तैयार किया गया है।

रिपोर्ट में अंतरिक्ष अभियान के तहत होने वाले विभिन्न पर्यावरणीय खतरों जैसे क्षुद्रग्रहों, धूमकेतुओं, उल्कापिंडों और कृत्रिम अंतरिक्ष वस्तुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। रिपोर्ट में इन जोखिमों को देखते हुए उपग्रहों के प्रक्षेपण वाहनों का आकलन करने, उपग्रहों के वायुमंडलीय पुनः प्रवेश और अंतरिक्ष में मलबों के विकास का अध्ययन करने के लिए निरंतर जागरूकता पर जोर दिया गया है।

बता दें कि चंद्रयान-3 से पहले PSLV-Czz/TeLEOS-2 की लॉन्चिंग भी 22 अप्रैल 2023 को एक मिनट की देरी की गई थी। इसके अलावा पिछले साल ही 30 जुलाई 2023 को PSLV-C56/DS-SAR की लॉन्चिंग में भी एक मिनट की देरी की गई थी, ताकि इन दोनों रॉकेट्स और सैटेलाइट के सामने आने वाले अंतरिक्ष मलबे और अन्य उपग्रहों के टक्कर से उसे बचाया जा सके। चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग से पहले वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष में कचरा दिखाई दिया था, जो किसी अन्य सैटेलाइट का टुकड़ा था। अगर पहले से निर्धारित समय पर चंद्रयान-3 की लॉन्चिंग हो गई होते तो उस कचरे से टक्कर हो जाती और मिशन अंजाम तक नहीं पहुंच पाता। सोमनाथ ने भारत के अगले चंद्रमा मिशन चंद्रयान -4 के बारे में भी जानकारी साझा की। उनके मुताबिक, चंद्रयान-4 मिशन को चंद्रयान श्रृंखला की अगली कड़ी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

लोकसभा चुनाव के छठें चरण में 57 सीटों के लिए अधिसूचना जारी, मतदान 25 मई को

नई दिल्ली (आरएनएस)। चुनाव आयोग ने छह राज्यों एवं केन्द्र शासित दिल्ली में कुल 57 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव के लिए सोमवार को अधिसूचना जारी की। आम चुनाव के छठें चरण में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की सात, हरियाणा की दस, उत्तर प्रदेश की 14, बिहार की आठ, झारखंड की चार, ओड़िशा की छह और पश्चिम बंगाल की आठ सीटों पर 25 मई को मतदान कराया जाएगा। अधिसूचना के अनुसार इन सीटों पर नामांकन पत्र भरने की अंतिम तिथि छह मई है। नामांकन पत्रों की जांच सात मई को की जाएगी और नाम नौ मई तक वापस लिए जा सकेंगे। लोकसभा चुनाव के छठें चरण में दिल्ली की चांदनी चौक, उत्तर पूर्वी दिल्ली, पूर्वी दिल्ली, नयी दिल्ली, उत्तर पश्चिम दिल्ली, (अजा), पश्चिम दिल्ली और दक्षिण दिल्ली, हरियाणा में अंबाला (अजा), कुरुक्षेत्र, सिरसा (अजा), हिसार, करनाल, सोनीपत, रोहतक, भिवानी-महेन्द्रगढ़, गुडगांव एवं फरीदाबाद, उत्तर प्रदेश में सुल्तानपुर, प्रतापगढ, फूलपुर, इलाहाबाद, अंबेडकरनगर, श्रावस्ती, डुमरियागंज, बस्ती, संतकबीरनगर, लालगंज (अजा) आजमगढ़, जौनपुर, मछलीशहर (अजा) और भदोही, बिहार में बालमिकी नगर, पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, वैशाली, गोपालगंज (अजा) आदि निर्वाचन क्षेत्रों में 25 मई को मतदान सुबह सात बजे से शाम छह बजे के बीच कराये जायेंगे।

भाजपा संविधान को समाप्त करना चाहती है : लालू यादव

छपरा (आरएनएस)। बिहार के सारण से राजद की प्रत्याशी रोहिणी आचार्य ने नामांकन पत्र दाखिल किया। जिसके बाद आरजेडी प्रमुख और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव ने छपरा में चुनावी जनसभा को संबोधित किया।

इस दौरान लालू यादव ने राजद प्रत्याशी रोहिणी आचार्य को वोट देने की अपील करते हुए कहा कि भाजपा बाबा साहब के संविधान को खत्म करना और बदलना चाहती है। हम किसी भी कीमत पर संविधान नहीं बदलने देंगे। लालू यादव ने सारण को अपनी कर्मस्थली बताते हुए कहा कि ये लोग आरक्षण को भी खत्म करना चाहते हैं। लोगों से जागरूक रहने की अपील करते हुए उन्होंने कहा कि रोहिणी आचार्य आप लोगों के बीच काफी दिनों से काम कर रही है। हमने भी सारण के लिए काफी काम किया है। उन्होंने पासी समाज का उल्लेख करते हुए कहा कि आप लोग इंडिया गठबंधन की सरकार बनाइए।

आईबी की थ्रेट रिपोर्ट के बाद गृह मंत्रालय का बड़ा फैसला, ईडी के सभी दफ्तरों पर होगी सीआईएसएफ की तैनाती

नई दिल्ली (आरएनएस)। ईडी ने बीते दिनों घोटाले से जुड़े मामलों में अपनी कार्रवाई तेज की है, जिसको लेकर ईडी की टीम पर राजनीतिक दलों के समर्थकों द्वारा हमले की खबरें भी सामने आ रही हैं। अब ईडी की लगातार बढ़ती सक्रियता और खतरे को देखते हुए रेगुलर बेसिस टीम के साथ CISF को तैनात किया जाएगा।

जानकारी के मुताबिक ईडी की लगातार बढ़ती सक्रियता और टीम पर खतरे को देखते हुए देशभर में ईडी के ऑफिसों पर रेगुलर बेसिस पर CISF को तैनात किया जाएगा। बताया जा रहा है कि पिछले कुछ दिनों में ईडी ऑफिस और उनके अधिकारियों पर बढ़ रहे खतरे को देखते हुए और आईबी की थ्रेट रिपोर्ट के आधार पर गृह मंत्रालय ने ये फैसला लिया है। जानकारी के अनुसार, शुरुआत में कोलकाता, रांची, रायपुर, मुम्बई, जालंधर, जयपुर कोच्चि के साथ-साथ दूसरी जगहों पर स्थित ईडी ऑफिस पर सीआईएसएफ फोर्स को तैनात किया जाएगा।

बता दें कि जनवरी को पश्चिम बंगाल के संदेशखाली में भीड़ ने ईडी की टीम पर हमला किया था। इस हमले में प्रवर्तन निदेशालय के कई सदस्य घायल हो गए। यह घटना उत्तर 24 परगना जिले से सामने आई थी, जहां अधिकारी, अर्धसैनिक बलों के साथ, एक कथित राशन वितरण घोटाले के सिलसिले में स्थानों पर छापेमारी करने गए थे। टीम पर उस समय हमला किया गया जब वह तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) नेता शाहजहां शेख के आवास के पास पहुंची थी।

रायपुर रेल मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक बने अवधेश कुमार त्रिवेदी

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के नये वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी को बनाया गया हैं। श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी भारतीय रेलवे ट्रैफिक सेवा (IRTS)-2010 बैच के अधिकारी है। श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे बिलासपुर मुख्यालय में उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (प्लानिंग एवं सेफ्टी) पद पर कार्यरत थे। आज दिनांक 29 अप्रैल, 2024 को अपराह्न के बाद श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी ने वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक रायपुर का पदभार ग्रहण किया। श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी जी 2021 में राष्ट्रीय रेल सेवा पदक से भी सम्मानित हैं। श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी जी पूर्व में एरिया मैनेजर कोरबा, मंडल परिचालन प्रबंधक, बिलासपुर एवं उप मुख्य पारिचालन प्रबंधक (गुड्स) के पदो पर भी कार्य कर चुके है।

संक्षिप्त समाचार

स्वीप जश-प्रण कार्यक्रम से प्रभावित होकर नगर के व्यापारी मतदान के लिए कर रहे अपील

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। वैसे तो जिला निर्वाचन अधिकारी जशपुर के द्वारा आगामी लोकसभा चुनाव के लिए मतदाता जागरूकता के उद्देश्य से स्वीप जश-प्रण कार्यक्रम कराए जा रहे हैं। स्वीप के नोडल अधिकारी और सीईओ जिला पंचायत अभिषेक कुमार के मार्गदर्शन में जिले के शासकीय विभागों द्वारा जागरूकता रैलियां, पोस्टर, बैनर, पेंटिंग जैसी कई गतिविधियां की जा रही है। लेकिन इसके अलावा नगर के लोग भी शत्-प्रतिशत मतदान करने की अपील कर रहे हैं। ऐसी ही एक तस्वीर जशपुर से आई है। जिसमें सुधा डेयरी का दुकान संचालित करने वाले समाजसेवी सत्येंद्र पाठक लोकसभा आम चुनाव में लोगों को अपने मताधिकार का प्रयोग करने की अपील करते हुए दिखाई दे रहे हैं। उन्होंने चुनाव का पर्व, देश का गर्व% स्लोगन लिखा हुआ बैनर अपनी दुकान के बाहर लगाया है।

नगर के व्यस्ततम मार्ग सदर रोड में किया गया निजी बोर खनन,पालिका को भनक तक नहीं

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। गोबरा नवापारा पालिका क्षेत्र में एक अजीबो-गरीब मामला सामने आया है। जैसे कि आप सभी को पता है कि ग्रीष्म का मौसम चल रहा है। वहीं भीषण गर्मी पड़ रही है सूर्य देव अपनी आक्रामक मुद्रा में नजर आ रहे हैं, पेयजल के लिए लोगों को जूझना पड़ रहा है। नगर के अधिकांश वार्डो में पानी की विकराल समस्या उत्पन्न हो गई है। ऐसे में नगर के सबसे व्यस्ततम मार्ग सदर रोड में बोर खनन कार्य करवाया गया है। बोर खनन करवा कर उस जगह को पैक कर दिया गया है जब लोग नींद थे ऐसे में संबंधित व्यक्ति के द्वारा रात्रि में ही बोर खनन करवाया गया ताकि किसी को पता ना चले। लोगों को आश्चर्य यह होता है कि घर को छोड़कर बीच सड़क में ही बोर खनन क्यों करवाया गया। सवाल यह उठता है कि आंखिर किससे पूछकर या अनुमति लेकर बोर खनन?? किया गया है? नगर पालिका अध्यक्ष धनराज मध्यानी से जब इस संबंध में हमारे विश्व परिवार संवाददाता द्वारा चर्चा की गई तो उन्होंने बताया कि मुझे इस बारे में कुछ पता नहीं। इस बारे में पालिका के सीएमओ ही अच्छी तरह से बता सकते हैं। वही पालिका के सीएमओ प्रदीप मिश्रा ने इसे नियम के विरुद्ध बताते हुए कार्रवाई किए जाने की बात कही। यहां पर सवाल यह उठता है कि नगर के सबसे व्यस्ततम मार्ग में बीच सड़क में बोर खनन करने की अनुमति आखिर किसने प्रदान की? यह जांच का विषय है। लोग पालिका प्रशासन पर संदेह व्यक्त कर रहे हैं! लोग जानना चाहते हैं कि आखिर किसकी शह पर सड़क पर यह बोर खनन किया गया है।

श्रम दिवस पर कल महाराष्ट्र मंडल वल्लभ नगर केंद्र में बांटेगा मठा

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल के वल्लभ नगर केंद्र की महिलाएं मजदूर दिवस एक मई को सुबह 9 बजे हनुमान मंदिर टैगोर नगर चौक पर राहगीरों को मठा वितरण करेंगी। इस दौरान सुबह-सुबह काम पर जाने वाले मजदूरों, कर्मचारियों, सब्जी बेचने वाले, ठेला चलाने वाले, आटो चालकों को मठा वितरित किया जाएगा। महाराष्ट्र मंडल की आजीवन सभासद अपर्णा देशमुख और अर्चना जतकर ने बताया कि वल्लभ नगर महिला केंद्र प्रति वर्ष मजदूर दिवस पर मठा वितरण करता है। बुधवार को टैगोर नगर चौक पर मठा वितरण के साथ महिलाएं हाथों पर तख्तियां लेकर शत-प्रतिशत मतदान करने के लिए मतदाता जागरूकता अभियान भी चलाएंगी। इस अवसर पर महाराष्ट्र मंडल के कार्यकारिणी सदस्य, विभिन्न समितियों के पदाधिकारी भी उपस्थित रहेंगे।

होम वोटिंग के पहले दिन घर जाकर मतदान दल ने कराई वोटिंग

बुजुर्गों, दिव्यांगजनों में दिखा उत्साह, निर्वाचन आयोग को दिया धन्यवाद

रायपुर (विश्व परिवार)। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह के मार्गदर्शन में आज होम वोटिंग की शुरूआत हुई, जो कि 01 मई तक चलेगी। सुबह कलेक्टर ने मतदाताओं दल को गुलाब फूल देकर शुभकामनाओं सहित रवाना किया। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले में 85 प्लस वरिष्ठ नागरिक एवं दिव्यांग मतदाता को चिन्हित किया गया है। जिनकी संख्या 622 है। इसमें बलौदाबाजार में 63, भाटापारा में 50, धरसींवा में 66, रायपुर ग्रामीण में 85, रायपुर नगर पश्चिम में 56, रायपुर नगर उत्तर में 45, रायपुर नगर दक्षिण में 67, आरंग में 60 और अभनपुर में 130 शामिल है।

होम वोटिंग के पहले दिन वृद्धजनों और दिव्यांगजनों मतदान के प्रति उत्साह दिखा। धरसींवा विधानसभा की 88 वर्षीय श्रीमती गोदावरी बाई शर्मा जिनका मतदान केन्द्र क्रमांक 169, टेकारी के घर जाकर होम वोटिंग कराई गई। श्रीमती शर्मा ने इस कार्य के लिए निर्वाचन आयोग को धन्यवाद दिया। इसी प्रकार विधानसभा क्षेत्र बलौदाबाजार के मतदान केन्द्र टेकारी, तिल्दा के मतदाता श्री सहस राम ने 96 वर्ष के उम्र में अपना मत दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें मतदान करने की इच्छा थी, मगर इस उम्र में मतदान केन्द्र तक पहुंच पाना संभव नहीं था। आज जिला प्रशासन के कर्मचारियों ने घर आकर मुझसे मतदान कराया। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। सिविल लाईन निवासी डॉ. आशीष मल्होत्रा जिनके पिता श्री कृष्ण कुमार मल्होत्रा, उम्र 97 वर्ष, माता श्रीमती सुलक्षणा मल्होत्रा जिनकी उम्र 95 वर्ष है। इनके यहां आज मतदान दल पहुंचा और औपचारिकता पूर्ण करने के बाद मतदान कराया। मल्होत्रा परिवार ने कहा कि निर्वाचन आयोग के इस पहल से हमें लोकतंत्र के इस पर्व में सहभागी होने का अवसर मिला। अभनपुर के श्रीमती भोजा, पति श्रीराम साहू के घर जाकर होम वोटिंग कराई। श्रीमती भोजा ने कहा कि इस उम्र में चलने-फिरने में तकलीफ है मुझे मतदान केन्द्र तक जाने के लिए किसी सहारे की जरूरत थी। आज मुझे घर में यह मतदान की सुविधा मिली। मुझे इस बात की बहुत खुशी है। तिल्दा निवासी 96 वर्षीय श्री बुधराम पाल जिनका मतदान केन्द्र शा.प्राथमिक शाला टंडवा है के घर जाकर मतदान दल ने होम वोटिंग कराई। पाल ने इसके लिए निर्वाचन आयोग को धन्यवाद दिया। उत्तर विधानसभा के तात्यापारा निवासी श्रीमती मिजू बाई, उम्र 90 वर्ष के घर जाकर मतदाता दल ने होम वोटिंग कराई।

इसी प्रकार सोनडोंगरी निवासी दिव्यांग मतदाता अनुदिता भार्गव, बलौदाबाजार विधानसभा के तिल्दा कैम्प के निवासी दिव्यांग श्री हरेश कुमार कृष्णानी के घर जाकर होम वोटिंग कराई गई।

कैंसर पीड़ित बच्चों के साथ बांटी खुशियां, होनहार सीए छात्र स्व. ऋषभ जैन कोटखावदा को 15 वीं पुण्य स्मृति पर

जयपुर (विश्व परिवार)। जैन सोश्यल ग्रुप मेट्रो जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष, प्रसिद्ध समाजसेवी विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा के सुपुत्र होनहार सीए छात्र स्व. ऋषभ जैन की 15वीं वीं स्मृति के मौके पर ऋषभ सेवा संस्थान, जैन सोश्यल ग्रुप मेट्रो एवं संगिनी फारम जेएसजी मेट्रो के संयुक्त तत्वावधान में धार्मिक, सामाजिक एवं मानव सेवा कार्य कर ऋषभ को याद किया। तारों की कूट के सूर्यनगर स्थित ऋषभ सेवा संस्थान के अध्यक्ष महेन्द्र साह आबूजीवाले एवं मानद् सचिव विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि इस मौके पर रविवार, 28 अप्रैल को प्रात: 8 बजे आगरा रोड स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरी में भगवान पार्श्वनाथ के सामूहिक दर्शन, अभिषेक के बाद विश्व में सुख शांति और समृद्धि की कामना करते हुए शांतिधारा की गई। तत्पश्चात अष्ट द्रव्य से पूजाअर्चना की गई। पूजा के दौरान मंत्रोच्चार के साथ अर्घ्य चढाये गये।आरती के बाद समापन हुआ।

इसी कड़ी में प्रात: 11.30 बजे श्योपुर के विद्यासागर स्कूल के पास स्थित संत जुडे इण्डिया चाईल्ड केयर सेन्टर पर कैंसर पीड़ित बच्चों की सेवा सुश्रुषा की जाकर उनके साथ खुशियां बांटी गई। इस मौके पर तीन बार णमोकार महामंत्र के उच्चारण पश्चात राशन व अन्य आवश्यक सामग्री दी गई साथ ही बच्चों को स्टेशनरी आइटम्स एवं फल इत्यादि वितरित किए गए। सामग्री पाकर बच्चों के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

श्री जैन के मुताबिक रात्रि में सूर्य नगर के ऋषभ मार्ग स्थित कोटखावदा हाऊस पर विश्व शांति प्रदायक णमोकार महामंत्र एवं भक्तामर स्तोत्र के सामूहिक पाठ किए गए। इस मौके पर अशोक बाकलीवाल, महेन्द्र साह, विनोद जैन कोटखावदा, चेतन जैन निमोडिया, कमल वैद, दीपक गोधा, अंकित बाकलीवाल, सीए शुभम जैन, सुशील जैन, अजय साह, मुन्ना देवी, माया साह, प्रेमलता बाकलीवाल, सुशीला साह, दीपिका जैन कोटखावदा, मैना गंगवाल, नीतू जैन, दीपा गोधा, कुसुम जैन, सुनिता जैन, अमिता साह, मीनू जैन निमोडिया, दिव्या बाकलीवाल, देवांश बाकलीवाल सहित बड़ी संख्या में ऋषभ सेवा संस्थान जैन सोश्यल ग्रुप मेट्रो, संगिनी फारम जेएसजी मेट्रो के सदस्य एवं गणमान्य लोग शामिल हुए।

श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर में पक्षियों के लिए 500 दाना फ़ीडर व सकोरे का वितरण आरम्भ

धार्मिक आडम्बर में कटौती कर मूक पशु पक्षियों की सेवा व सीमंधर स्वामी जीव दया फंड की स्थापना

2 मई को 18 अभिषेक महापूजन व रात्रि में झूमो नाचो गाओ, ध्वजा महोत्सव मनाओ रंगारंग प्रस्तुति

रायपुर (विश्व परिवार)। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व चमत्कारी श्री जिनकुशल सूरि जैन दादाबाड़ी, भैरव सोसायटी में ध्वजारोहण महोत्सव के अवसर पर मूक पशु पक्षियों की सेवा भावना से 500 नग पक्षी दाना फ़ीडर व सकोरे के वितरण का शुभारंभ दादागुरुदेव के सम्मुख इक्तिसा जाप से साथ किया गया। श्री सीमंधर स्वामी जैन मंदिर व दादाबाड़ी ट्रस्ट के अध्यक्ष संतोष बैद व महासचिव महेन्द्र कोचर ने बताया कि ध्वजा महोत्सव पर धार्मिक आडम्बर में कटौती कर मूक पशु पक्षियों की सेवा के साथ श्री सीमंधर स्वामी जीव दया फंड की स्थापना की जा रही है। कोचर ने बताया कि दादागुरुदेव के सम्मुख इक्तिसा जाप के साथ भैरव सोसायटी की महिलाओं को दाना फ़ीडर व सकोरे का वितरण कर योजना का शुभारंभ किया गया। श्री सीमंधर महिला मण्डल की मंजू कोठारी व मयूरी गोलछा ने कहा कि वे दाना फ़ीडर सकोरे के सेट को अपनी बाल्कनी व गार्डन में लगाकर रखेंगे तथा प्रतिदिन दाना व पानी डालती रहेंगी जिससे गर्मी में पक्षियों को आसानी से भरपेट दाना पानी मिल सकेगा। ध्वजा महोत्सव प्रतिष्ठाचार्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणि प्रभ सूरीश्वर जी म. सा. के शुभ आशीर्वाद से उपाध्याय प्रवर, आध्यात्म योगी श्री महेन्द्र सागर जी के सुशिष्य उपाध्याय श्री मनीष सागर जी म सा व मुनिभगवंत आदि ठाणा के पावन सानिध्य में आयोजित है। 3 मई को सप्तम ध्वजा महोत्सव के अवसर पर विधिकारक विमल गोलछा द्वारा सत्तरभेदी पूजा का विधान होगा। ध्वजा पूजा के विधान में शिखरबद्ध जिनमंदिर में श्री सीमंधर स्वामी मूलनायक जी की अमर ध्वजा के लाभार्थी मूलचंद संतोष सरला देवी बैद परिवार, द्वारा फहराई जावेगी। चमत्कारी श्री जिनकुशल सूरि जैन दादाबाड़ी की अमर ध्वजा लाभार्थी श्री जिनकुशल सूरि जी की ध्वजा श्री तिलोकचंद, शांतिलाल, अशोक कुमार बरड़िया परिवार, श्री जिनदत्त सूरि जी की ध्वजा श्रीमती पुष्पादेवी कोठारी मनोज कविता कोठारी परिवार, श्री मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरी जी की ध्वजा महेन्द्र कुमार तरुण कुमार, मानस, गौरव, कल्प, गर्वित कोचर परिवार द्वारा फहराई जावेगी। 2 मई को सभी प्रतिमाओं का वर्षभर की आशातनाओं से शुद्धि प्रत्यर्थ 18 अभिषेक पूजन होगा।

पार्श्वनाथ जैन मंदिर के वार्षिकोत्सव पर हुआ धार्मिक अनुष्ठान

रजत पाण्डुकशिला पर जैन श्रद्धालुओं ने किया भगवान का मस्तकाभिषेक

पटना सिटी (विश्व परिवार)। हाजीगंज लंगूर गली स्थित 500 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरारा मंदिर के वार्षिकोत्सव समारोह रविवार को धूमधाम के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: बेला रजत पाण्डुकशिला पर जिनेन्द्र भगवान का महामस्तकाभिषेक, शांतिधारा जैन श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव पूर्वक किया। मीडिया प्रतिनिधि प्रवीण जैन ने बताया कि धार्मिक अनुष्ठान के दौरान मंगलाचरण पाठ, जिनेन्द्र स्तुति, अभिषेक पाठ, णमोकार महामंत्र जाप की आराधना की गई। मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के महा-मस्तकाभिषेक करते श्रद्धालु भक्ति में झूम उठे। इसके पश्चात तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ विधान का अनुष्ठान अनेकों मंत्रोच्चारण के साथ जैन श्रद्धालुओं ने किया। कार्यक्रम के दौरान संगीतमयी भक्ति-भजन से वातावरण गुंजायमान हुआ।

जैन श्रद्धालुओं ने भगवान को अष्ट द्रव्य अर्घ्य समर्पित करके पूजा-अर्चना की। इसके उपरांत भक्तिमय वातावरण में महाआरती किया गया। **-प्रवीण जैन**

सुपरस्टार सिंगर 3 पर, नेहा कक्कड़ ने प्रतियोगी क्षितिज सक्सेना की तारीफ करते हुए कहा कि आपकी सिंगिंग आत्मा को गहराई से छूती है

इस वीकेंड, सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न के होमग्रोन किड्स सिंगिंग रियलिटी शो, 'सुपरस्टार सिंगर 3' के दर्शकों को दिल छू लेने वाले संगीत, पुरानी यादों और बहुत कुछ से भरा मनोरंजक एपिसोड देखने को मिलेगा! यह शो प्रसिद्ध म्यूज़िक डायरेक्टर्स-नदीम-श्रवण की उपलब्धियों को सेलिब्रेट करेगा, जिन्होंने 1990 के दशक में चार्ट पर राज करने वाली यादगार धुनें बनाई हैं। 'नदीम-श्रवण स्पेशल' में, प्रतियोगी इस शानदार जोड़ी को सम्मानित करते हुए उनके कुछ सदाबहार क्लासिक्स का जादू बिखेरेंगे, वह भी अभिजीत भट्टाचार्य और अनुराधा पौडवाल की उपस्थिति में, जिन्होंने नदीम-श्रवण के कई गीतों को अपनी आवाज़ दी है। तो, कुछ मज़ेदार बातों और बहुमूल्य यादों के लिए तैयार हो जाइए क्योंकि अभिजीत और अनुराधा अपने अनुभव साझा करेंगे, और आपको नदीम-श्रवण के म्यूज़िक की जादुई दुनिया में ले जाएंगे।

सभी दिल जीतने वाले परफॉर्मेंस के बीच, उत्तर प्रदेश के पीलीभीत के बेहद प्रतिभाशाली 13 वर्षीय क्षितिज सक्सेना, अपनी कैप्टन सायली कांबले के साथ, फिल्म 'आशिकी' से 'नज़र के सामने' और 'धीरे-धीरे' गाने के अपने संस्करण से सभी को हैरान करने के लिए तैयार हैं। क्षितिज के मनमोहक प्रदर्शन को सभी कप्तानों, सुपर जज नेहा कक्कड़ और खास मेहमानों-अभिजीत भट्टाचार्य और अनुराधा पौडवाल से तारीफें मिलेंगी।

क्षितिज के परफॉर्मेंस से हैरान अनुराधा पौडवाल ने कहा कि क्या शानदार परफॉर्मेंस है, वाकई सराहनीय। लय सटीक थी, और यह बहुत खुशी से गूंज रही थी! मैं आप में से प्रत्येक के लिए वाकई रोमांचित हूं। हमारे खूबसूरत देश के हर कोने से ऐसी प्रतिभाओं को उभरते हुए देखकर मेरा दिल खुशी से भर जाता है। मैंने अपने कार्यक्रमों के लिए पीलीभीत और बरेली जैसी जगहों का सफर किया है, और आप जैसी प्रतिभाओं को देखकर मुझे शो की वाकई सराहना करनी होगी जिन्होंने देश भर से ऐसे बहुमूल्य रत्नों को खोजा है। आपका सिंगिंग असाधारण थी, और इसने मेरे दिल को खुशियों से भर दिया। ऐसे ही बेहतरीन काम करते रहिये।

इस परफॉर्मेंस से मंत्रमुग्ध होकर, सुपर जज नेहा कक्कड़ ने कहा कि मास्टर सक्सेना, आपका सिंगिंग आत्मा को गहराई से छूती है। आप हर लाइन और धुन में अपना पूरा दिल डाल देते हैं। यहां तक कि दूसरे गाने को भी बेहद खूबसूरती से गाया गया, और आप महान कुमार सानू दा द्वारा सेट किए गए मानकों पर खरा उतरें, जिनकी आवाज़ वास्तव में अनोखी और यादगार है। ऐसे गानों को परफॉर्म करने के मामले में वह आइकन हैं। मुझे लगता है कि इन खूबसूरत धुनों पर अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए, आपका एक और रेंडिशन होना चाहिए। ईश्वर पर आपकी कृपा बनी रहे। सुपरस्टार सिंगर 3 देखें, हर शनिवार और रविवार रात 8 बजे, केवल सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न पर।

रावतपुरा सरकार विवि में हुआ मतदाता जागरूकता के लिए कार्यक्रम

रायपुर (आरएनएस)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के मतदाता जागरूकता अभियान के निमित्त श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय में मतदाता जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमे कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एस. के. सिंह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रहे फर्मेसी काउंसिल के पूर्व अध्यक्ष श्री जगदीश पटेल जी व विशिष्ट अतिथि अभाविप के महानगर मंत्री श्री प्रथम फुटाने रहे श्री जगदीश पटेल ने छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए बताया की कैसे भारत हजारों सालों तक विदेशी आक्रांताओं का गुलाम रहा इसके पहले भारत सभी चीजों में पूरी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ था चाहे वह भारत इकोनामी हो या भारत की शिक्षा व्यवस्था चाहे वह भारत की व्यापार हो या न्याय व्यवस्था साथ हि जगदीश पटेल जी ने विद्यार्थियों को समझाया की कैसे आपके सही मतदान से भारत फिर से 2047 तक विश्व गुरु बन सकता है।

कार्यालय सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.), फोन नं.- 0771-4901223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत कॉलोनी, दोदेंखुर्द में स्थित सीनियर एल.आई.जी. भवन क्रमांक-414 श्रीमती दीप्ती बंसल पति श्री विनित बंसल को इस कार्यालय के आबंटन आदेश क्रमांक 8971 दिनांक 07.01.2012 के माध्यम से स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 19.07.2013 को लीजडीड पंजीकृत उपरांत आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया गया है।

वर्तमान में श्रीमती दीप्ती बंसल पति श्री विनित बंसल निवासी- एल.आई.जी. म.नं.-517, बंसल इंटरप्राईजेस, पदमनाभपुर दुर्ग, जिला- दुर्ग (छ.ग.) के द्वारा आवेदन पत्र, शपथ पत्र, विक्रय इकरारनामा तथा अन्य दस्तावेज प्रस्तुत कर नामांतरी द्वारा उक्त भवन को क्रेता श्रीमती लाल मुनि पति स्व. श्री प्रेमनाथ निवासी- सीनि. एल.आई.जी. भवन क्रमांक-625, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, दोदेंखुर्द, तह. व जिला- रायपुर (छ.ग.) को विक्रय करने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त भवन के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./11060/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 29-04-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 11060
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- RPR223L00114 जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती RAVAL DAS पिता/पति, श्री/श्रीमती NEMAN DAS के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. श्री कमलेश कुमार जसवानी - पिता स्व. श्री रावल दास जसवानी पिता/पति, श्री/श्रीमती 2. श्री तुषार जसवानी - पिता श्री कमलेश कुमार जसवानी ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत हक त्याग विलेख/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./5639/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 20-03-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 5639
वार्ड का नाम-18 - बालगंगाधर तिलक वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 18 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR110A00230 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती RAJESH PAL पिता/पति, श्री/श्रीमती JOGINDER PAL के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. नेमानी श्रीनिवास 2. नेमानी अन्नपूर्णा पिता/पति, श्री/श्रीमती 1. स्व. नेमानी सोमनाथ शास्त्री 2. नेमानी श्रीनिवास ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री हितेन्द्र यादव
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./5787/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 29-09-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 5787
वार्ड का नाम-18 - बालगंगाधर तिलक वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 18 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR110E00052 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती M.S. TAMBE पिता/पति, श्री/श्रीमती SAMBHAJI TAMBE के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती MALTI TAMBEY पिता/पति, श्री/श्रीमती LATE. M.S. TAMBEY ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ AGREMENT/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राजेश गुप्ता
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com

पत्र क्र./5786/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2024
रायपुर, दिनांक 29-09-2023

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 5786
वार्ड का नाम- 3 - संत कबीर दास वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 3 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. RPR803G00498 जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती KAJAL KUKREJA पिता/पति, श्री/श्रीमती SUNDER KUKREJA के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती 1. अंजली साहा 2. गौतम साहा पिता/पति, श्री/श्रीमती 1. गौतम साहा 2. गौरंगोचंद्र साहा ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ पंजीकृत विक्रय विलेख / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राजेश गुप्ता
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिका परिषद कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)
॥ दावा आपत्ति सूचना ॥

क्रं. / 347 / राज.वि. / नामां. / 2024
कुम्हारी, दिनांक 29/04/2024

नगर पालिका परिषद कुम्हारी में अपने स्वयं के भवन/भूमियों को क्रय-विक्रय किया जाकर नगर पालिका अभिलेख में नाम परिवर्तन करने हेतु निम्नानुसार आवेदन प्राप्त हुआ है। उक्त प्रकरणों पर नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 150 के तहत् नामांतरण किये जाने पर यदि किसी भी व्यक्ति / संस्था / समुदाय को आपत्ति हो तो इस सूचना के समाचार पत्र में प्रकाशन होने की तिथि से 15 दिन के अन्दर लिखित में नगर पालिका कार्यालय में अपना दावा / आपत्ति आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। भवन/भूमि नामांतरण संबंधी विवरण निम्नानुसार है :-

हस्तांतरणकर्ता का नाम व पता- श्री कुंजराम टंडन पिता श्री हीरा सिंह टंडन, वार्ड क्रं.-21, कुगदा, जिला- दुर्ग (छ.ग.)
हस्तांतरिती का नाम व पता- श्री राजेन्द्र टंडन पिता श्री कुंजराम टंडन, वार्ड क्रं.-21, कुगदा, जिला-दुर्ग (छ.ग.)।
भवन/भूमि का विवरण- खसरा क्रं.-77/48, रकबा 0.012 हे. में से 0.004 हे., वार्ड क्रं.-21 कुगदा, जिला- दुर्ग (छ.ग.)।
नामांतरण का आधार- मृत्यु उपरांत पारिवारिक बटवारानामा।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद कुम्हारी

कार्यालय नगर पालिका परिषद कुम्हारी, जिला- दुर्ग (छ.ग.)
॥ दावा आपत्ति सूचना ॥

क्रं. / 349 / राज.वि. / नामां. / 2024
कुम्हारी, दिनांक 29/04/2024

नगर पालिका परिषद कुम्हारी में अपने स्वयं के भवन/भूमियों को क्रय-विक्रय किया जाकर नगर पालिका अभिलेख में नाम परिवर्तन करने हेतु निम्नानुसार आवेदन प्राप्त हुआ है। उक्त प्रकरणों पर नगर पालिका अधिनियम 1961 की धारा 150 के तहत् नामांतरण किये जाने पर यदि किसी भी व्यक्ति / संस्था / समुदाय को आपत्ति हो तो इस सूचना के समाचार पत्र में प्रकाशन होने की तिथि से 15 दिन के अन्दर लिखित में नगर पालिका कार्यालय में अपना दावा / आपत्ति आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। भवन/भूमि नामांतरण संबंधी विवरण निम्नानुसार है :-

हस्तांतरणकर्ता का नाम व पता- श्री कुंजराम टंडन पिता श्री हीरा सिंह टंडन, वार्ड क्रं.-21, कुगदा, जिला- दुर्ग (छ.ग.)
हस्तांतरिती का नाम व पता- श्रीमती कमला टंडन पति स्व. कुंजराम टंडन, वार्ड क्रं.-21, कुगदा, जिला-दुर्ग (छ.ग.)।
भवन/भूमि का विवरण- खसरा क्रं.-77/48, रकबा 0.012 हे. में से 0.004 हे., वार्ड क्रं.-21 कुगदा, जिला- दुर्ग (छ.ग.)।
नामांतरण का आधार- मृत्यु उपरांत पारिवारिक बटवारानामा।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद कुम्हारी

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर मंगलवार 30 अप्रैल 2024

आम नागरिकों के साथ बाइक चलाकर कलेक्टर व एसपी ने मतदाताओं को किया जागरूक

हेलमेट पहनकर सड़क पर यातायात नियमों का पालन करने का भी दिया संदेश

जिला स्तरीय स्वीप बाइक रैली का किया गया आयोजन

कोरबा (विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत मतदाताओं को जागरूक करने कोरबा शहर के प्रमुख मार्गों में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अजीत वसंत, पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धार्थ तिवारी आदि की उपस्थिति में जिला स्तरीय स्वीप बाइक रैली का आयोजन किया गया। रैली में कलेक्टर, एसपी सहित शहर के युवाओं तथा आम मतदाताओं एवं अधिकारियों -कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। जिला प्रशासन द्वारा आयोजित बाइक रैली में मतदाताओं को मतदान दिवस 07 मई को मतदान करने और लोकतंत्र को मजबूत बनाने की अपील की गई। बाइक रैली के माध्यम से

आम नागरिकों को यह भी संदेश दिया गया कि सड़क पर यातायात के नियमों का पालन करें और बाइक चलाते समय हेलमेट अवश्य पहनें। बाइक रैली में शामिल युवाओं एवं आम नागरिकों ने बैनर-पोस्टर के माध्यम से मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया। जिला स्तरीय स्वीप बाइक रैली का शुभारंभ हरी झंडी दिखाकर कलेक्टोरेट परिसर से किया गया। इस दौरान प्रमुख मार्गों पर बाइक चलाते हुए मतदाताओं को लोकसभा निर्वाचन में बढ़चढ़ कर भाग लेने की अपील की। कलेक्टर ने कहा कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने में हमारा एक-एक वोट महत्व रखता है। समय पर मतदान करके हम सभी मतदाता अपने पसंद का उम्मीद्वार चुन सकते हैं। हम सभी मतदान में जितना अधिक भाग लेंगे, हमारा लोकतंत्र उतना ही मजबूत होगा। उन्होंने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा मतदाताओं की जानकारी के लिए लगातार अनेक सुविधाएं दी जा रही है। हम अपने उम्मीदवार के विषय में भली-भांति जान सकते हैं। कलेक्टर ने बाइक रैली का उद्देश्य मतदाताओं को जागरूक बनाना और उन्हे मतदान के लिए प्रेरित करना बताया है। उन्होंने अपील की है कि 07 मई को सभी मतदाता अपने नजदीकी मतदान केन्द्र में जाकर मतदान अवश्य करें। इस दौरान निर्वाचन आयोग द्वारा जारी निर्देशों के तहत परिचय पत्र अवश्य रखें। बाइक रैली का आयोजन कलेक्टोरेट परिसर से प्रारंभ होकर तानसेन चैक (आईटीआई) चैक होते हुए बुधवारी बाजार चैक, सीएसईबी चैक, टीपी नगर चैक, सतनाम/गुरूघासीदास चैक, महाराणा प्रताप चैक बुधवारी, घंटाघर चैक (मिनीमाता कालेज), कोसाबाड़ी चैक, एनसीसी कैम्प (पुराना आरटीओ आफिस), तहसील आफिस, एसपी आफिस होते हुए कलेक्टोरेट परिसर पर समाप्त हुई। जिला प्रशासन द्वारा बाइक रैली की नियमानुसार एसडीएम कोरबा से अनुमति ली गई थी।

संक्षिप्त समाचार

हसदेव नदी में पलटी नाव एक की मौत

कोरबा(विश्व परिवार)। जिले के हसदेव नदी में आंधी-तूफान के चलते नाव पलटने से नाव में सवार एक युवक की डूबने से मौत हो गई, वहीं दूसरा युवक किसी तरह से तैरकर किनारे पर पहुंचा। सूचना पर मौके पर पहुंची बालको थाना पुलिस घटना की जांच कर रही है। मिली जानकारी के अनुसार, घटना बालको थाना अंतर्गत बांगो के डुबान इलाके डांगाघाट की है, जहां 32 वर्षीय कृपाल राम गाड़ा अपने दोस्त के साथ नाव में मछली लेकर हसदेव नदी पार कर रहा था। इस दौरान मौसम में हुए बदलाव से चले आंधी-तूफान में उनकी नाव पलट गई और दोनों दोस्त नदी में गिर गये। दोनों तैरकर बाहर निकलने का प्रयास कर रहे थे किंतु रास्ते में कृपाल राम की सांस उखड़ने लगी जिसके बाद उसके दोस्त ने बीच नदी में आधे घंटे तक उसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन कृपाल राम तैर नहीं पाया और उसकी नदी में डुबने से मौत हो गई। वहीं दूसरा युवक ने नदी से बाहर निकलने में सफल हो गया और उसकी जान बच गई। जिसके बाद उसने बालको थाना पुलिस को घटना की जानकारी दी। जिसके बाद बालको पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच कर रही है।

प्रत्येक मण्डलों में नारी वंदन योजना के कार्यक्रम जारी

कोरबा(विश्व परिवार)। भाजपा व महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं के द्वारा प्रत्येक मण्डलों में नारी वंदन योजना की जानकारी दे रहे है। प्रदेश सरकार के द्वारा योजना के तहत महिलाओं को एक-एक हजार रूपये मिल रहे है लेकिन कई महिलाएं नारी वंदन योजना से वंचित है। वंचित महिलाओं को जोडने के लिए लगातार कार्यक्रम मण्डलों में किये जा रहे है। महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष वैशाली रत्नपारखी ने बताया कि आज हरदीबाजार नगर मंडल के नोनबिर्रा में कार्यक्रम आयोजित है। इस कार्यक्रम में विधायक प्रेमचंद पटेल, वरिष्ठ नेता ज्योतिनंद दुबे, चुलेश्वर राठौर, नरेश टंडन, हरिश थरवानी, ऊषा विश्वकर्मा सहित अनेको कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे। उरगा मंडल के सरदुकला में भी यह कार्यक्रम आयोजित हुआ है। कुदमुरा मंडल में भी कार्यक्रम की तैयारी की जा रही है। यहां पर महिला मोर्चा की अभिलाषा वर्मा, भोजली साहू, सुकृता राठिया, सुभद्रा सिंह तैयारी कर रहे है। 30 अप्रैल तक सभी मण्डलों में यह कार्यक्रम आयोजित होने है।

खदान में घुस कर वाहन और ठेका कर्मियों पर पथराव

कोरबा(विश्व परिवार)। कुसमुंडा खदान में घुस कर एक ग्रामीण ने ठेका कर्मियों पर पत्थर फेंकने के साथ ही टिपर वाहन में तोड़फोड़ की। इससे वाहन का सामने व साइड का शीशा क्षतिग्रस्त हो गया। इस पर निजी कंपनी के मैनेजर ने कुसमुंडा थाना में शिकायत करते हुए 16 लाख रुपए की क्षति होना बताया है। पुलिस ने मामले में ग्रामीण के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। एसईसीएल कुसमुंडा खदान में नीलकंठ इंफ्रा माइनिंग लिमिटेड कंपनी को मिट्टी निकासी का काम दिया गया है। कंपनी के मानव संसाधन प्रमुख मुकेश सिंह ने रिपोर्ट में कहा है कि बीती रात खदान में घुसकर रिसदी निवासी ईश्वर पाल ने ओबी फेस पर काम कर रहे नीलकंठ कंपनी के कर्मचारियों पर पत्थर फेंका, साथ ही अपशब्द भी कहा। इसके बाद खड़ी टिपर वाहन का शीशा भी तोड़ दिया। पुलिस ने शिकायत की जांच के बाद ईश्वर पाल के विरूद्ध एफआइआर दर्ज कर ली है।

शहर के वरिष्ठ पत्रकार विजय सिंह पंचतत्व में विलीन

कोरबा(विश्व परिवार)। शहर के वरिष्ठ पत्रकार विजय सिंह आज पंचतत्व में विलीन हो गए। पोड़ीबहार मुक्तिधाम में उनके पार्थिव शरीर को ज्येष्ठ पुत्र ने मुखाग्नि दी। 67 वर्षीय विजय सिंह का कल दोपहर को अपने निवास पर निधन हो गया था। उत्तरप्रदेश के बलिया जिले से वास्ता रखने वाले विजय सिंह ने बलिया के राजकीय कॉलेज से स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की और कुछ वर्ष बाद कोरबा शिफ्ट हो गए। तीन दशक से ज्यादा समय उन्होंने पत्रकारिता में बिताया। दैनिक तरूण छत्तीसगढ़ में लंबे समय तक सेवा देने के साथ उन्होंने अपनी अलग छाप छोड़ी। राजपूत क्षत्रिय समाज के अलावा अनेक संगठनों में वे सक्रिय रूप से कार्यरत थे। वे अपने पीछे अपने तीन पुत्र और नाती-पोतों को छोड़ गए हैं। सक्ती जिले में उनके पुत्र अनिल सिंह जिला अभियोजन अधिकारी और सुनील सिंह छत्तीसगढ़ पुलिस में कार्यरत हैं। पत्रकार विजय सिंह के निधन पर प्रेस क्लब सहित अनेक संगठनों ने शोक जताया है। आज बुधवारी स्थित उनके निवास से अंतिम यात्रा निकाली गई। पोड़ीबहार मुक्तिधाम में उनका अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। यहां पर मौजूद लोगों ने शोकसभा करते हुए दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

अधिवक्ता संघ चुनाव में चुनाव अधिकारी ने की लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना : धनेश

कोरबा (विश्व परिवार)। जिले में हुए जिला अधिवक्ता संघ चुनाव में अध्यक्ष पद के प्रत्याशी रहे अधिवक्ता धनेश सिंह ने चुनाव अधिकारी पर लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना करने का आरोप लगाते हुए चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्ष जांच किये जाने की मांग की है। राज्य विधिज्ञ परिषद (स्टेट बार एसोसिएशन) के सचिव को लिखे पत्र में श्री सिंह ने कहा है कि जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव वर्ष 2024-26 जो कि 7 अप्रैल को संपन्न हुआ है वह पूर्णत: दूषित रहा है। चुनाव की घोषणा के बाद से ही मुख्य चुनाव अधिकारी के साथ साए की तरह पूर्व सहसचिव सांडिल्य का रहकर प्रत्येक कार्य में दखल देना, कोई सवाल चुनाव अधिकारी से करने पर उत्तर सांडिल्य द्वारा दिया जाता था। इस बात पर आपत्ति करने पर उनको बिना किसी प्रावधान के व्यवस्था प्रमुख बताया जाता था। मेरे द्वारा चुनाव अधिकारी को दिनांक 12 अप्रैल को एक पत्र लिखकर मांग की गई थी कि वे चुनाव में अध्यक्ष पद के उम्मीदवार रहे हैं और मतपत्र उन्हें दिखाए बिना कुल 11 मत मिलना बताया गया जबकि उनके समर्थकों की संख्या इससे ज्यादा थी इसलिए मूलपत्र को दिखाकर पुनरू गणना करें एवं पुनर्गणना तक शपथ ग्रहण रोका जाए। उक्त मांग एवं आवेदन को चुनाव अधिकारी ने अधिवक्ता नियमावली का हवाला देते हुए स्वयं को सर्वोपरि बताते हुए प्रजातांत्रिक मूल्यों की अवहेलना कर निरस्त कर दिया। इसी तरह चुनाव में सचिव पद के प्रत्याशी अधिवक्ता सुनील यादव ने बार एसोसिएशन को पत्र लिखकर निर्वाचन संबंधी सीसीटीवी फुटेज की प्रति दिलाए जाने की मांग रखी गई थी जिस पर बार एसोसिएशन ने सीसीटीवी फुटेज की प्रति परिषद कार्यालय एवं आवेदक अधिवक्ता यादव को दिए जाने का निर्देश जारी किया गया था परंतु चुनाव अधिकारी द्वारा आज दिनांक तक उक्त फुटेज प्रदान नहीं किया गया जिससे मतपत्रों में धांधली की आशंका और प्रबल हो जाती है। फुटेज देने में विलंब होने पर उसमें छेड़छाड़ की आशंका भी है। इसलिए उक्त फुटेज की जांच करवाया जाना भी न्यायोचित होगा। मांग है कि सहायक चुनाव अधिकारियों की नियुक्ति किस आधार पर की गई। उनके चुनाव प्रचार के संबंध में क्या भूमिका थी इसकी जांच की जानी चाहिए।

ऑब्जर्वर की मौजूदगी में ईव्हीएम मशीनों का द्वितीय रेण्डमाईजेशन

मतदान केन्द्रवार ईव्हीएम मशीनों का आबंटन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। लोकसभा चुनाव के लिए मतदान केन्द्रवार ईव्हीएम मशीनों को बांटने का काम सेकण्ड रेण्डमाइजेशन से किया गया। मंथन सभाकक्ष में निर्वाचन आयोग के सॉफ्टवेयर में रेण्डमाईजेशन प्रक्रिया से ईव्हीएम मशीनों को बांटने का कार्य किया गया। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री अवनीश शरण, सामान्य प्रेक्षक श्री अभय ए महाजन, अभ्यर्थी एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में यह कार्य संपन्न हुआ। इस दौरान विधानसभावार ईव्हीएम का रेण्डमाईजेशन किया गया। इसके पश्चात् राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को सूची उपलब्ध कराई गई। उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री शिव कुमार बनर्जी ने बताया कि प्रथम रेण्डमाईजेशन में विधानसभा क्षेत्र आबंटित किया गया था। वहीं द्वितीय रेण्डमाईजेशन में विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केन्द्रों के लिए ईव्हीएम मशीनों को आबंटित किया गया है। मतदान केन्द्र आबंटित होने के पश्चात् ईव्हीएम कमीशनिंग का काम शुरू होगा। उन्होंने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को जानकारी देते हुए बताया कि कमीशनिंग एवं मॉकपोल के दौरान ईव्हीएम में किसी प्रकार की खराबी पाए जाने पर रिजर्व मशीनों से बदला जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि मशीनों के परिवहन की सूचना भी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को दी जाएगी।

घर आजा संगी अभियान के तहत 100 से अधिक प्रवासियों को किया गया कॉल

जशपुरनगर (विश्व परिवार)। जिले में शत प्रतिशत मतदान का लक्ष्य हासिल करने अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। स्वीप कार्यक्रम के तहत भी विभिन्न गतिविधियां जारी है। इसी कड़ी में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देश पर प्रवासी मजदूरों, युवाओं सहित जिले के अन्य मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। घर आजा संगी अभियान के तहत विकासखंड कांसाबेल, पत्थलगांव, दुलदुला,कुनकुरी, मनोरा एवं बगीचा विकासखंड प्रवासियों और पलायन करता परिवार के सदस्यों से फोन से बातचीत की गई और मतदान दिवस में भाग लेने हेतु उन्हें सूचित एवं आमंत्रण किया गया । बगीचा विकासखंड में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ष्ब्रिहानष् की दीदियों द्वारा विशेष कॉल सेंटर बनाकर अबतक 116 प्रवासियों से संपर्क साधा गया, फोन कॉल के माध्यम से उन्हें 7 मई मतदान दिवस होने की सूचना दी गई एवं मतदान में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया गया। इसके अतिरिक्त सभी विकासखंड के ग्रामीण और आदिवासी इलाके के हाट-बाजार में मतदाता जागरूकता अभियान सतत रूप से चलाया जा रहा है। अभियान के तहत वीडियो कॉल, वॉइस कॉल के जरिए संपर्क कर मतदान के लिए निमंत्रण दिया जा जा रहा है। साथ ही उन्हें मतदान के महत्व के बारे में बताया जा रहा है। समूह की महिलाओं समेत अधिकारियों के द्वारा अपील की जा रही है कि, वे अपने घर आकर 7 मई 2024 को मतदान करने अपने संबंधित मतदान केंद्र में जाए। लोकतंत्र के इस महान पर्व में अपनी भागीदारी निभाएं। इसके साथ ही घर परिवार, आस-पड़ोस और अपने से जुड़े सभी लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित करें।

मुआवजा लेने धरने पर बैठा विस्थापित

कोरबा (विश्व परिवार)। जिले के एसईसीएल दीपका एरिया में प्रबंधन व प्रशासन द्वारा अधिगृहीत ग्राम मलगांव का मुआवजा प्रदान किए जाने की प्रक्रिया जारी है,जिसमें कई भूविस्थापित मुआवजा ले भी रहे हैं ,परंतु मुख्यालय ने मुआवजा निर्धारण एवं प्राप्ति की प्रक्रिया को इतना जटिल बनाया हुआ है की भूविस्थापितों को अनेकों प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसा ही एक मामला बीते शनिवार को दीपका महाप्रबंधक कार्यालय में देखने को मिला, जब अपने अधिगृहीत मकान का मुआवजा लेने के लिए भूविस्थापित नेता मनीराम भारती कार्यालय पहुंचे हुए थे, ऐसे में दीपका प्रबंधन द्वारा उनके दस्तावेजों में कमी बताते हुए उन्हें बाकी औपचारिकताएं पूरी करने की बात कही। जिससे मनीराम नाराज हो गए और एस ई सी एल प्रबंधन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए कहने लगे की जब भूविस्थापितों के जन प्रतिनिधियों को ही एस ई सी एल प्रबंधन परेशान कर रहा है तो आम भूविस्थापितों के साथ कैसा सलूक किया जाता होगा। ऐसा कहते हुए मनीराम भारती वहीं धरना देकर बैठ गए,जिसके बाद प्रबंधन के आला अधिकारी हरकत में आए और महाप्रबंधक सक्सेना ने मामले का संज्ञान लेते हुए तत्काल मुआवजे की राशि को प्रदान करने का निर्देश संबंधित विभाग के अधिकारियों को दिया तब कहीं जाकर देर शाम पीडित भूविस्थापित के खाते में मुआवजे की रकम जमा करवाई गई। दरअसल मनीराम भारती के बेटे की शादी तय हुई है, तारीख नजदीक आ गया है परंतु प्रबंधन के अधिकारी दस्तावेजी कार्यवाही को धीमी गति से चला रहे थे, ऐसे में उनका आक्रोशित होना लाजमी था। हालांकि दीपका महाप्रबंधक के संज्ञान लेने के बाद मामला शांत हुआ और मनीराम संतुष्ट दिखे। परंतु प्रबंधन को चाहिए की मुआवजा प्रक्रिया में सरलता के साथ प्रभावितों की समस्याओं का निराकरण किया जाए जिससे ऐसी स्थिति दुबारा उत्पन्न ना हो।

उम्रदराज और दिव्यांगजनों ने होम वोटिंग कर सशक्त लोकतंत्र निर्माण में निभाई सहभागिता

होम वोटिंग के माध्यम से लोकतंत्र के महापर्व में अपनी जिम्मेदारी निभाने का मिला मौका:- मतदाता हीरालाल

होम वोटिंग की व्यवस्था से कोई भी मतदाता मताधिकार के प्रयोग से नही होगा वंचितः- रामनारायण पटेल

कोरबा (विश्व परिवार)। शारीरिक असमर्थता तथा अति वृद्धावस्था के कारण बूथ तक पहुंचकर मतदान करने में असमर्थ लोगों ने होम वोटिंग के जरिये अपने मताधिकार का उपयोग किया और लोकतंत्र के महापर्व में अपनी भागीदारी दी। अनुपस्थित श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले 85 वर्ष से अधिक आयु एवं दिव्यांगजनों ने अपने घर पर ही मतदान किया। उन्होंने निर्वाचन आयोग की इस सुविधा पर खुशी जताई। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा देश के हर एक नागरिक को मतदान में शामिल होने एवं लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी सक्रिय सहभागिता

सुनिश्चित करने हेतु होम वोटिंग की सुविधा प्रारंभ की गई है। जिसका लाभ शारीरिक असमर्थता एवं वृद्धावस्था के कारण मतदान केन्द्र तक पहुँच पाने में असमर्थ अनेक बुजुर्ग तथा दिव्यांग मतदाता को मिल रहा है एवं वे अपने घर पर ही अपने मताधिकार का प्रयोग आसानी से कर पा रहे हैं। कोरबा संसदीय क्षेत्र अंतर्गत जिले के कोरबा व रामपुर विधानसभाओं के चिन्हाकिंत बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं ने होम वोटिंग किया। होम वोटिंग कराने के लिए नियुक्त मतदान अधिकारी उनके घरों में पहुँचे। मतदान अधिकारियों को अपने घर में देखकर मतदाताओं सहित उनके परिजनों ने खुशी जाहिर की। कोरबा के दुरपा बस्ती निवासी दिव्यांग श्री हीरालाल विश्वकर्मा ने होम वोटिंग के माध्यम से अपना मताधिकार का उपयोग किया। उन्होंने कहा कि वोट देकर उन्हें बहुत खुशी हो रही है। उन्हें होम वोटिंग के माध्यम से घर पर ही मतदान कर लोकतंत्र के महापर्व में अपनी जिम्मेदारी निभाने का मौका मिला। इस हेतु उन्होंने भारत निर्वाचन आयोग और मतदान अधिकारियों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया। बरमपुर के लकवाग्रस्त 65 वर्षीय श्री रामनारायण पटेल ने आयोग की इस नई व्यवस्था को बहुत ही महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा शुरू किए गए इस नई व्यवस्था के फलस्वरूप अब देश का कोई भी मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने से वंचित नही होगा। रामपुर विधानसभा के ग्राम बिंझकोट के 88 वर्षीय बुजुर्ग मतदाता श्री मंगलराम का भी होम वोटिंग के जरिए मताधिकार का सपना साकार हुआ। मतदाता के बेटे ने कहा कि भारत निर्वाचन अयोग की इस अच्छी पहल के कारण उम्रदराज और दिव्यांग मतदाता अपने मताधिकार से वंचित होने से बच रहे हैं। उनके लिए यह सुविधा बहुत लाभकारी है। बिना परेशानी के वे घर पर ही वोट देकर लोकतंत्र में अपनी भूमिका अच्छे से निभा रहे हैं। रामपुर विधानसभा अन्तर्गत ग्राम चचिया के 86 वर्षीय बुधिया राम पटेल ने आज घर पर मतदान दलों की उपस्थिति में मतदान किया। मतदान के पश्चात खुशी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि निर्वाचन आयोग द्वारा दिव्यांग और वरिष्ठ नागरिकों को घर पर मतदान की सुविधा देने बहुत ही अच्छी पहल है। हालाकि वे पहले मतदान केन्द्रों में मतदान करते थे। उन्होंने बताया कि लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिए हमें मतदान अवश्य करना चाहिये। मतदान के दिन कुछ लोग घर पर समय बिता देते हैं और मतदान नहीं करते वहीं लोग कई बार आरोप लगाते हैं कि अच्छा जनप्रतिनिधि नहीं चुन पाया गया है।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर मंगलवार 30 अप्रैल 2024

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय

मत का प्रयोग सोच समझ कर करें

चुनाव आयोग से फिर ठनी

उद्धव ठाकरे की चुनाव आयोग से फिर ठन गई है। उनके नेतृत्व वाले गुट को आवंटित चिह्न 'मशाल' की थीम सांग में 'भवानी' का उल्लेख हुआ है। आयोग इसे हिन्दू धर्म की देवी का पर्याय मानते हुए बदलने को कहा है। चुनाव में धार्मिक संज्ञाओं, प्रतीकों, नारों आदि के उल्लेखों की सिद्धांतत: मनाही है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। अत: पार्टियों से अपेक्षा है कि वे किसी एक धर्म और उनके प्रतीकों के आधार पर प्रचार न करें। वोट न मांगें। इससे उस सर्वसाधारणता की भावनाओं की अवज्ञा हो जाती है, जिसका आदर संविधान का मूल अभिप्राय है। उद्धव ठाकरे कहते हैं कि 'भवानी' नाम महाराष्ट्र, जिसमें इसके सभी धर्मो-विासों के नागरिक रहते आए हैं, वह छत्रपति शिवाजी के बलिदानों की पावन कर्मभूमि है, जिन्होंने 'भवानी' का नाम लिया है। शिवाजी माने महाराष्ट्र। इन्हीं शिवाजी के नाम पर उनके पिता बालासाहेब ठाकरे ने शिवसेना, जो पिछले साल बंट गई थी, की बुनियाद रखी थी। वे इस शब्द को नहीं बदलेंगे। उद्धव का यह रवैया आयोग से रार मोल लेने जैसा लगता है। इसलिए भी कि आयोग और न्यायालय ने बाला साहेब के मताधिकार को छह साल तक के लिए निलंबित कर दिया था। तब उन्होंने चुनावी भाषण में हिन्दू वर्चस्व के आधार पर भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने की वकालत की थी। पर उद्धव का मामला इससे भिन्न है। उन्हें आयोग से शिकायत है कि वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर्नाटक विधानसभा चुनाव एवं गृहमंत्री अमित शाह के मध्य प्रदेश चुनाव में क्रमश: बजरंगबली के नाम पर बटन दबाने एवं चुनाव बाद राम मंदिर के मुफ्त दर्शन के उल्लेखों पर आंखें मूंद लेता है। इस बाबत लिखे गए उनके शिकायती पत्र का जवाब तक नहीं देता है। क्यों? इसका जवाब दिए बगैर उद्धव के विरुद्ध कोई कार्रवाई क्या मुनासिब होगी? आयोग समथरे को दोषी नहीं मानता है तो वह समदर्शी कैसे हो सकता है? फिर चुनाव दर चुनाव में लग रहे 'जय.राम' के नारे को क्या कहा जाएगा? दरअसल, 'मशाल' गीत के बोल और उसका संदेश शिकायत की एक बड़ी वजह है। इसमें 'तानाशाही' को खत्म करने की बात कही जा रही है। उम्मीद की जा रही है कि यह मूल शिवसेना की थीम सांग की तरह लोगों को उद्धव गुट की तरफ खींचेगा। जिन वगरे को यह गीत संबोधित है, उसके आधार की एकमात्र प्रवक्ता आज कोई और पार्टी हो गई है। नोटिस का यह भी एक कारण है-उद्धव को लगता है। इनके बावजूद उन्हें नोटिस का तर्कपूर्ण उत्तर देना चाहिए। आयोग को भी इस पर विचार करना चाहिए।

विनीत नारायण

अभी आम चुनाव का प्रथम चरण ही पूरा हुआ है पर ऐसा नहीं लगता कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में चुनाव जैसी कोई महत्त्वपूर्ण घटना घट रही है। चारों ओर एक अजीब-सा सन्नाटा पसरा हुआ है।

न तो गांव, और न ही कस्बों और शहरों में राजनैतिक दलों के होर्डिंग्स और पोस्टर दिखाई दे रहे हैं, और न ही लाऊडस्पीकर पर वोट मांगने वालों का शोर सुनाई दे रहा है, चाय के ढाबों और पान की दुकानों पर अक्सर जमा होने वाली भीड़ भी खामोश है। जबकि पहले चुनावों में ये शहर के वो स्थान होते थे जहां से मतदाताओं की नब्ज पकड़ना आसान होता था। आज मतदाता खामोश है। इसका क्या कारण हो सकता है। संभव है कि मतदाता तय कर चुके हैं कि उन्हें किसे वोट देना है पर अपने मन की बात को जुबान पर नहीं लाना चाहते। क्योंकि उन्हें इसके संभावित दुष्परिणामों का खतरा नजर आता है। यह हमारे लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिए अच्छा लक्षण नहीं है। जनसंवाद के कई लाभ होते हैं। एक तो जनता की बात नेता तक पहुंचती है और दूसरा ऐसे संवादों से जनता जागरूक भी होती है। अलबत्ता, शासन में जो दल बैठा होता है, वो कभी नहीं चाहता कि उसकी नीतियों पर खुली चर्चा हो। दरअसल, उसे इससे माहौल बिगड़ने का खतरा रहता है। हर शासक यही चाहता है कि उसकी उपलब्धियों को बढ़ा-चढ़ाकर मतदाता के सामने पेश किया जाए। इंदिरा गांधी से नरेन्द्र मोदी तक कोई भी इस मानसिकता का अपवाद नहीं रहा है। आम तौर पर यह माना जाता था कि मीडिया सचेतक की भूमिका निभाएगा। पर मीडिया को भी खरीदने और नियंत्रित करने पर हर राजनैतिक दल अपनी हैसियत से ज्यादा खर्च करता है जिससे उसका प्रचार होता रहे। पत्रकारिता में इस मानसिकता के जो अपवाद होते हैं वे यथासंभव निष्पक्ष रहने का प्रयास करते हैं ताकि

परिस्थितियों और समस्याओं का सही मूल्यांकन हो सके। पर इनकी पहुंच बहुत सीमित होती है, जैसा आज हो रहा है। ऐसे में मतदाता तक सही सूचनाएं नहीं पहुंच पातीं। अधूरी जानकारी से जो निर्णय लिए जाते हैं, वो मतदाता, समाज और देश के हित में नहीं होते जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है। सब मानते हैं कि किसी भी देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था ही सबसे अच्छी होती है क्योंकि इसमें समाज के हर वर्ग को अपनी सरकार चुनने का मौका मिलता है।

इस शासन प्रणाली के अंतर्गत आमजन को अपनी इच्छा से चुनाव में खड़े हुए किसी भी प्रत्याशी को वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। इस तरह चुने गए प्रतिनिधियों से विधायिका बनती है। एक अच्छा लोकतंत वह है, जिसमें राजनीतिक और सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक न्याय की व्यवस्था भी है। देश में यह शासन प्रणाली लोगों को सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। आज भारत में जो परिस्थिति है, उसमें जनता भ्रमित है। उसे अपनी बुनियादी समस्याओं की चिंता है पर उसके एक हिस्से के दिमाग में भाजपा और संघ के कार्यकर्ताओं ने यह बैठा दिया है कि नरेन्द्र मोदी अब तक के सबसे श्रेष्ठ और ईमानदार प्रधानमंत्री हैं, इसलिए वे तीसरी बार फिर जीतकर आएंगे, जबकि जमीनी हकीकत अभी अस्पष्ट है। क्षेत्रीय दलों के नेता काफी तेजी से अपने इलाके के मतदाताओं पर पकड़ बना रहे हैं। और उन सवालों को उठा रहे हैं, जिनसे देश का किसान, मजदूर और नौजवान चिंतित है। इसलिए उनके प्रति आम जनता की अपेक्षाएं बढ़ी हैं, इसलिए 'इंडिया' गठबंधन के नेताओं की रैलियों में भरी भीड़ आ रही है। जबकि भाजपा की रैलियों का रंग फीका है।

हालांकि चुनाव की हवा मतदान के 24 घंटे पहले भी पलट जाती है। इसलिए पहले से कुछ कहा नहीं जा सकता। 1970 के दशक में हुए जयप्रकाश आंदोलन के बाद से किसी भी राजनैतिक दल ने आम मतदाताओं को लोकतंत्र के इस महापर्व के लिए प्रशिक्षित नहीं किया है जबकि अगर ऐसा किया होता तो इन दलों को चुनाव के पहले मतदाताओं को खैरात बांटने और उनके सामने लंबे-चौड़े झूठे वादे करने की नौबत नहीं आती। हर दल का अपना एक समर्पित काडर होता जबकि आज काडर के नाम पर पैसा देकर कार्यकर्ता जुटाए जाते हैं, या वे लोग सक्रिय होते हैं, जिन्हें सत्ता मिलने के बाद सत्ता की दलाली करने के अवसरों की तलाश होती है। ऐसे किराये के कार्यकर्ताओं और विचारधारा के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव ही दल बदल का मुख्य कारण है। इससे राजनेताओं की और उनके दलों की साख तेजी से गिरी है। एक दृष्टि से इसे लोकतंत्र के पतन का प्रमाण माना जा सकता है।

हालांकि दूसरी ओर, यह मानने वालों की भी कमी नहीं है कि इन सब आंधियों को झेलने के बावजूद भारत का लोकतंत्र मजबूत हुआ है। उसके करोड़ों आम मतदाताओं ने बार-बार राजनैतिक परिपक्वता का परिचय दिया है, जब उन्होंने बिना शोर मचाए अपने मत के जोर पर कई बार सत्ता परिवर्तन किए हैं। मतदाता की राजनैतिक परिपक्वता का एक और प्रमाण यह भी है कि अब निर्दलीय उम्मीदवारों का प्रभाव लगभग समाप्त हो चला है। 1951 के आम चुनावों में 6त्न निर्दलीय उम्मीदवार जीते थे जबकि 2019 के चुनाव में इनकी संख्या घटकर मात्र 0.11त्न रह गई। स्पष्ट है कि मतदाता ऐसे उम्मीदवारों के हाथ मजबूत नहीं करना चाहता जो अल्पमत की सरकारों से मोटी रकम ऐंठ कर समर्थन देते हैं। मतदाताओं की अपेक्षा और विश्वास संगठित दलों और नेताओं के प्रति है। ऐसे में वे अपने कर्तव्य का सही से पालन करें। आम जन के रूप में हमें निराश नहीं होना है। हमारी हरसंभव कोशिश होनी चाहिए कि हमारे परिवार और समाज में राजनीति के प्रति समझ बढ़े और हर मतदाता अपने मत का प्रयोग सोच समझ कर करे। कोई नेता या दल मतदाता को भेड़-बकरी समझ कर हांकने की जुर्रत न करे।

विचार

रक्षा क्षेत्र में बढ़ेगी धाक

ब्रह्मोस सुपर सोनिक क्रूज मिसाइल भारत ने फिलीपींस को दे दी। दोनों देशों के बीच 37.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर में समझौता 2022 में हुआ था। भारतीय वायु सेना के अमेरिकी मूल के सी-17 के ग्लोब मास्टर ट्रांसपोर्ट एअरक्राफ्ट से फिलीपींस मरीन क्राप्स को ये हथियार सौंपे। यह ऑर्डर 290 किलोमीटर की रेंज वाली एंटी शिप क्रूज मिसाइल के तट आधारित संस्करण के लिए है।

ब्रह्मोस सुपर सोनिक क्रूज मिसाइल भारत-रूस का संयुक्त उद्यम है। भारत डीआरडीओ और रूस के एनपीओ मशिनोस्ट्रोयेनिया इसके प्रमुख साझेदार हैं। ब्रह्मोस की धाक पूरी दुनिया में है तथा यह पहला अंतरराष्ट्रीय ऑडर है। अंदाजा है कि फिलीपींस इसे अपने तटीय इलाकों में तैनात करेगा।

इस मिसाइल पणाली में लॉन्चर, वाहन, लोडर, कमांड और नियंत्रण केंद्र आदि शामिल हैं। भारत के पास लंबी दूरी की कई अन्य मिसाइलें भी हैं। मगर फिलीपींस को दी गई मिसाइलें मूल रूप से छोटी बताई जा रही हैं, जो बिल्कुल नई हैं तथा उस खेप का हिस्सा नहीं हैं, जो भारतीय सशस्त्र बल के पास हैं।

यह प्रसिद्ध हथियार ऐसे वक्त सौंपा जा रहा है, जब दक्षिण चीन सागर में लगातार झड़पें चालू हैं जिससे दोनों मुल्कों के दरम्यान लगातार तनाव बढ़ रहा है। चूंकि ये मिसाइलें दस सेकेंड के भीतर दुश्मन को निशाना बना सकती हैं, इसलिए कहा जा रहा है कि फिलीपींस समुद्र में अपनी ताकत बढ़ा कर चीन से आमने-सामने झड़प के लिए अपनी सेना को तैयार कर रहा है।

हमारे विशेषज्ञ फिलीपींस की सेना को इसकी विशेष ट्रेनिंग भी देंगे जो इस ऑर्डर में लिखित है। इससे न सिर्फ रक्षा क्षेत्र में हमारी धाक बढ़ेगी, बल्कि हमारी सेना का मनोबल भी ऊंचा हो सकेगा।

अपनी इन क्षमताओं के बूते साउथ ईस्ट एशिया में भारत प्रमुख शस्त्र निर्यातक बनने की तैयारी भी कर सकता है, जो वैकि तौर पर भारत की बदलती छवि को लेकर बेहतरीन भूमिका निभाने वाला साबित हो सकता है। निस्संदेह अपने यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है। विभिन्न क्षेत्रों में अपने यहां विशेषज्ञों की धाक जमी हुई है। यदि उन्हें बेहतर मौके मिलते हैं, तो वे देश का नाम रोशन करने के साथ ही चौतरफा अनुभव बटोर सकेंगे और उत्साहजनक ढंग से प्रतिस्पर्धात्मक क्षेत्रों में अव्वल आने के मौके नहीं चूकने का बेहतरीन प्रयास करेंगे।

.....अभी तो शोहरत नई नई है

प्रतीक खरे

छतरपुर/बुन्देलखंड के छोटे से गाव गढ़ा मै जन्म लेकर देश विदेश मै शोहरत का डंका पीट कर करोडो लोगो की आस्था का केन्द्र बने वागेश्वर महाराज की छवि उनके ही परिवार के लोग धूमिल करने मै कोई कमी नही छोड रहै है,हालाकि शास्त्री जी ने अव तक कोई भी येसा काम नही किया जिसे अमार्यादित कहा जा सके पर सगे भाई की करतूतो के कारण उनका नाम जवर्दस्ती विवादो मै घसिट जाता है,साल भर पहले जव शालिग राम ने दलित के घर जा कर कट्टा लहराया ओर गालिया बकी थी तव लोग उस घटना को नादानी मै हुई घटना समझ कर भूल गये थे,लेकिन शुक्रवार को टोल प्लाजा पर शालिग राम गर्ग ने नादानी नही गुन्डई की है,ओर वह भी महाराज जी के नाम की धोस दिखा कर उसे हल्के मै नही लिया जा सकता,इसमे तो आदतन गुण्डागिर्दी की झलक दिखाई देती है,जिस जिस ने इस घटना को सुना बो सव यही कह रहे है साधू जी मान जाओ भाई की तपस्या को धूमिल ना करो । कहावत है की आख हमेशा घर के कुरवा से ही फूटती है सो बागेश्वर महाराज के साथ भी यही हो रहा है, नागपुर मै जादू टोना समिति का मुखिया महराज का वाल भी वांका नही कर पाया ओर इधर घर का कुरवा महाराज के नाम को दोवारा चोटिल कर गया 7 देश की ख्याति प्राप्त शायरा शवीना की एक गजल सालो पहले खूव लोक प्रिय हुई थी जिसमे कहा गया था अभी से उड़ने लगे हवा मै अभी तो शोहरत नई-नई है,महाराज के भाई भी महाराज की शोहरत को पचा नही पा रहे है ओर हवा मै उड रहे है,उनके प्रतेक आचरण मै भाई की शोहरत का घमंड सिर चड कर बोलता हुआ नजर आ रहा है 7 जवकी महारज जैसे जैसे ख्याति बड रही बे वैसे वैसे विनम्र होते जा रहे है।

विश्व बुरी तरह हिंसा से त्रस्त

भारत डोगरा

गाजा में, यूक्रेन में, सुडान में और कितने ही स्थानों पर आज विश्व बुरी तरह हिंसा से त्रस्त है। महाविनाशक हथियारों की ऐसी बहुत खतरनाक होड़ पहले से और तेज हो रही है जो दुनिया को किसी बड़े संकट की ओर ले जाएगी। जो अंतरराष्ट्रीय संस्थान विश्व शांति और निशस्त्रीकरण के लिए सबसे अधिक जिम्मेदार हैं, वे कभी असहाय नजर आते हैं तो कभी केवल चिंता प्रकट करने या बयानबाजी तक ही अपनी जिम्मेदारी को समेट लेते हैं। इस बिगड़ती स्थिति को संभालना बहुत जरूरी है। उम्मीद की एक किरण हम सब जनसाधारण अपने प्रयासों से भी ला सकते हैं। बेशक, हम जनसाधारण प्रत्यक्ष रूप से बड़े युद्ध समाप्त नहीं कर सकते पर अपने आसपास की हिंसा को समाप्त कर या न्यूनतम कर एक अमन-शांति पर आधारित दुनिया बनाने के लिए अच्छी शुरुआत जरूर कर सकते हैं। दुनिया आखिर करोड़ों परिवारों के मिलने से ही तो बनती है, लाखों समुदायों के मिलने से ही तो बनती है। यदि परिवार और समुदाय स्तर से ही अहिंसक विश्व बनाने की बड़ी पहल हो तो इसका असर दूर तक भी जा सकता है। यदि परिवार और समुदाय के स्तर पर हम अहिंसा की जो सीख प्राप्त करते हैं, उसका उपयोग आगे, अधिक व्यापक स्तरों पर अमन-शांति के प्रयासों के लिए करते रहें। इस सोच के मूल में यह समझ है कि हिंसा मनुष्य के दुख-दर्द का एक प्रमुख कारण है। हर मनुष्य दुख-दर्द कम करना चाहता है और इसके लिए एक प्रमुख मार्ग यह है कि वह अपने भीतर की हिंसा और अपने आसपास की हिंसा को कम करे। यह मार्ग हम सबको उपलब्ध है, पर फिर भी यह प्राय: उपेक्षित है। यहां तक कि अपने भीतर की हिंसा को एक समस्या के रूप में पहचानने की प्रवृत्ति भी कम ही नजर आती है। पर वास्तविकता तो यह है कि मनुष्य के भीतर की हिंसा और आसपास की हिंसा अधिकांश समाजों में एक बड़ी समस्या है। भारत हो या अमेरिका इसकी एक बड़ी अभिव्यक्ति घरेलू हिंसा के बेहद चिंतित करने वाले आंकड़ों में उपलब्ध होती है। अमेरिका जैसे 'विकसित' समाज में भी एक वर्ष में 110 से 120 लाख व्यक्ति घरेलू हिंसा अपने नजदीकी साथी (इंटीमेट पार्टनर) की हिंसा का शिकार होते हैं (प्रति मिनट 20) और इनमें से बहुत बड़ा हिस्सा महिलाओं का है। 19 प्रतिशत घरेलू हिंसा की घटनाओं में किसी न किसी हथियार का उपयोग भी होता है। घरेलू हिंसा की बड़ी वारदात को रहने दें तो भी कितने ही दिन जनसाधारण के ऐसे गुजरते हैं जिसमें छोटी-छोटी बातों में, क्रोध के आ जाने से जो कहा-सुनी हो जाती है उसके कारण दिन खराब हो जाता है, दुख भी होता है। हमारे समाज में परिवार में प्रेम और लगाव बहुत है, पर झगड़े भी कम नहीं हैं-फिर चाहे पति-पत्नी के झगड़े हों, भाई-भाई या सास-बहू के। अंत में अधिक सहना तो महिलाओं और बच्चों को ही पड़ता है, जबकि घरेलू हिंसा के दौर में बच्चे जो सहते हैं उसका अहसास भी कई बार व्यस्क सदस्यों को नहीं होता। बाद में मन में आता है कि ओह, क्रोध में हम क्यों नाहक अपने प्रियजनों को परेशान करते हैं और स्वयं भी होते हैं, पर यह सोचने के बाद भी बार-बार ऐसी वारदात होती ही रहती हैं। इसकी वजह यह है कि अपने भीतर की हिंसा को पहचानने और उसे कम करने के जरूरी प्रयास नहीं होते। इसके साथ कहीं न कहीं आधिपत्य की भावना जुड़ी होती है। यह लिंग आधारित हो सकती है (पुरुष द्वारा महिला पर आधिपत्य समझना), आयु-आधारित या धन-संपत्ति आधारित हो सकती है। वास्तव में अहंकार, क्रोध, आधिपत्य, हिंसा यह सब आपस में जुड़े हुए हैं। फिर इन के साथ यदि नशे की प्रवृत्ति जुड़ जाए, विशेषकर शराब के नशे की प्रवृत्ति, तो इन सब की अभिव्यक्ति और भयानक रूप में हो सकती है। यदि इस सब को एक गंभीर समस्या के रूप में समझ कर इसे कम करने का प्रयास होगा तो विभिन्न व्यक्तियों और परिवारों में दुख-दर्द, परेशानी, तनाव, अपमान, आहत होने के अहसास और अवसाद में बहुत कमी आ सकती है, तथा दूसरी ओर खुशहाली, परस्पर प्रेम और सम्मान में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है। इस तरह समाज की सबसे छोटी पर बुनियादी इकाई के स्तर पर अहिंसा के प्रयासों को जो सफलता मिलेगी, उसके आधार पर जनसाधारण को, महिलाओं और पुरुषों को, युवाओं और छात्रों को प्रेरित कर समुदाय के स्तर पर अधिक व्यापक भूमिका के लिए तैयार किया जा सकता है। समुदाय में जो धर्म, जाति, लिंग आदि के स्तर पर भेदभाव हैं, वह भी मन के अंदर की हिंसा की एक अभिव्यक्ति है। हिंसा, आधिपत्य, अहंकार के मिले-जुले असर से किसी अन्य मनुष्य को धर्म, जाति के आधार पर हीन भावना से देखा जाता है।

मजदूर दिवस 1 मई चिंतन आलेख

मजदूर अशक्त नहीं सशक्त है

सृष्टि के आरंभ से ही मजदूर वर्ग का जन्म हुआ।मानव समाज का यह एक ऐसा वर्ग है जो आजीवन दूसरों का बोझ अपने सिर पर लेकर चलता है।कम दाम पर अधिक काम बड़े आराम से कर देता है।खुद के सिर पर छत नहीं होता,हाथ पावं में फफोले होते हैं पर दूसरों की आलीशान कोठी बनाने में कोताही नहीं करता।इसी लिए तपती धूप,कड़कती ठंढ और भीषण बारिश भी मजदूर की मेहनत को झूककर सलाम करते हैं। मजदूर की बलशाली भुजाओं को देखकर कठोर चट्टान,ऊंचे पर्वत कांपते हैं।

ऐसे बाहुबली मजदूरों का अपने साथ-साथ अपने परिवारजनों के जीवन यापन,रोजी रोटी हेतु दूसरों का बोझ उठाना अगर मजबूरी है तो मजदूर की ताकत के दम पर ही गंतव्य तक पहुंचाना,नव निर्माण कार्य को पूरा करना समाज के अन्य वर्गों की भी मजबूरी है।अत्याधुनिक मशीनों के आविष्कार ने आज के युग को जेट युग बना दिया है। तेज रफ्तार ही तेज प्रगति की पर्याय बनती जा रही है। ऐसे दौर में भी मजदूरों की अहमियत बरकरार है। उनका स्थान पूरी तरह से मशीन नहीं ले सकी है।तात्पर्य यही है कि धरा पर卐भगवान विश्वकर्मा卐 की भांति मजदूरों की अहमियत मानव समाज में सदैव बनी रहेगी।

गांव शहर की चहल पहल,कल कारखानों की कल- कल कल- कल को चलायमान रखने वाले मजदूरों ने सर्वप्रथम अमेरिका में 1 मई 1886 को अपने हक की लड़ाई लड़ी और एक दिन में आठ घंटे कार्य की समय सीमा को

निर्धारित करने में कामयाबी पाई,यद्यपि इस आन्दोलन में मजदूरों की मौत भी हुई। आज भारत सहित अन्य देशों में भी कार्य समयावधि आठ घंटा मान्य है। इसी आंदोलन के बाद से एक मई को अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की आधारशिला रखी गई।भारत में 1 मई 1923 से मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत चेन्नई से हुई थी।

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस कड़ी मेहनत से उपजी उन्नति से प्रेरणा लेकर आगे और बेहतर करने हेतु संकल्प लेने का दिवस होता है। मजदूरों के जीवन में जश्न के साथ नव ऊर्जा को संचारित करने का दिवस होता है। मजदूरों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने का दिवस होता है।शोषणकर्ताओं के विरुद्ध साझा संघर्ष के लिए एक जुट होने का दिवस होता है।यद्यपि बड़ी चिंता जनक बात है कि अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की पहल के सैकड़ों वर्षों बाद भी ज्यादातर मजदूरों की दुर्दशा ही दिखाई देती है। मजदूर दिवस का आयोजन कागजी रस्म सा प्रतीत होता है।केवल इसी दिवस पर मजदूरों का सम्मान करने वालों को चाहिए कि हरेक दिवस को मजदूर के मान सम्मान दिवस की दृष्टि से ही देखें।

याद रखना होगा कि मजदूरों का शोषण, मजदूरों के साथ अन्याय करना स्वयं को कमजोर बनाने जैसा कृत्य सिद्ध होगा।अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने वाले मजदूरों की ताकत को नजर अंदाज करना उल्टे गिरने की स्थिति में ला खड़ा करेगा।दुनिया के ज्यादातर मजदूर निरक्षर और अनपढ़ होते हैं।यही वजह है सुरक्षा के प्रति सजगता और अधिकारों के प्रति जागरूकता की कमी भी मजदूरों में दिखाई देती है, पर ज्ञानी ध्यानी पूंजीपति मालिकों को अनपढ़ मजदूर ही पसीना बहाना, पसीना बहाकर रोजी-रोटी रुपया पैसा कमाना सिखाता है,अत: मजदूरों के अधिकारों की सुरक्षा,उनके प्रति सहानुभूति रखना मालिकों के लिए भी हितकर है।

मजदूर दिवस पर यह भी स्मरणीय है कि मजदूर की गाढ़ी कमाई की पवित्रता ही उसे उबड़ खाबड़ जमीन पर मीठी नींद सुला देती है।ऐसे ही परिश्रम और पसीने की महत्ता को उजागर करते हुए जैन मुनि श्री तरुण सागर जी कहते हैं कि- बिना पसीना बहाये जो धन दौलत हासिल होता है,वह पाप की कमाई के समतुल्य है। पाप की कमाई से सोना हीरा जड़ित कंगन तो पहन सकते हैं, पर यह भी संभव है कि पाप की कमाई के कारण लोहे की हथकड़ियां भी पहननी पड़ जाए।

प्राय: यह भी देखने सुनने में आता है कि मालिक बने धनाढ्य लोग समान काम के लिए समान मजदूरी नहीं देते।मजदूरों को समय पर मजदूरी नहीं देते,या आधी अधूरी मजदूरी ही देते हैं। ऐसे कुटिल चाल, कुत्सित विचारों के पीछे मालिक की सोच मजदूरों को बंधुवा बनाकर रखने की होती है,जो कि हर दृष्टिकोण से मानवीय धर्म के विरुद्ध है।अनुचित है।

धार्मिक ग्रंथों में,नीति शास्त्रों में इस बात को विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है कि भरण पोषण के लिए खून - पसीना बहाने वाले मजदूरों की पाई पाई मजदूरी का भुगतान उसका पसीना सूखने के पहले ही कर देना चाहिए।ऐसा करना मजदूर समुदाय को तन मन धन से मजबूत बनाना है।मजदूर की मजबूती ही मालिक को ठोस धरातल और सुदृढ़ नींव पर खड़ा करती है।

मजदूरों के प्रति उदारता,सहृदयता अनेक अर्थों में दोहरा लाभ दिलाने वाली कुंजी है। मजदूर और मालिक के मध्य परोपकार की भावना आपसी रिश्ते में प्रगाढ़ता लाती है। प्रबल विश्वास जगाती है।कवि रहीम जी की पंक्तियां इसे बेहतर उजागर करती हैं- 卐रहीम वे नर धन्य हैं पर उपकारी अंग,बांटनवारे को लगे ज्यों मेहंदी को रंग卐 अर्थात दूसरों को खुशी देने वाले बधाई के पात्र हैं। मालिक-प्रबंधन- श्रमिक के मध्य मधुर संबंध से उसी तरह दोहरा लाभ होता है जैसे मेहंदी लगाने वाले के हाथ में ना चाहते हुए भी मेहंदी का रंग स्वत: चढ़ जाता है। दूसरों के माथे पर चंदन लगाने वाले के हाथ स्वत: चंदन की महक से गमक उठाते हैं।

मजदूर दिवस पर श्रम शक्ति को नमन करते हुए मजदूरों से काम लेने वालों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मजदूर के पसीने के बिना प्रगति की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे श्रमवीरों- कर्मवीरों को सटीक परिभाषित करती हैं ए पंक्तियां --

मजदूर अशक्त नहीं सशक्त है, श्रम के पुजारी श्रम के भक्त हैं। मजदूर मजबूर नहीं मजबूत है,विकास की नींव विकास के सबूत है।

विजय मिश्रा 'अमित'

संक्षिप्त समाचार

श्रमण संघीय जैन संस्कार आवासीय शिविर में बच्चे सिखेगे जीवन नव निर्माण के गुण

दुर्ग (विश्व परिवार)। वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ दुर्ग के बैनर तले श्रमण संघीय जैन संस्कार आवासीय शिविर का आयोजन 1 में से 9 में तक जय आनंद मधुकर रतन भवन बांधा तालाब दुर्ग में

दुर्ग के जय आनंद मधुकर रतन भवन में होने जा रहा यह आयोजन, महासतियों का सानिध्य मिलेगा

आयोजित किया जा रहा है इस संस्कार शिविर में महासाध्वी विजयश्री जी आर्या एवं महासाध्वी प्रियदर्शना श्री जी प्रियदा का पावन सानिध्य प्राप्त होगा आप श्री के मार्गदर्शन में ही 9दिवसीय संस्कार शिविर का आयोजन होगा जिसमें 8 वर्ष से 20 वर्ष के युवक युवतियां छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों से हिस्सा लेने आ रहे हैं। वर्तमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के अध्यक्ष धर्मचंद लोढ़ा एवं मंत्री राकेश संचेती ने जानकारी देते हुए बताया आचार्य भगवान श्री आनंद ऋषि जी छत्तीसगढ़ प्रवर्तक श्री रतन मुनि जी के दिव्य आशीर्वाद तथा युग प्रधान आचार्य सम्राट श्री शिव मुनि जी महाराज एवं युवाचार्य भगवंत श्री महेन्द्र ऋषि जी के पावन आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। 1 में से 9 में तक चलने वाले इस संस्कार शिविर के लाभार्थी वीर माता संथारा साधिका श्रीमती त्रिशला देवी भंवरलाल जी श्रीश्रीमाल परिवार होंगे उन्होंने बताया इस शिविर में वर्धमान सेवा मंच श्रमण संघ महिला मंडल श्रमण संघ स्वाध्याय मंडल एवं बालिका मंडल के सदस्य अपनी सेवाएं देंगे। इस शिविर में जीवन नव-निर्माण की अनेक विधाओं को सिखाया जाएगा तथा बहुत से धार्मिक अध्ययन से पारंगत किया जाएगा जिसमें साध्वी समुदाय प्रमुख किरदार निभाएंगी। इस शिविर के संयोजन में आनंद मधुकर रतन पाठशाला की शिक्षिका परिवार भी अपना सहयोग और समर्पण आयोजित इस शिविर में देंगी। **-नवीन संचेती**

द्वादश वर्षीय संस्कृति स्वाध्याय पाठ्यक्रम सांगानेर जयपुर द्वारा शिक्षण शिविर का आयोजन सम्पन्न

राजिम (विश्व परिवार)। द्वादश वर्षीय संस्कृति स्वाध्याय पाठ्यक्रम सांगानेर जयपुर द्वारा जैन धर्म धार्मिक शिक्षण शिविर नयापारा राजिम सेंटर में छह ढाला पाठ्यक्रम के अंतर्गत उपरोक्त संस्था द्वारा शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें श्रीमती अनीता जैन के द्वारा शिक्षण कार्य करवाया गया था शिविर के पश्चात आज 28.4. 24. को शिक्षण शिविर में भाग लेने वाले का वार्षिक परीक्षा का आयोजन किया गया परीक्षा अंकित भैया के निर्देशन में संपन्न हुआ महावीर दिगंबर जैन पाठशाला के अंतर्गत परीक्षा में अनेक परीक्षार्थियों ने अपनी सहभागिता दी परीक्षा के संयोजक व निरीक्षक के रूप में श्री किशोर सिंघई सुरीतजैन अखिलेश जैन कुमारी मेघा रांवका ने अपनी उपस्थिति दी समाज के संरक्षक रमेश पहाड़िया जी ने सभी का आभार प्रदर्शन किया। **-किशोर जैन**

गौरवशाली लंदन यात्रा

जैन संस्कृति की विलक्षण धरोहर जिससे अंग्रेज शासको ने आकर्षित होकर उन्हें ब्रिटिश म्यूजियम में संग्रहित करके भारत का गौरव बढ़ाया है। ऐसी लक्षण मूर्तियां जो जिन शासन की अमूल्य निधि हैं, आज दर्शन करने का सौभाग्य श्री राजेश कुमार जैन श्रीमति मीता जैन जो छतरपुर मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं, लंदन में कार्यरत हैं, ने प्रदान किया।

आपने अपने गृह निवास के बगीचे में भगवान शांतिनाथ स्वामी का मंदिर स्थापित किया है, जिसमें श्री सुमति नाथ, संभावनाथ, विमलनाथ, एवं अरनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित की हैं।

इस वेदी प्रतिष्ठा अनुष्ठान में यूके के लगभग सभी श्रद्धालुओं ने सह भागिता का सौभाग्य प्राप्त किया है।

मैं यहां के विशिष्ट स्थलों का दिग्दर्शन श्री नितेश जी प्रीति काला कोपरगांव वालों के साथ किया है, यहां की प्राचीन संस्कृति के संरक्षण हेतु प्रशासन का प्रयास सराहनीय है। यहां का आर्किटेक्चर अद्भुत एवं विलक्षण है, सभी इमारतें प्राचीनता की धरोहर हैं, उनके साथ आधुनिक संस्कृति का समावेश भी विशिष्ट एवं दर्शनीय है।

ब्रिटिश म्यूजियम में भगवान ऋषभदेव एवं महावीर स्वामी की युगल प्रतिमा अत्यंत विलक्षण एवं दर्शनीय हैं यह जैन संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। इसके साथ बाहुबली भगवान की प्रतिमा, चौबीसी, अरिहंत प्रतिमा, आदिनाथ प्रतिमा, मां सरस्वती की विशेष प्रतिमाएं यहां संगृहीत हैं, जिनमें धातु की दो भुजा वाली, मार्बल की दो एवं चारभुजा वाली सरस्वती प्रतिमाएं अत्यंत आकर्षक हैं। कंकाली टीला मथुरा की प्रतिमा एवं शीर्ष के साथ यहां प्राचीन काल शिल्पों को प्रदर्शित किया गया है। जैन संस्कृति के साथ भारतीय संस्कृति के विशिष्ट कलाशिल्प एवं मूर्तियां गौरवशाली भारत के साक्ष्य हैं।

यहां ब्रिटिश लाइब्रेरी कारण बस अभी बंद होने के कारण वहां के शास्त्रों का अवलोकन संभव नहीं हो सका है।

इस अनुष्ठान में यूके में रहने वाले विभिन्न प्रांतो के सभी श्रावकों श्राविकाओं एवं बच्चों ने सक्रियता एवं निष्ठापूर्वक सहभागी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। सभी अपने समयानुसार एवं क्षमतानुसार भगवान की भक्ति श्रद्धा, निष्ठा एवं ईमानदारी से करते हैं। यहां शनिवार एवं रविवार को अवकाश के दिन सभी दर्शन, अभिषेक, पूजा, स्वाध्याय एवं बच्चों की पाठशाला संपादित करते हैं, जो आगामी पीढ़ी के लिए वरदान है।

पुन: श्री राजेश कुमार जी मीता जी का बहुत-बहुत आभार। सभी यूके के जैन परिवारों का धन्यवाद जिन्होंने मेरी चर्या में सहयोग देकर उपकृत किया है।

-ब्रह्मचारी जय कुमार निशांत (लंदन से)
महामंत्री अखिल भारतवर्षीय दिगंबर
जैन शास्त्री परिषद्,
निर्देशक श्री नवागढ़ गुरुकुलम

चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी मुनिराज के आचार्य पदारोहण शताब्दी वर्ष का शुभारंभ

इंदौर (विश्व परिवार)। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागर जी मुनिराज के आचार्य पदारोहण शताब्दी समारोह समिति के तत्वावधान एवं आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के संघ सान्निध्य में चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागरजी मुनिराज (दक्षिण) के आचार्य पदारोहण के शताब्दी वर्ष का शुभारंभ अध्यात्म आयोजित भव्य समारोह में मंगल ध्वनि व जयघोष के साथ मांगलिक भवन बाहुबली कॉलोनी में हुआ। समारोह एक वर्ष तक चलेगा सभा में आर्यिका 105 श्री महायश मति माताजी ने बताया कि बागड़ को पुण्य उदय से आचार्य श्री शांति सागर जी, वीर सागर जी से लेकर आचार्य वर्धमान सागर जी का संत समागम मिला है अब तन मन धन से पुरुषार्थ श्रद्धा भक्ति उत्साह समर्पण संगठन शक्ति से करने का अवसर मिला। संघस्थ शिष्य मुनि हितेंद्रसागर जी ने प्रवचन में बताया कि णमोकार मंत्र माता के समान लालन-पालन पोषण करता है, ममता और वात्सल्य मिलता है णमोकार मंत्र के जाप से दुख के पलों में सुख का अनुभव होता है। करोड़ मंत्रो में एकमात्र णमोकार मंत्र ऐसा है जिसे हम हर स्थिति, हर क्रिया के समय जाप कर सकते हैं।24 घंटे जाप कर सकते हैं णमोकार मंत्र अनादि निधन है इसे किसी ने बनाया नहीं णमोकार मंत्र के जाप से पुण्य की प्राप्ति होती है।श्री आदिनाथ भगवान में णमोकार मंत्र के मंगलाचरण से देशना की। णमोकार मंत्र तथा सभी धार्मिक क्रिया विशुद्धता पूर्वक करना चाहिए। अंजन चोर की कहानी के माध्यम से मुनिश्री ने बताया कि उसे णमोकार मंत्र याद नहीं था किंतु णमोकार मंत्र पर श्रद्धा थी इसलिए उसने परमानंद पद को प्राप्त किया और अंजन से निरंजन बन गए। यह विशेष मंत्र है णमोकार मंत्र का उच्चारण सही करना चाहिए जिस समय जैन धर्म के संस्कृति जिनालय पर हमला हुआ तब आचार्य शांति सागर जी महाराज ने 18 करोड़ से अधिक मंत्रों का जाप किया मुनि श्री ने धर्म सभा के बारे में बताया कि धर्म की वाणी विनय पूर्वक सब कार्य बंद कर सुनना चाहिए। क्योंकि भगवान की दिव्य ध्वनि सूर्योदय, दोपहर को और शाम को गोधूलि बेला में दिव्य ध्वनि खिरती है।

तो उनकी अंतिम समाधि को भी जानने का प्रयास मत करो, आचार्य श्री आचार्य श्री थे, है और उसी रूप में जाने जायेगे क्षायिक सम्यकदृष्टि को बराबर अतिचार के दोष लगते है, कांक्षा नाम का अतिचार हो सकता है लेकिनअयस्ककीर्ति मात्र चौथे गुणस्थान तक ही उदय में रहती है। गुणायतन वह परिकल्पना है जिससे लोग पोथियों की बातों को पदों में समझ सके, जैनधर्म के मर्म को क्षणभर में जान सके मुनि 108 हितेंद्र सागर जी महाराज ने बताया महोत्सव ऐसा मनाना है जिसकी गुंज पुरे विश्व मे गुन्जे आचार्य श्री ने सभी को आशीर्वाद दिया कि आपका सभी कार्यपूर्ण हो इस अवसर समारोह का कुशलता पूर्वक संचालन कमल जी सारगिया द्वारा किया गया सभी श्रावको ने अपने विचार व्यक्त किए जिनमे सुरेश जी संघवी जी ने कहा जब पुण्य का उदय आता है तो अशुभ कर्म भी शुभ कर्म मे बदल जाते है हमारा पुण्य का उदय हुआ जो इतने तपस्वी गुरु का हमे सानिध्य मिला कमल जी सारगिया ने बताया आचार्य शान्ती सागर महाराज जी महाराज ने धर्म को आगे बढ़ाने में अथक प्रयास किया जिसके कारण आज दिगम्बर धर्म बचा हुआ है महावीर बोहरा मे बताया जिसकी शताब्दी समारोह मनाने के लिए हम इकठे हुए हैं गुरुदेव ने इस धर्म को टुटने व बिखरने से। बचाया है महावीर गगावत ने कहा कई प्रकार की कठीनाईयो को जेलते हुए धर्म को पुन: स्थापित किया बसन्त जी सर्राफ ने बताया बेठक का मुख्य उद्देश्य गुरु देव की शताब्दी पुरा बासवाडा समाज बडी उत्साह से मनाए इन्दर मल जी दोषी ने कहा सभी समाज अपने अपने स्तर पर मिटिंग करे ताकी भव्य प्रोगाम हो पुलक मंच के अध्यक्ष हेमन्त सेठ ने बताया शताब्दी समारोह मे युवा पीढ़ी को जोडे व गुरुदेव के चारित्र का परिचय करावे दिनेश जी ने कहा सुर्य के आगे दिपक का महत्व नही होता गुरु के गुणगान किया व आचार्य श्री का जगह किर्तिमान स्तुभ्म बनाया जाय ताकी सभी को प्रेरणा मिले नरेन्द जी चित्तोडा ने बताया आचार्य श्री के शताब्दी तन मन धन से मनाया जाय पंकज जी वकील साहब ने हम चाहते है नेक कार्य में लगे रहे सुमतीलाल जी वोरा ने बताया महोत्सव में मोहन कालोनी समाज को जो भी कार्य बताओगे हम तन मन धन से करेंगे अशोक कोठिया ने बताया बच्चो को चलचित्र के माध्यम से जिवन के बारे में जानकारी देवे बदामी लाल जी वोरा ने कहा हम गुरु के निदेश का पालन करेंगे विनोद जी ठिकरिया समाज मे कहा यह महोत्सव बहुत भव्य होगा विपिन जी शाह ने कहा गुरु के अनेक उपकार है उन उपकार को केसे आभार व्यक्त करे अब हमारी बारी है बागीदोरा समाज मे बताया हर घर शान्ती सागर धमेन्द्र मेहता ने कहा हम आचार्य श्री का चारित्र का म्यूजियम बना कर सभी को पेरीत करे पंकज गाधी ने बताया आज का जमाना डिजिटल का है हम गुरुवर के चारित्र को इसके माध्यम से बतावे महावीर जी नश्चनावत ने कहा गुरुदेव के नाम से चोराहा हो महेन्द्र वोरा ने कहा अगर यह चलते फिरते तिर्थ गुरुदेव नही होते तो हम धर्म को नही जानते हमे ऐसे गुरु का शताब्दी महोत्सव मनाने का मोका मिला है उसे भव्य मनावे अंत में गुरुदेव के सानिध्य में अलग-अलग कमेटी का गठन हुआ।

मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज, प्रमाण सागर जी महाराज का हुआ एक साथ विहार

गुणायतन की कल्पना आज के युग के अनुसार है : मुनि पुंगव ● थूवोनजी कमेटी की ओर से किए श्रीफल भेंट चातुर्मास का किया निवेदन किया : विजय धुर्रा

कुंडलपुर (विश्व परिवार)। आचार्य पद पदारोहण समारोह के वाद सिद्ध क्षेत्र कुंडलपुर से आचार्य संघ के उप संघों विहार चल रहा है इसी क्रम में गत दिवस मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज एवं गुणायतन प्रेरक मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज मुनिश्री अजित सागर जी महाराज ससंघ ने विहार कर दिया मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज पटेरा में विराजमान हैं

दो महान संतों का एक साथ समागम हमें मिल रहा है : समारोह का संचालन करते हुए मध्य प्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि नो वर्षों के बाद आचार्य पद पदारोहण समारोह के उपरांत जिज्ञासा समाधान एवं संका समाधान का एक साथ दो महा संतों के श्री मुख से भगवान जिनेन्द्र देव की देसना को सौभाग्य हम सबको मिल रहा है आज जिन शासन की प्रभावना करने वाले इन महा संतों की देशना से सभी देशवासियों को लाभ मिलेगा।

जिज्ञासा समाधान में मुनि पुगंव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा कि गुणायतन की कल्पना आज के युग के अनुसार है, क्या किस समय घटित हुआ उसकी थियोरी हमारे पास थी, जो शस्त्रों में निबद्ध है लेकिन थियोरी को साकार रूप देने के लिए गुणायतन की स्थापना की गयी देव आदि की सहायता लेना अलग चीज है और पूजा करना अलग चीज है। सहयोगी की आराधना, पूजा, उच्च स्थान देना इस कारण से मिथ्यात्व का दोष आता है।

उन्होंने कहा कि आचार्य श्री अन्तरसाधक थे, उनकी पूरी जिंदगी रहस्यमयी रही, न उनका आहार कोई जान पाया, न विहार, न विचार जान पाया

महापुरुष की हर व्यथा आगे चलकर कथा बन जाती है: मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज

उन्होंने कहा कि महापुरुषों का जितना जितना अतीत हो जाता है, उनकी जिंदगी की व्यथाएँ, कथा रूप में परिणित हो जाती है और कथा बन जाना ही महापुरुषों का सबसे बड़ा अतीत को वर्तमान का रूप देना होता है उन्होंने कहा कि पूज्य नेमीचन्द्र महाराज ने त्रिलोकसार के अंदर कहा कि प्रत्येक भोगभूमियाँ जीव के आंगन में दसो कल्पवृक्ष होते है। सैकड़ो कि.मी. में उनकी भूमि, भवन होता है, उनमे बाग, बगीचे आदि में घूमते रहते है। उनका एरिया चिन्हित होता है। वे आपसी में वार्तालाप करते है ऐसा कोई उल्लेख आगम में देखने मे नही आया अगला भव मनुष्य गति का मिले यह सोचना गलत है, मिथ्यात्व है लेकिन ये जोड़ दिया कि फिर से यही जिनालय, जिनवर, महाव्रत, गुरुवर शरण मिले तो वह सम्यक्त्व हो सकता है।

गुणायतन देखकर पोथियो की आवश्यकता नहीं होगी : परम पूज्य गुणायतन प्रेरक मुनिश्री प्रणाम सागर जी महाराज ने कहा कि अवर्णवाद 13 वे गुणस्थानवर्ती का भी क्षायिक सम्यकदृष्टि को पदे पदे लगता है, भरत बाहुबली का युद्ध इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

देवताओं के मूल शरीर मे कोई भी घटा बढ़ी नही होती लेकिन विक्रिया के माध्यम से ऐच्छिक कितनी बड़ी भी विक्रिया कर सकते है। अधिकतम उनकी विक्रिया का आयतन 1 लाख योजन प्रमाण व जघन्यतम अंगुल के असंख्यात वे भाग प्रमाण कहा है बाहर से हमने व्यक्ति के मरण को मान लिया है लेकिन जरूरी नही कि व्यक्ति के अचेतन होने से अंदर की आत्मा भी निकल गई हो, हो सकता है अंतर आत्मा हो, वो सुन रही है ऐसा मानकर उसको सम्बोधन करना चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कुन्दकुन्द मूलआम्नाय की परंपरा के मंदिरों में हमेशा आचार्य माघनंदी वाला ही अभिषेक पाठ होना चाहिए, वही प्राचीनतम, श्रेष्ठ व शुद्ध है जैनधर्म में व्यक्ति मूर्ति को नही, मूर्तिमान को नमोस्तु करता है। जैनधर्म मूर्ति की पूजा का समर्थक नही, मूर्तिमान की पूजा का समर्थक है। ज्योतिष शास्त्र का वर्णन द्वादशांग के अंतर्गत आता है, प्रकीर्णक रूप से प्रथमानुयोग में देखने मे आता है। राजवार्तिक आदि ग्रन्थों में कथाओं के कथन में वास्तु के अंश देखे जाते है।

-विजय धुर्रा

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल कुमार सेठी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा

नयापारा राजिम (विश्व परिवार)। भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वर्गीय निर्मल कुमार सेठी की तृतीय पुण्य स्मृति पर नयापारा दिगंबर जैन समाज राजिम द्वारा शर्धाञ्जली सभा का आयोजन किया गया अध्यक्ष किशोर सिंघई ने विनियांजलि अंजलि अर्पित करते हुए बताया कि सेठी जी ने लंबे समय तक राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में देश-विदेश के दिगंबर जैन समाज के लिए अपने महत्वपूर्ण कार्य किया साधु संतो के आहार विहार की समुचित व्यवस्था कराकर समाज के अनुकरनीय कार्य किया उपाध्यक्ष सुरित जैन ने बताया कि सेठी जी जैन समाज के आधार स्तंभ थे अपने कार्यकाल में दिगंबर जैन समाज में बहुत से रचनात्मक कार्य किया एवं संगठन को मजबूत किया सचिवअखिलेश जैन ने बताया कि उन्होंने भारत वर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ संरक्षण समिति का गठन कर पुराने तीर्थ क्षेत्रो का जीर्णोधार कर नवीनीकरण कराकर जैन धर्म का विकास करवाया.पूर्व संरक्षक अशोक गंगवाल संरक्षक रमेश पहाड़ियाने संबोधित कर उनके जीवन पर प्रकाश डाला महिला मंडल ज्ञान ज्योति बहू मंडल पाठशाला समिति बालिका मंडल के पदाधिकारी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालकर उनके द्वारा दिए गए कार्यों की अनुमोदना की। **-किशोर जैन**

जैन धरोहर दिवस सम्पन्न

औरंगाबाद (विश्व परिवार)। छत्रपति संभाजीनगर औरंगाबाद जैन समाज के प्रेरणास्त्रोत स्व. निर्मल कुमार सेठी एवं पीयू जैन के स्मृति दिवस पर श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा, तीर्थ संरक्षिणी महासभा, श्री उत्तमचंद ठोले छात्रावास, पीयू विद्यालय की ओर से जैन विरासत दिवस मनाया गया। शिक्षिका शर्मिला जैन और संचानी ने मंगला चरण प्रस्तुत किया। तीर्थ संरक्षिणी महासभा महाराष्ट्र प्रांत के अध्यक्ष वर्धमान पांडे ने प्रस्तावना रखी। जैन एजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष महावीर सेठी ने स्वागत भाषण दिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष न्यायमूर्ति के.यू. चांदीवाल एवं मुख्य अतिथि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधीक्षक डॉ. शिवकुमार भगत ने दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन किया। स्व. पी.यू. जैन एवं निर्मल सेठी के चित्रों पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। सकल जैन समाज के उपाध्यक्ष डी. बी. कासलीवाल ने निर्मल सेठी तो अरुण पाटनी ने पीयू जैन का जीवन समाज के लिए किस प्रकार प्रेरणास्त्रोत रहा, बताया। मुख्य अतिथि डॉ. शिवकुमार भगत ने जैन पुरातत्व एवं उसकी सुरक्षा व संरक्षण पर विचार रखे। कार्यक्रम में संजय पापड़ीवाल, खंडेलवाल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष ललित पाटनी, महासभा अध्यक्ष डी.यू. जैन, कार्यकारी अध्यक्ष देवेन्द्र काला, सकल जैन समाज के महामंत्री महावीर पाटनी, प्रकाश कासलीवाल, दिनेश गंगवाल, सुरेश कासलीवाल आदि अनेक गणमान्यजन एवं महिलाएं बड़ी संख्या में उपस्थित थीं।

-नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल

श्री महावीरजी फिल्म का जेम सिनेमा में हुआ प्रिमियर शो, लोगो ने सराहा फिल्मांकन को, शो रहा हाऊसफुल

जयपुर (विश्व परिवार)। दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा चांदनपुर में टीले से प्रकटित भगवान महावीर के अतिशय के सम्बन्ध में निर्मित फिल्म %श्री महावीरजी% का प्रिमियर शो रविवार को जेम सिनेमा में आयोजित हुआ। इस मौके पर दर्शकों ने फिल्म की कहानी को खूब सराहा। शो हाऊसफुल रहा।

प्रचार प्रसार संयोजक विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि जेम सिनेमा के मालिक सुधीर कासलीवाल एवं दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल द्वारा स्वागत उदबोधन के बाद अध्यक्ष सुधान्शु कासलीवाल एवं मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन के नेतृत्व में महावीर जी प्रबंधकारिणी कमेटी द्वारा भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। निर्माता जेके जैन कालाडेरा वाले ने फिल्म निर्माण पर प्रकाश डाला। निर्देशक शशांक जैन ने फिल्म की कहानी एवं शूटिंग की संक्षिप्त जानकारी दी। भगवान महावीर के गीत पर पूरा हॉल झूम उठा एवं महिला संगठनों की महिलाओं ने पचरंगा जैन ध्वज लेकर नाचते गाते खुशी जताई। इस मौके पर हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गुंजायमान हो उठा। मानद् मंत्री सुभाष चन्द जैन जौहरी ने जनता का धन्यवाद देते हुए सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन मनीष बैद ने किया। मुख्य प्रचार संयोजक सुरेश सबलावत ने बताया कि भगवान महावीर की मूंगावर्णी प्रतिमा किस प्रकार से श्री महावीरजी के चांदनगांव में भूगर्भ से प्रकटित हुई तथा भगवान के टीले से बाहर आने के बाद पूरे क्षेत्र में सुख समृद्धि संपन्नता होने लगी इस का बडी सुन्दरता के साथ इस फिल्म में चित्रण किया गया है। इस फिल्म में श्री महावीर भगवान के अतिशय के

साथ श्री महावीरजी कमेटी द्वारा श्री महावीरजी क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों एवं इन विकास कार्यों से आसपास के लोगों को जो लाभ मिला है उसका चित्रण किया गया है। उन्होंने बताया कि महावीर जी मंदिर भगवान महावीर का पूरे देश का सबसे बडा मंदिर है। यहा सभी धर्मों एवं जातियों के लोग भगवान महावीर को पूजते है। नया काम शुरू करने से पहले भगवान महावीर के मंदिर में ढोक लगाते हैं। प्रतिमा के अवतरण से वहां के निवासियों के जीवन स्तर में आये हुए बदलाव की प्रगति को दर्शाया गया है। फिल्म में दर्शाया गया है कि आजकल के युवा गांव एवं अपने पुश्तैनी व्यापार को छोड़कर के नाम मात्र के पैकेज के लिए शहर में बस जाते हैं। इसका कारण है कि गांव के बच्चों को कोई भी अपनी लड़की देना नहीं चाहता। लड़की भी गांव में नहीं जाना चाहती है, इसी व्यथा को इस फिल्म में फिल्माया गया है। एक लड़की विदेश में बहुत बड़ी मल्टी नेशनल कंपनी में अच्छे पैकेज पर कार्यरत होते हुए भी श्री महावीर जी क्षेत्र के लिए अपना सब कुछ छोड़कर श्री महावीर जी में विकास के कारण को आगे बढ़ाने में मदद करने लगी। **-विनोद जैन**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर मंगलवार 30 अप्रैल 2024

संक्षिप्त समाचार

भूतेश्वरनाथ भगवान के द्वार पहुँची दादी लखमा की पत्नी, विधिवत पूजा-अर्चना कर की सुख-समृद्धि की कामना

गरियाबंद(विश्व परिवार)। बस्तर लोकसभा प्रत्याशी दादी कवासी लखमा की पत्नी श्रीमती कवासी बुधरी आज गरियाबंद ज़िले में स्थित विश्व के सबसे बड़े शिवलिंग भगवान भूतेश्वर नाथ के दरबार में पूजा अर्चना करने पहुची थी।दोपहर 12 बजे पूजा अर्चना कर वे वापस लौट गई श्रीमती कवासी बुधरी ने बतलाया वे कई सालों से बाबा भूतेश्वरनाथ में पूजा अर्चना करने आते रही है,और भगवान भोलेनाथ यहाँ सभी की मनोकामना पुरी करते है। दादी कवासी लखमा भी यहाँ आ चुके है।ज्ञात हो कि दादी कवासी लखमा बस्तर में कांग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी है पहले चरण में बस्तर का चुनाव हो चुका है दादी लखमा अपने ख़ास अन्दाज़ और बेबाक़ बयान के लिए पूरे लोकसभा चुनाव के दौरान काफ़ी चर्चे में रहे।

दुष्कर्म के आरोपी को चौबीस घंटे में किए गिरफ्तार

गरियाबंद(विश्व परिवार)। दुष्कर्म करने के आरोपी को सिटी कोतवाली पुलिस द्वारा चौबीस घंटे में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।घटना के विषय में सिटी कोतवाली से मिली जानकारी के अनुसार 27 अप्रैल को प्रार्थी द्वारा स्थानीय सिटी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराया गया की उसकी नाबालिग लड़की को किसी व्यक्ति द्वारा बहलाफुसला कर भगा ले गया है।इस घटना की गंभीरता को देखते हुए घटना की जानकारी कोतवाली प्रभारी कृष्ण प्रसाद जांगड़े के द्वारा वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम कांबले को दिया गया।जिसे गंभीरता से लेते हुए जिले के पुलिस कप्तान उमनि/वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित तुकाराम काम्बले के दिशा-निर्देशन में तथा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जितेन्द्र कुमार चन्द्राकर एवं एसडीओपी गोपाल वैश्य के मार्गदर्शन में कोतवाली प्रभारी कृष्ण कुमार जांगड़े द्वारा कोतवाली सहायक प्रभारी गुणेश्वरी नरेकी,प्रधान आरक्षक राम कृष्ण साहू आरक्षक योगेश सिंग व महिला आरक्षक लीलेश्वरी ध्रुव की टीम बनाकर आरोपी की तलाश प्रारंभ किया गया,जिससे फिंगेश्वर थाना क्षेत्र के ग्राम पतोरी निवासी आरोपी केजुराम मारकंडे पिता शत्रुघ्न मारकंडे उम्र 27 को गिरफ्तार कर आरोपी के पास से नाबालिग लड़की को बरामद कर आरोप के खिलाफ धारा 363,366,376 (2)पाक्सो एक्ट कायम कर आरोपी को जेल भेजा गया।

नक्सलियों ने किया सरेंडर

सुकमा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के सुकमा इलाके में सक्रिय दो नक्सलियों ने पड़ोसी राज्य तेलंगाना में सरेंडर किया है। इनमें एक महिला नक्सली शामिल है। यहां भद्रादि कोत्तागुडम पुलिस के सामने दोनों नक्सलियों ने हथियार डाले हैं। ये दोनों नक्सली किस्टाराम एरिया कमेटी में पिछले 13 सालों से सक्रिय थे। छत्तीसगढ़ में एनकाउंटर का डर था इसलिए हिंसा का रास्त छोड़ा और मुख्यधारा में लौट आए हैं। मिली जानकारी के अनुसार नक्सली पोडियम इदुमैया उर्फ हरीश और उइके मुथ्यालक्का ये दोनों नेमलागुड़ा के रहने वाले थे। किस्टाराम एरिया कमेटी में सक्रिय थे। साल 2011 से नक्सल संगठन के साथ जुड़कर काम कर रहे थे। अलग-अलग घटनाओं में शामिल थे। पुलिस पार्टी को एंबुश में फंसाना। जवानों की रेकी करना। हत्या, आगजनी जैसी वारदातों में भी शामिल रहे हैं।

अवैध शराब बिक्री पर आबकारी विभाग की कार्यवाही जारी

गरियाबंद(विश्व परिवार)। आबकारी विभाग गरियाबबंद द्वारा ग्राम सोहागपुर के जंगल में लावारिश स्तिथि में भारी मात्रा में शराब बनाने का समान महुआ लाहन लगभग 200 किलोग्राम 30.0 लीटर हाथ भट्ठी कच्ची शराब लावारिश स्तिथि में जप्त किया गया उसके अतिरिक्त उसी ग्राम के एक अन्य व्यक्ति के मकान में दबिश देकर 04 लीटर हाथ भट्ठी कच्ची शराब जप्त कर आबकारी अधिनियम की धारा 34(1) ख के तहत प्रकरण कायम किया गया है। इस प्रकार चुनाव के मद्देनजर चुनाव में शराब के प्रभाव को कम करने के लिए देवभोग क्षेत्र में भी लगातार कार्यवाही की जा रही है।पिछले 15-20 वर्षो से बिक रहे अवैध ताड़ी (छीद रस) बेचने वालो के खिलाफ34(1) डी के 07 प्रकरण कायम किए गय है। इससे ताड़ी बिक्री में भी कमी आई है।ओडीशा से लाने वाले पाउच व अंग्रेजी शराब के विरुद्ध लगातार बॉर्डर में नाका लगाया जा रहा है और बेचने वालो के मकान में दबिश दी जा रही है जिससे अवैध शराब बिक्री में भी कमी आई है।

बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र के मतदान दल को मिला अंतिम प्रशिक्षण

अनुपस्थित मतदान कर्मियों को कारण बताओ नोटिस जारी

बेमेतरा(विश्व परिवार)। लोकसभा निर्वाचन- 2024 संसदीय क्षेत्र-7 दुर्ग अन्तर्गत ज़िले की तीनों विधानसभा क्षेत्र के मतदान दलों को निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण जिले के स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिन्दी माध्यम कन्या विद्यालय और पी.जी कॉलेज रूसा भवन में दिया जा रहा है। इसी क्रम में रविवार को दूसरे दिन विधानसभा क्षेत्र 69 बेमेतरा के निर्वाचन ड्यूटी में लगे पीठासीन अधिकारी सहित मतदान दल क्रमांक 1,2 और 3 मतदान दल के अधिकारी-कर्मचारियों को मास्टर ट्रेनरों ने अंतिम प्रशिक्षण दिया। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ टेकचंद अग्रवाल, उप जिला निर्वाचन अधिकारी गुड्डू लाल जगत, अपर कलेक्टर डॉ अनिल वाजपेई, सर्व एसडीएम व अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे। प्रशिक्षण के दूसरे दिन कलेक्टर एवं ज़िला निर्वाचन अधिकारी रणबीर शर्मा भी प्रशिक्षण केंद्र पहुंच कर प्रशिक्षण ले रहे मतदान दलों से रूबरू हुये और प्रत्येक कक्ष में जाकर निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरिके से चुनाव कराने के टिप्स दिए तथा मास्टर ट्रेनर द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण को देखा 7 कलेक्टर शर्मा ने कहा की मतदान दलों में नियुक्त सभी अधिकारी, कर्मचारी प्रशिक्षण कार्यक्रम में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे। मतदान दलों को मतदान कराने की प्रकिया, उनके अधिकार-कर्तव्य, मतदान संबंधी भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिए गये निर्देशों, मतदान संबंधी नियम और कानूनों आदि के बारे मे विस्तार से जानकारी दी जा रही है। कलेक्टर ने कहा की प्रशिक्षण में बताये जा रहे हर पहलू और बारीकियों को बेहद गंभीरता और संवेदनशीलता से लें। उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्य के सुचारू संचालन और अबाधित रूप से संपन्ना कराने के लिए प्रशिक्षण का विशेष महत्व होता है 7 कर्मचारी पूरी ईमानदारी और निष्ठा से ड्यूटी निभाते हुये अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें। ईवीएम के कंट्रोल यूनिट, बैलेट यूनिट और वीवीपैट का गहनता से प्रशिक्षण लें। ईवीएम से संबंधित जितनी अधिक जानकारी मतदान कर्मचारी लेंगे, पोलिंग बूथ पर मतदान के दिन उतनी ही आसानी होगी। कलेक्टर ने प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों से प्रशिक्षण में बताई गई बातों के संबंध में तथा ईवीएम एवं वीवीपैट के संबंध में जानकारी ली । जिलाधीश ने निर्वाचन कार्य के दौरान यदि कोई उदासीन और अपने कार्य में लापरवाही बरतता हैं या फिर नशे की हालत में रहता हैं ऐसे कर्मचारियों पर दण्डात्मक कार्यवाही करने के शख्त निर्देश दिए हैं। मास्टर ट्रेनरों सिलोचन साहू, ईश्वर साहू, हिरऊ राम ध्रुव, भीखुराम हिरवानी, हूपेन्द्र साहू, दीपचंद देवांगन, गंगाधर कुलकर्णी, संजय कुमार सेन, बालमुकुंद साहू, राजेश ठाकुर, विकास कुमार, अजय कुमार शर्मा, मुरारी सिंह भुवाल, अर्जुन कश्यप, प्रदीप विशाल, एलेन गुप्ता, गीरवर राजपूत, गजानंद शर्मा द्वारा प्रशिक्षण मे निर्वाचन की बारीकीयों के बारे में बताया 7 प्रशिक्षण में बताया गया कि सामग्री कोषालय से मतदान संबंधित आवश्य सामग्री, आवश्यक समान मिलान करने के बाद बूथ के लिए रवाना किया जाएगा।

अग्रसेन विद्यालय में ग्रीष्मकालीन समर कैम्प प्रारंभ

कोरबा(विश्व परिवार)। अग्रसेन विद्यालय में ग्रीष्मकालीन शिविर बच्चों के लिए लगाया गया है। कार्यक्रम का शुभारंभ माता सरस्वती व महाराजा अग्रसेन की पूजा अर्चना के साथ शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अग्रवाल सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल थे। अग्रसेन पब्लिक स्कुल के प्राचार्या शोभा सोनी ने अपने उदबोधन में कहा कि समर कैम्प का अयोजन विगत वर्षो से लगातार हो रहा है आज से इसका शुभारंभ हमारे स्कुल में हो रहा है। अग्रसेन शिक्षा समिति के अध्यक्ष सीए अखिलेश अग्रवाल ने अपने उदबोधन में कहा कि विद्यालय में पढाई साथ साथ अन्य प्रतिभाओं के लिए समर कैम्प का अयोजन किया गया है बच्चों इसमें काफी जोष के साथ हिस्सा लेते है मुख्य अतिथि अग्रवाल सभा अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल ने अपने उदबोधन में कहा कि ग्रामीयों की छुटटी हो गई है अपने व्यक्ति को निखाने के लिए समर कैम्प का अयोजन किया गया गया है खेल ही खेल मे हम अपनी कला को निखार सकते है और नई कला को हम सिख सकते है इसके लिए समार कैम्प एक अच्छा माध्यम बना सकता है । समर कैम्प में बच्चों को जुम्मा, सेल्फ डिफेंश, कलर आर्ट, कुकींग, मेहन्दी रंगोली, बेडमींटन, चेंस और अन्य प्रतिभा को सीखने का अवसर मिलेगा ।

मतदान अधिकारी, मतदाताओं से शालीनता पूर्वक वार्तालाप करें : कलेक्टर

847 पीठासीन व मतदान अधिकारियों का सेंट जोसेफ स्कूल में हुआ प्रशिक्षण

कोरिया(विश्व परिवार)। सेंट जोसेफ इंग्लिश मीडियम स्कूल बैकुंठपुर में 28 अप्रैल को 847 पीठासीन व मतदान अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। बता दें लोकसभा निर्वाचन 2024 के तहत कोरबा संसदीय सीट के लिए 7 मई को मतदान होना है। इसके पहले आज सेंट जोसेफ इंग्लिश मीडियम, बैकुंठपुर में दो दिवसीय पीठासीन अधिकारी, मतदान अधिकारी 1, 2 एवं 3 का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित की गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में आज 247 पीठासीन अधिकारी, 231 मतदान अधिकारी 1, 218 मतदान अधिकारी, 2 एवं 151 मतदान अधिकारी 3 का दो दिवसीय मतदान दल वार प्रशिक्षण दिया गया। कलेक्टर व जिला निर्वाचन अधिकारी विनय कुमार लंगेह ने परिक्षिणर्थियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि मतदान दिवस के दिन पीठासीन अधिकारियों सहित मतदान अधिकारियों की जिम्मेदारी महत्वपूर्ण होती है। ऐसे में मतदान अधिकारी बुजुर्ग, दिव्यांग व गर्भवती माताओ को प्राथमिकता के साथ मतदान केंद्र में वोट दिलवाएं। लंगेह ने कहा कि स्वतंत्र, निष्पक्ष व भयमुक्त निर्वाचन के लिए सभी सावधानी पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करें। उन्होंने कहा कि सभी मतदाताओं से सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करें, व्यवहार में किसी भी प्रकार की गुस्सा, क्रोध न दिखे और न ही किसी से करें। जिला पंचायत सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी ने परिक्षिणर्थियो से कहा कि मतदान समय सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक है। ऐसे में मतदान अधिकारी एक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वे मतदाताओं के नाम मिलाते समय सावधानी के साथ तेज गति के साथ कार्य संपन्न करें ताकि समय पर मतदान हो सके। निर्वाचन कार्यों से सम्बद्ध अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए बनाए गए सुविधा केंद्र में मतदान प्रक्रिया शुरु हो गई है।

बाल विवाह कानूनन अपराध

सेवा प्रदाताओं से अपील, विवाह में सेवा देने से पूर्व कर लें बालक-बालिका के आयु की जांच

बिलासपुर(विश्व परिवार)। जिले में बाल विवाह की रोकथाम के लिए जिला बाल संरक्षण अधिकारी ने सभी वैवाहिक पत्रिका प्रिंटर्स संचालक, टेंट-प्रदाता, शादी भवनों के प्रबंधक, कैटरर्स, बैंड वाले एवं डेकोरेटर्स से अपील की है कि वे सेवा देने से पूर्व वर की आयु 21 वर्ष एवं वधु की आयु 18 वर्ष पूर्ण होने की पुष्टि कर लें। वर-वधु के आयु से संबंधित दस्तावेजों की जांच के उपरांत ही अपनी सेवा प्रदान करें अन्यथा बाल विवाह प्रतिषेध (संशोधन) अधिनियम 2016 के अंतर्गत कार्यवाही की जाएगी। जिला बाल संरक्षण अधिकारी ने बताया कि प्राय: अक्षय तृतीया पर बाल विवाह की सूचना प्राप्त होती है। बाल विवाह केवल सामाजिक बुराई ही नही अपितु कानूनन अपराध भी जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास प्रभावित होता है तथा बच्चों में कुपोषण, शिशु-मृत्यु दर एवं मातृ-मृत्यु दर के साथ घरेलु हिंसा में वृद्धि होती है। बाल विवाह प्रतिषेध (संशोधन) अधिनियम 2016 अंतर्गत विवाह हेतु बालक हेतु न्यूनतम आयु 21 वर्ष एवं बालिका हेतु न्यूनतम आयु 18 वर्ष पूर्ण होनी चाहिए। बाल विवाह प्रतिषेध (संशोधन) अधिनियम 2016 की धारा 10 एवं 11 अंतर्गत जो कोई किसी बाल विवाह को संपन्न करेगा, संचालित करेगा या निर्दिष्ट करेगा, दुष्प्रेरित करेगा वह दो वर्ष के कठोर कारावास से और एक लाख रूपये तक के जुर्माने से दण्डित किया जाएगा।

नाबालिग से दुष्कर्म,दो आरोपी भेजे गये जेल

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के राजनांदगाव में दिमागी रूप कमजोर नाबालिग बालिका का अपहरण कर गैंगरेप करने के मामले में दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। बालिका जब गर्भवती हुई तब परिजनों को इसकी जानकारी मिली। परिजनों की शिकायत के बाद पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। घटना गैंदाटोला थाना क्षेत्र की है। मिली जानकारी के अनुसार पीड़िता नाबालिग बच्ची की मां ने 27 अप्रैल को थाना गैंदाटोला में शिकायत दर्ज कराई थी कि उसकी नाबालिग लड़की, जिसकी दिमागी हालत ठीक नहीं है उसका ईलाज चल रहा है। इसी माह नवरात्रि में जब उसकी लड़की का पेट बढ़ने लगा और दर्द होने लगा तब उसका चेकअप कराया गया। सोनोग्राफी में डाक्टर ने बच्ची को गर्भवती होना बताया। पीड़ित बच्ची से जब पूछताछ की गई तो पता चला कि माह अक्टूबर 2023 में अपनी दीदी के साथ खेत धान काटने गई थी। तभी गाँव का सौरभ कंवर, डोमन कंवर मोटर साइकिल से खेत के पास आए और पीड़िता का मुंह को दबाकर मोटर साइकिल में जबरन बैठाकर पास के पहाड़ी में ले गए। जहां पर आरोपियों ने उसके साथ बलात्कार किया और घटना के बारे में किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। आरोपियों ने इसके बाद भी पीड़िता के साथ कई बार बलात्कार किया। ईधर सोनोग्राफी के बाद पता चला कि पीड़िता के पेट में बच्चा खराब हो चुका तथा तथा पीड़िता की उम्र कम होने के कारण मां नहीं बन सकती थी। जिसके बाद परिजनों ने सहमती से बच्ची का गर्भपात करा दिया। मामले में पुलिस ने अपराध दर्ज कर सौरभ कंवर व डोमन कंवर के विरूद्ध धारा 363, 366(क), 376 (घ),506 भादवि एवम 4, 6 पाक्सो एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी मोहित गर्ग ने तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए। थाना गैंदाटोला पुलिस के द्वारा मामले में कार्रवाई करते हुए सौरभ उर्फ भूरू कंवर 20 वर्ष, डोमन कंवर 26 वर्ष निवासी ग्राम बेलरगोंदी थाना गैंदाटोला को पकड़ा गया। आरोपीयों को गिरफ्तार कर न्यायलय के समक्ष पेश किया गया, जहां से आरोपियों को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेजा गया है।

जब शहर की सड़कों पर कलेक्टर और एसपी ने चलाई साइकिल

सैकड़ों लोगों ने साइकिल रैली में लिया हिस्सा, दिया संदेश

बिलासपुर(विश्व परिवार)। रविवार की सुबह शहर के प्रमुख मार्गो का नजारा ही कुछ अलग था। जिले के कलेक्टर श्री अवनीश शरण और एसपी श्री रजनेश सिंह के साथ तमाम आला अधिकारियों ने मतदाता जागरूकता संदेश देने साइकिल चलाई। स्वीप साइकिल रैली में सैकड़ों की संख्या में लोगों ने हिस्सा लिया और लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व के लिए लोगों को जागरूक किया। इस स्वीप साइकिल रैली का आयोजन जिला प्रशासन के सहयोग से आईडीबीआई बैंक द्वारा किया गया। रैली आत्मानंद स्कूल प्रताप चौक से शुरू होकर देवकीनंदन चौक, कोतवाली चौक, गांधी चौक, शिव टाकिज चौक, पुराना बस स्टैंड, अग्रसेन चौक, सत्यम चौक, , अम्बेडकर चौक, और पुलिस पेट्रोल पंप से होते हुए स्व. लखीराम अग्रवाल ऑडिटोरियम में समाप्त हुई। रैली में नगर निगम आयुक्त श्री अमित कुमार, वनमंडलाधिकारी श्री सत्यदेव शर्मा, सीईओ जिला पंचायत श्री आर.पी.चौहान, आईडीबीआई बैंक के डीजीएम श्री अमिताभ बाजपेई, अधिकारी-कर्मचारी, विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, बाइकर्स कम्युनिटी बिलासपुर के सदस्य,एनसीसी, युवा मतदाता सहित अन्य लोगों ने भाग लेकर मतदाता जागरूकता संदेश दिया। कलेक्टर ने सभी को कार्यक्रम में मतदाता शपथ दिलाई। लोगों को मतदान के प्रति जागरूक करने रंग-बिरंगे गुब्बारे भी आसमान में छोड़े गए। रैली के बाद स्व. लखीराम अग्रवाल ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में कलेक्टर ने कहा कि मतदान का ये अधिकार हमें कठिन संघर्षों से मिला है, हमें इसका महत्व समझकर मतदान अवश्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में सभी के मत का समान महत्व है। हर एक वोट बेहद कीमती है इसका उपयोग हमे स्वयं कर दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने सभी से अनिवार्य रूप से मतदान करने की अपील की। एसपी श्री रजनेश सिंह ने कहा कि लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व में अपना मतदान कर सभी सहभागी बनें और लोकतंत्र को मजबूत बनाएं । निगम कमिश्नर और आईडीबीआई के डीजीएम अमिताभ वाजपेयी ने भी इस अवसर अपने संबोधन में मतदान का आह्वान किया। कार्यक्रम में अतिथियों स्मृति चिन्ह भेंट किया गया साथ ही स्वीप कार्यक्रम में सहभागी बने एनएसएस, स्काउट और स्कूली छात्रों को सम्मानित किया गया।

व्यापार समाचार

2050 तक कुल आबादी का 20प्रतिशत होंगे बुजुर्ग इसलिए वयस्क टीकाकरण समय की मांग

रायपुर। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 के अनुसार भारत में वर्ष 2036 तक 50 साल से ऊपर के लोगों की संख्या बढ़कर 40.4 करोड़ होने की उम्मीद है। वर्ष 2020 में यह संख्या 26 करोड़ थी। वर्ष 2050 तक हर पांच में से एक व्यक्ति 50 वर्ष से अधिक उम्र का होगा। ऐसे में भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को बढ़ती उम्र की इस आबादी की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार रहना होगा। बढ़ती उम्र के साथ आने वाली प्रमुख चुनौतियों में निमोनिया, इन्फ्लूएंजा और शिंगल्स जैसी संक्रामक बीमारियों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता है ये संक्रमण बुजुर्गों पर व्यापक शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दुष्प्रभाव डाल सकते हैं शिंगल्स मूलत: पुराने चिकनपॉक्स वायरस की पुन: सक्रियता से होने वाला दर्दनाक संक्रमण है। यह संक्रमण पोस्टहेरपेटिक न्यूराल्जिया नाम की एक दर्दनाक जटिलता का कारण भी बन सकता है। लाइफवर्थ हॉस्पिटल, रायपुर के एमडी एवं सीनियर कंसल्टेंट फिजिशियन डॉ. अरुण कुमार केडिया कहते हैं वैसे तो बचपन में होने वाले टीकाकरण से बीमारी की व्यापकता में काफी कमी आई है लेकिन वयस्कों के टीकाकरण के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। यह गलत धारणा है कि टीकाकरण केवल बच्चों के लिए है। 50 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों को शिंगल्स, न्यूमोकोकल डिजीज और इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारियों एवं उनकी गंभीर जटिलताओं से बचाने में टीकाकरण से बहुत लाभ हो सकता है। टीकाकरण द्वारा इन बीमारियों से बचाव संभव है। ये संक्रमण न केवल जीवन की गुणवत्ता पर दुष्प्रभाव डालते हैं बल्कि इनसे भारत के हेल्थकेयर सिस्टम पर भी बोझ पड़ता है हृदय रोग सांस की बीमारी और डायबिटीज जैसी पुरानी बीमारियों से पीड़ित उम्रदराज वयस्क संक्रामक रोगों के प्रति और भी अधिक संवेदनशील होते हैं।

CDRI निभा रहा है मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए निवेश बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका

नई दिल्ली। नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आज इंटरनेशनल कॉन्फेरेंस ऑन डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (ICDRI) की शुरुआत हुई। ICDRI, कोएलिशन फॉर डिजास्टर रेजिलिएंट इंफ्रास्ट्रक्चर (CDRI) का एक प्रमुख ईवेंट है। CDRI 2019 में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किया गया एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। ष्टष्ठक्रढ्ढ में वर्तमान में 46 सदस्य हैं। इस साल आयोजित हो रहे ICDRI 2024 का विषय 'इनवेस्ट टुडे फॉर ए मोर रेजिलिएंट टुमॉरो'है। ICDRI एक दो दिवसीय ईवेंट है। इस कार्यक्रम में आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के विकास में मदद करने के लिए सरकारों, वैश्विक इंफ्रास्ट्रक्चर समुदाय, बहुपक्षीय विकास बैंकों, निजी क्षेत्र और मीडिया को एक साथ लाने का प्रयास किया जाएगा। वर्चुअल रूप से इस ईवेंट का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया। उद्घाटन के मौके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जोर डालते हुए कहा कि आपदाओं के कारण बुनियादी ढांचे को होने वाले नुकसान का आंकड़ा डॉलर में पेश किया जाता है, लेकिन वास्तव में इसका असर आम लोगों और समुदायों पर पड़ता है।

बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस ने प्रिवे लॉन्च किया – एक अनूठा प्रोग्राम जो बेमिसाल कवरेज और उत्कृष्ट सेवा प्रदान करता है

पुणे। भारत की अग्रणी निजी सामान्य बीमा कंपनियों में से एक बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस ने आज प्रिवे को लॉन्च कर दिया। यह एक एक्सक्लूसिव कस्टमर इक्स्पीरीयंस प्रोग्राम है जो बेजोड़ क्वालिटी के साथ साथ ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा तक अपनी पहुंच प्रदान करता है। परंपरागत रूप से, भारत में पिछले कुछ सालों में बीमा का विस्तार करने का प्रयास ज्यादातर टियर 2/टियर 3 स्थानों और ग्रामीण बाजारो में केंद्रित रहा है, जिसमें मुख्य रूप से मध्यम, उच्च मध्यम वर्ग और ग्रामीण ग्राहक शामिल हैं। उपरोक्त सभी ग्राहक खंडों (customer segments) में बीमा पैठ बढ़ाने पर अपने मजबूत फोकस के अलावा, बजाज आलियांज जनरल इंश्योरेंस अब ग्राहकों के एक विशेष क्लास को अपनी सेवाएं देगा, जिन्हें आमतौर पर बढ़ी हुई कवरेज सीमा के साथ बीमा सोल्युशंस की आवश्यकता होती है। ऐसे समझदार ग्राहकों की वित्तीय और लाइफस्टाइल से जुड़ी प्राथमिकताओं के अनुरूप उनकी जरूरतों और सुरक्षा को पहचानते हुए, प्रिवे ट्रडिशनल बीमा प्रोडक्टस से कहीं आगे निकल जाता है। प्रिवे का हिस्सा बनकर, ग्राहकों को उनकी विशिष्ट और प्राथमिकता वाली बीमा सेवाओं की एक रेंज मिल जाती है, जिससे उनकी आवश्यकताओं को आसानी से पूरा किया जाता है। प्रिवे का हिस्सा बनने के लिए, ग्राहकों के पास उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार स्वास्थ्य, घर, मोटर, व्यक्तिगत दुर्घटना और साइबर, बीमा जैसे उत्पादों की एक श्रृंखला से चयन करने की सुविधा है।

इंडीजीन लिमिटेड का आईपीओ सोमवार, 06 मई, 2024 को खुलेगा

मुंबई। इंडेजीन लिमिटेड (कंपनी) ने सोमवार, 06 मई, 2024, 2024 को अपनी इनीशियल पब्लिक ऑफरिंग (ऑफर) खोलने का प्रस्ताव रखा है। बोली/प्रस्ताव समापन तिथि बुधवार, 08 मई, 2024 होगी। एंकर निवेशक बोली की तारीख बोली/प्रस्ताव खुलने की तारीख से एक कार्य दिवस पहले है, यानी शुक्रवार, 03 मई, 2024। ऑफर का प्राइस बैंड रुपए 430 प्रति इक्विटी शेयर से रुपए 452 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। बोली न्यूनतम 33 इक्विटी शेयरों के लिए और उसके बाद 33 इक्विटी शेयरों के गुणकों में लगाई जा सकती है। इस ऑफर में 7,600 मिलियन तक के इक्विटी शेयरों का एक फ्रेश इश्यू (फ्रेश इश्यू) और 23,932,732 इक्विटी शेयरों (ऑफर किए गए शेयर) की बिक्री का प्रस्ताव शामिल है, जिसमें बेचने वाले धारक मनीष गुप्ता द्वारा 1,118,596 इक्विटी शेयर, डॉ. राजेश भास्करन नायर द्वारा 3,233,818 इक्विटी शेयर, अनीता नायर द्वारा 1,151,454 इक्विटी शेयर (मनीष गुप्ता और डॉ. राजेश भास्करन नायर के साथ, इंडीविजुअल सेलिंग होल्डर), ग्रुप लाइफ स्प्रिंग के भागीदार के रूप विडा ट्रस्टीज प्राइवेट लिमिटेड (फ्रि ट्री ट्रस्ट के ट्रस्टी) द्वारा 3,600,000 तक इक्विटी शेयर, बीपीसी जेनेसिस फंड ढ्ढ एसपीवी लिमिटेड द्वारा 2,657,687 इक्विटी शेयर, बीपीसी जेनेसिस फंड आईए एसपीवी, लिमिटेड द्वारा 1,378,527 इक्विटी शेयर और सीए डॉन इन्वेस्टमेंट्स द्वारा 10,792,650 इक्विटी शेयर हैं।

जेक फ्रेजर-मैकगर्क स्वाभाविक खिलाड़ी हैं और उनके हाथ की गति बहुत अच्छी है: डीसी कोच आमरे

नई दिल्ली(एजेंसी)। अगर कोई युवा बल्लेबाज है जिसने आईपीएल 2024 में क्रिकेट प्रशंसकों का ध्यान खींचा है, तो वह निस्संदेह जेक फ्रेजर-मैकगर्क हैं। हाई बैकलिफ्ट, स्थिर बेस, न्यूनतम फुटवर्क और अद्भुत बैट-स्विंग के साथ, फ्रेजर-मैकगर्क ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ 311.11 के स्ट्राइक रेट से 11 चौकों और छह छक्कों की मदद से 27 गेंदों में सनसनीखेज 84 रन बनाकर इन सभी गुणों को एक बार फिर दिखाया। फ्रेज़र-मैकगर्क ने मिड-विकेट और मिड-ऑन के बीच के अंतराल में ल्यूक वुड की गेंद पर चौका लेने के लिए अपनी कलाइयों से मारना शुरू कर दिया। अपने स्थिर फ्रेम और सुंदर कलाई की कला के साथ, फ्रेजर-मैकगर्क ने शुरुआती ओवर में 19 रन लेने के लिए दो और चौके और एक छक्का लगाया। उन्होंने धीमी गेंद को लॉन्ग-ऑन पर छह रन के लिए भेजकर बुमराह का स्वागत किया और फ्री-हिट गेंद पर चार रन के लिए ड्राइव किया। दूसरे ओवर में 18 रन लेने के लिए फ्रेजर-मैकगर्क ने बुमराह को चौका लगाकर ओवर खत्म किया। उन्होंने नुवान तुषारा पर तीन चौके लगाए, इसके बाद पीयूष चावला की गेंद पर डीप मिडविकेट पर स्लॉग-स्वीप करके 15 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। चावला पर एक और चौका लगाने के बाद, फ्रेजर-मैकगर्क ने हार्दिक पंड्या को दो चौके और इतने ही छक्के लगाकर पांचवें ओवर में 20 रन बटोरे, जिसमें मिड ऑफ के ऊपर से इनसाइड-आउट लॉफ्ट सबसे खास रहा। हां, उसे मौका पाने से पहले चार-पांच मैच तक इंतजार करना पड़ा। लेकिन जब हम उसे नेट्स में देख रहे थे, तब भी उसके पास कुछ अलग था, वह एक्स-फैक्टर। यहां भी, उसने सिर्फ मैच की शुरुआत की और इसकी वजह से पारी के छह ओवर के बाद हमारा स्कोर बिना किसी नुकसान के 92 रन था। वह स्वाभाविक है। यदि आप उसका सेट-अप देखें, तो वह एक स्थिर आधार में विश्वास करता है। और उसके हाथ की गति उत्कृष्ट है। और जब आप पावरप्ले में बल्लेबाजी कर रहे होते हैं, तो आपके पास लेग-साइड पर केवल एक क्षेत्ररक्षक होता है। तो वह है हिट करने के लिए एक अच्छा क्षेत्र; यहां तक कि एक गलत हिट भी आपको एक बॉउंड्री दिला सकती है। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में डीसी के सहायक कोच आमरे ने कहा, लेकिन अगर आप इस मैच को देखें, तो उन्होंने स्मार्ट क्रिकेट खेला। जब गेंदबाज वाइड गेंद फेंकते थे, तो उन्होंने ऑफ साइड पर भी कुछ छक्के मारे।

स्विगी को झटका! 187 रुपए की आइसक्रीम डिलीवर ना करने लगा 5 हजार का फटका

नई दिल्ली(एजेंसी)। फूड डिलिवरी प्लेटफॉर्म स्विगी को आइसक्रीम की डिलीवरी ना करने पर 5 हजार रुपये का जुर्माना लगा है। दरअसल, कंज्यूमर कोर्ट ने स्विगी को ऑर्डर दिया है कि वह 3,000 रुपये जुर्माना और 2,000 रुपये कानूनी फीस के रूप में वापस में कस्टमर को वापस करे। जानकारी के अनुसार, कस्टमर ने जनवरी 2023 में स्विगी ऐप का इस्तेमाल करते हुए, एक आईसक्रीम का ऑर्डर किया। इस आइसक्रीम का नाम ह्वह्लह्ल4 ष्टद्गड्डह्लद्ध ड्ड4 ष्टद्धशष्श्चद्यड्डह्लद्ग था और इसकी कीमत 187 रुपये बताई है। कस्टमर ने बताया कि उसको आइसक्रीम डिलिवर नहीं हुई और ऐप पर डिलिवर्ड का स्टेटस आने लगा। शिकायत के मुताबिक, डिलीवरी एजेंट ने आईसक्रीम शॉप से आईसक्रीम को पिकअप तो किया, लेकिन उसे डिलीवर नहीं किया। हालांकि ऐप पर बिना डिलीवरी किए डिलीवर्ड का स्टेटस आने लगा। इस मामले को शिकायतकर्ता ने स्विगी के शेयर किया और ऐप ने इस पर कोई रिफंड प्रोवाइड नहीं कराया। इसके बाद शिकायतकर्ता कंज्यूमर कोर्ट पहुंचीं। स्विगी ने बताया कि यह सिर्फ कस्टमर और रेस्टोरेंट के बीच का मामला है। साथ ही उसके डिलिवरी एजेंट की तथाकथित गलती पर स्विगी को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। कंपनी ने कहा कि वह इसकी जांच नहीं कर सकते है कि ऑर्डर डिलिवर हुआ है या नहीं, खासकर तब जब ऐप पर डिलीवरी स्टेटस दिखाया है।

सैमसन, जुरेल की नाबाद शतकीय साझेदारी, आरआर ने एलएसजी को सात विकेट से हराया

लखनऊ(एजेंसी)। कप्तान संजू सैमसन की 33 गेंदों में नाबाद 71 रन और ध्रुव जुरेल के पहले आईपीएल अर्धशतक (34 गेंद में नाबाद 52 रन) की मदद से राजस्थान रॉयल्स ने शनिवार को यहां लखनऊ सुपर जायंट्स को सात विकेट से हरा दिया। राजस्थान ने 197 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए एक समय 60 के स्कोर पर तीन गेंदों में दो विकेट गंवा दिये थे। दूसरा विकेट सातवें ओवर की पहली गेंद पर गिरा था। नवें ओवर में 78 के स्कोर पर जब तीसरा विकेट गिरा तो राजस्थान के सामने कुछ मुश्किलें दिखने लगीं। लेकिन सैमसन ने एक और शानदार पारी खेली। उन्होंने सात चौके और चार छक्के लगाए। जुरेल ने भी कप्तान का अंत तक साथ दिया। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 62 गेंदों में 121 रनों की अविजित साझेदारी की। इससे पहले टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरे एलएसजी के कप्तान केएल राहुल ने 48 गेंदों में 76 रन बनाए और दीपक हुडा ने 31 गेंदों में 50 रन बनाकर घरेलू टीम का स्कोर 196/5 पर पहुंचाया। जवाब में राजस्थान ने 19 ओवर में 199/3 बनाकर मैच जीत लिया। इस जीत के साथ, टेबल टॉपर राजस्थान रॉयल्स के नौ मैचों में आठ जीत से 16 अंक हो गए हैं। एलएसजी 10 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। कोलकाता नाइट राइडर्स (दूसरे), सनराइजर्स हैदराबाद (तीसरे) और दिल्ली कैपिटल्स (5वें) के भी 10-10 अंक हैं।

गुडनाइट सर्वेक्षण में हुआ खुलासा – मच्छरों के कारण होने वाली नींद की गड़बड़ी से भारत की आधी से अधिक उत्पादकता पर बुरा असर

मुंबई– देश की आधे से अधिक (58 प्रतिशत) उत्पादकता पर बुरा असर पड़ रहा है, क्योंकि मच्छरों के कारण नींद में खलल पड़ने के कारण लोग तनावग्रस्त/थका हुआ महसूस करते हैं। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) के भारत के अग्रणी घरेलू कीटनाशक ब्रांड गुडनाइट द्वारा जारी एक सर्वेक्षण रिपोर्ट से महत्वपूर्ण रहस्य सामने आया है। 'वन मस्कीटो, काउंटलेस थ्रेट्स' टाइटल के साथ यह देशव्यापी सर्वे गुडनाइट द्वारा शुरू किया गया था, और बाजार अनुसंधान फर्म ल्वनळवअ द्वारा आयोजित किया गया था। यह सर्वे जनता के रुख की जांच करता है, और मच्छर जनित बीमारियों के खतरों का आकलन करता है। सर्वेक्षण रिपोर्ट में भारत के चार क्षेत्रों – उत्तर (मध्य क्षेत्र के राज्यों सहित), दक्षिण, पश्चिम और पूर्व के उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। गुडनाइट रिपोर्ट के अनुसार 62 प्रतिशत पुरुषों और 53 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि मच्छरों के कारण नींद में खलल की वजह से उनकी उत्पादकता प्रभावित हो रही है। यह विशेष रूप से भारत के हालिया आर्थिक उछाल के संदर्भ में चिंताजनक है, जहां एक स्वस्थ कार्यबल को सर्वोपरि माना जाता है। उद्योग रिपोर्टों के अनुसार, अकेले मलेरिया जैसी मच्छर जनित बीमारियों से भारत का आर्थिक बोझ लगभग 16000 करोड़ रुपए है। विभिन्न अनुमानों के अनुसार, लगभग 75 प्रतिशत आर्थिक बोझ भारतीयों की कमाई के नुकसान और शेष उपचार खर्चों के कारण पड़ता है।

भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार, पश्चिम क्षेत्र जिसमें महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश जैसे राज्य शामिल हैं, सबसे अधिक प्रभावित हुआ, इस क्षेत्र के 67त्न लोगों को लगता है कि मच्छरों के कारण नींद में खलल के कारण उनकी उत्पादकता प्रभावित हो रही है। तमिलनाडु, तेलंगाना, केरल और कर्नाटक जैसे राज्यों वाला दक्षिणी भारत 57त्न लोगों के साथ दूसरे स्थान पर है, इसके बाद उत्तरी भारत (पंजाब, दिल्ली, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश) 56त्न और पूर्वी क्षेत्र (उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम) 49त्न पर। गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड (जीसीपीएल) के चीफ मार्केटिंग ऑफिसर – इंडिया, अश्विन मूर्ति कहते हैं, ''गुडनाइट की 'वन मस्कीटो, काउंटलेस थ्रेट्स' टाइटल वाली राष्ट्रव्यापी सर्वेक्षण रिपोर्ट दरअसल जनता के रवैये पर प्रकाश डालती है और मच्छर जनित बीमारियों से जुड़े जोखिमों का मूल्यांकन करती है। ऐसी पहलों के माध्यम से, हमारा लक्ष्य भारत में मच्छरों की समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाना, परिवारों को कार्रवाई करने में सक्षम बनाना और देश को किफायती लेकिन नवीन समाधान प्रदान करना है।

भारत में प्रतिवर्ष 40 मिलियन से अधिक नागरिक मलेरिया, डेंगू जैसी मच्छर जनित बीमारियों से प्रभावित होते हैं। बीमारी, स्वास्थ्य देखभाल खर्च और कम उत्पादकता के कारण बड़ी मात्रा में आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। मच्छर जनित बीमारियों के कारण लोग अपने कामकाज पर नहीं जा पाते, साथ ही स्कूल, सामाजिक और व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं में भी उनकी अनुपस्थिति रहती है। जबकि देश की अर्थव्यवस्था की उत्पादकता बनाए रखने और जीडीपी स्कोर को टिके रखने के लिए, ज़मीनी स्तर पर एक स्थिर और स्वस्थ कार्यबल की आवश्यकता है। इसलिए मच्छर जनित बीमारियों की समस्या को दूर करने के लिए एक व्यावहारिक और प्रभावशाली तरीका अपनाना होगा।'' गुडनाइट सर्वेक्षण से एक और उल्लेखनीय जानकारी यह मिली है कि मच्छर के कारण लोग अच्छी नींद नहीं ले पाते हैं। पूरे भारत में, औसतन हर दो में से एक वयस्क (50 प्रतिशत) ने मच्छरों को अपनी नींद में खलल का मुख्य कारण माना है। दिलचस्प बात यह है कि पश्चिम भारत के लोग इस कथन से सबसे अधिक सहमत हैं (56 प्रतिशत)।

उबेर कप: युवा भारतीय महिला टीम ने क्वार्टरफाइनल में जगह सुनिश्चित की

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय महिला टीम ने रविवार को चीन के चेंगदू में अपने ग्रुप ए मुकाबले में सिंगापुर पर 4-1 से आसान जीत के साथ बीडब्ल्यूएफ थॉमस और उबेर कप 2024 के क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की कर ली। युवा टीम, जिसने अपने ग्रुप ओपनर में कनाडा को 4-1 से हराया था, पहले एकल में येओ जिया मिन द्वारा अश्मिता चालिहा को 21-15, 21-18 से हराने के बाद वापस आई। राष्ट्रीय चैंपियन प्रिया कोनजेंगबाम और श्रुति मिश्रा ने युगल मुकाबले में जिओ एन हेंग और यू जिया जिन के खिलाफ 21-15, 21-16 से जीत दर्ज कर बराबरी हासिल की, इसके बाद इशरानी बरुआ ने इंसिइरा खान को सिर्फ 31 मिनट में 21-13, 21-16 से हराकर एशियाई चैंपियंस को बढ़त दिलाई। इसके बाद पूर्व जूनियर राष्ट्रीय चैंपियन सिमरन सिंघी और रितिका ठाकर ने यी टिंग एल्सा लाई और मिशेल ज़ान पर 21-8, 21-11 की शानदार जीत के साथ भारत के लिए मुकाबला समाप्त किया। इसके बाद अनमोल खरब ने तीसरे और अंतिम एकल में ली शिन यी मेगन पर 21-15, 21-13 से जीत के साथ अपना अजेय रिकॉर्ड बरकरार रखा।

फिटजी के छात्रों ने जेईई मेन 2024 में ऑल इंडिया रैंक 3, 13 और 16 के साथ हासिल की शानदार सफलता

भिलाई । नेशनल टेस्टिंग एजेन्सी ने जॉइंट एंट्रेन्स एक्ज़ाम मेन 2024 के परिणामों की घोषणा कर दी है। जेईई मेल का आयोजन 2 सत्रों में हुआ। पहले सत्र 28 जनवरी 2024 से 1 फरवरी 2024 के बीच हुआ और दूसरा सत्र 4 अप्रैल, 5 अप्रैल, 6 अप्रैल, 8 अप्रैल और 9 अप्रैल 2024 को हुआ। दोनों सत्रों में सर्वश्रेष्ठ दो एनटीए स्कोर्स के अधार पर उम्मीदवारों की रैंकिंग जारी की गई है। एनटीए द्वारा घोषित जेईई मेन 2024 के परिणामों के साथ इंजीनियरिंग एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भारत के प्रमुख संस्थान फिटजी अपने छात्रों की शानदार सफलता का जश्न मनाने के लिए तैयार है।

आर एल त्रिखा, डायरेक्टर,

फिटजी ग्रुप ने कहा यह वास्तव में फिटजी के लिए गर्व का समय है। हम अपने छात्रों के परफोर्मेन्स को लेकर उत्सुक हैं तथा छात्रों, उनके अभिभावकों एवं फिटजी के फैकल्टी और स्टाफ को बधाई देते हैं। यह उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण का ही परिणाम है। हमारे देश में सैकण्डरी एजुकेशन छात्रों के एनालिटिकल स्किल्स को बेहतर बनाने में सक्षम नहीं है, यही कारण है कि स्कूल में अच्छा परफोर्मेन्स देने वाले छात्र अक्सर प्रतियोगी परीक्षा में पिछड़ जाते हैं। इसलिए छात्रों में एनालिटिकल क्षमता को विकसित करना ज़रूरी है, फिटजी कुछ ऐसा ही करता है। हम छात्रों की अवधारणात्मक सूझ-बूझ पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और उनके आईक्यू एवं एनालिटिक कौशल तथा समस्याओं के समाधान की क्षमता में सक्षम बनाते हैं। जेईई में फिटजी के छात्रों की सफलता उनके पढ़ाने के तरीकों की प्रभाविता की पुष्टि करती हैं अब जेईई अडवान्स्ड अगली उपलब्धि है और हम अपने छात्रों को जेईई अडवान्स्ड में सफलता के लिए शुभकामनाएं देते हैं। आरव भट्ट, एआईआर 3, जेईई मेन 2024 ने कहा जेईई मेन 2023 में मैंने जो स्कोर हासिल किया है, उसे लेकर मैं बेहद उत्सुक हूं। इस लक्ष्य के लिए मैंने कड़ी मेहनत की है। मेरे परिणाम का श्रेय फिटजी के कोचिंग के तरीकों को जाता है। फिटजी की विशेषज्ञ फैकल्टी ने मुझे अवधारणाओं को समझने में मदद की, हर बार मेरे सभी सवालों को हल किया। अब मैं नए फोकस के साथ जेईई अडवान्स्ड की तैयारी करूंगा।'

श्रियशस मोहन कल्लुरी, एआईआर 13, जेईई मेन 2024 ने कहा यह मेरे लिए सपना सच होने की तरह है। हर छात्र जेईई मेन में बेहतर रैंक पाने के लिए सर्वश्रेष्ठ कोशिश करता है। मैं फिटजी की फैकल्टी और उनके पढ़ाने के तरीकों के लिए आभारी हूं। अब मैंने जेईई अडवान्स्ड क्रैक करने का लक्ष्य रखा है और नए जोश के साथ परीक्षा दूंगा।

अपनी ईमानदारी और समर्पण के चलते फिटजी साल दर साल अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल कर रहा है। फिटजी सच्चाई, पारदर्शिता और प्रतिबद्धता के सिद्धान्तों पर कार्यरत है। इस साल एक बार फिर से फिटजी ने जेईई मेन 2024 में शानदार परिणाम हासिल किए हैं। फिटजी के ऑल क्लासरूम प्रोग्रामों (क्लासरूम प्रोग्राम, नॉन-क्लासरूम प्रोग्राम) से छात्रों ने जेईई मेन में एआईआर 1, एआईआर 3, एआईआर 13, एआईआर 16 के साथ उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त किए हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dvpnews.in
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, मंगलवार 30 अप्रैल 2024

पूर्व आईएएस अनिल टुटेजा की रिमांड 6 दिन बढ़ी

रायपुर (आरएनएस)। शराब घोटाला मामले में पूर्व आईएएस अनिल टुटेजा की रिमांड 6 दिन के लिए और बढ़ा दी गई है। अब 4 मई को ईडी टुटेजा को फिर कोर्ट में पेश करेगी। बता दें कि रिमांड खत्म होने पर ईडी ने टुटेजा को सोमवार को फिर से विशेष कोर्ट में पेश किया। जहां ईडी ने अनिल टुटेजा को फिश्र से छह दिनों की रिमांड मांगी। इस पर टुटेजा के वकील ने मांग को अनावश्यक बताया। बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि शराब स्कैम से संबंधित कुछ भी पूछताछ नहीं हुई। दिनभर में एकात घंटे ही पूछताछ हुई है। दोनों पक्षों को सुनने के लिए न्यायालय ने टुटेजा को 6 दिन के लिए फिर से ईडी को सौंप दिया है।

संक्षिप्त समाचार

द्वादश वर्षीय जैन स्वाध्याय पाठ्यक्रम की परीक्षा संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। आचार्य भगवान श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के परम शिष्य मुनि पुंगव श्री 108 सुधासागर जी महाराज के आशीर्वाद से श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर द्वारा संचालित द्वादशवर्षीय जैन स्वाध्याय पाठ्यक्रम की परीक्षा संपूर्ण देश में 227 केंद्रों के साथ रायपुर के मालवीय रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर बड़ा मंदिर जी में सफलता पूर्वक आयोजित की गई। परीक्षा में महिला एवं पुरुष परीक्षार्थियों द्वारा प्रथम वर्ष से लेकर षष्ठम वर्ष तक की परीक्षा दी गई। केंद्र एवं परीक्षा के संयोजक श्री सौरभ जैन शास्त्री द्वारा परीक्षा का सफल संचालन किया गया एवं उनके द्वारा ये बताया गया की रायपुर के परीक्षा केंद्र में रायपुर के साथ साथ राजिम, तिल्दा समेत कई स्थानों से परीक्षार्थियों ने सहभागिता की। परीक्षा के संपन्न होने के बाद परीक्षार्थियों द्वारा संयोजक महोदय का सम्मान किया गया।

अटल आवास में रहने वाले बच्चों को कॉपी, पेन मिठाई वितरण

धमतरी (विश्व परिवार)। कामाख्या धर्मादा ट्रस्ट भारतवर्ष के तत्वाधान में आज रुद्री रोड कैलाशपति, सिद्धिविनायक के बीच में अटल आवास में रहने वाले बच्चों को परम पूज्य गुरुदेव श्री संकर्षण शरण जी के वैवाहिक वर्षगांठ के उपलक्ष्य में जिलाध्यक्ष श्रीमति कमलेश गुप्ता जी के द्वारा पौष्टिक आहार, कॉपी पेन और मिठाई वितरण किया गया। बच्चों से प्रश्न पूछ कर सही उत्तर देने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया। अध्यात्म से दूर हो रहे छोटे-छोटे बच्चों को हनुमान चालीसा का पाठ करना सिखाया गया, शिक्षा के साथ संस्कार जरूरी है, और यदि यह संस्कार शुरू से बच्चों में डाला जाए तो आज युवा कभी अपने मार्ग में भटकेंगे नहीं। इस कार्य में वृंदावन गुप्ता, राकेश गुप्ता, श्रीमती प्रजापति, सुनैना मिश्रा, श्रीमति सरोज तिवारी, वाचा मजूमदार, बसंती शर्मा, रेणु, अनिता पांडे, पूनम तिवारी सहित ट्रस्ट के समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे।

वक्ता मंच ने कबिता बिश्वास शर्मा का किया सशक्त नारी अवार्ड से सम्मानित

प्रदेश स्तरीय सशक्त नारी सम्मान समारोह

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ प्रदेश की प्रतिष्ठित सामाजिक व साहित्यिक संस्था वक्ता मंच द्वारा आज सशक्त नारी अवार्ड वितरण समारोह के माध्यम से राजधानी व आसपास की 100 महिलाओं का सम्मान किया गया है। विविध क्षेत्रों में ख्याति बटोरने वाली एनआईटी की शिक्षिका कबिता विश्वास शर्मा को सशक्त नारी अवार्ड से सम्मानित किया गया। महिलाओं का चयन शिक्षा, खेल, पत्रकारिता, साहित्य, राजनीति, अभिनय, संगीत, कला, विज्ञान, योग, चिकित्सा, समाज सेवा सहित विविध क्षेत्रों से किया गया है। वक्ता मंच द्वारा विगत 13 वर्षों से प्रतिवर्ष महिला सम्मान का कार्यकम आयोजित किया जाता रहा है। आज इस आयोजन के माध्यम से समाज व प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र में कामयाबी के झंडे गाड़ने वाली महिलाओं को सम्मानित करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। हम जानते है कि आज देश व प्रदेश में कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं बचा है जहां महिलायें नहीं पहुंची हो। आज के दौर में महिलायें नई चुनौतियों से जूझती हुई जोश व उमंग के साथ सफलता के नये अध्याय लिख रही है। अपने-अपने क्षेत्र में सफल महिलाओं के संघर्ष व हौसलों को सलाम करने के लिये ही वक्ता मंच द्वारा प्रत्तिवर्ष इस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर कुछ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों भी रखी गई है। संघर्ष से सफलता तक शीर्षक से परिचर्चा भी रखी गई है। जिसमें महिलायें अपनी सफलता के दौर व अनुभवों को शेयर करेगी।

गर्मियों के मौसम में यात्रियों को कंफर्म बर्थ की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु समर स्पेशल ट्रेनों का परिचालन

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय रेल यात्रियों को सुविधाजनक और आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी संदर्भ में ग्रीष्म ऋतु में ट्रेनों में यात्रियों की होने वाली अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुये उन्हें कंफर्म बर्थ के साथ यात्रा सुविधा उपलब्ध कराने एवं उनके सुगम और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने हेतु दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा अनेकों प्रयास किए गए हैं। विभिन्न दिशाओं के लिए समर स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। इन गाड़ियों में पीक सीजन में भी यात्रियों को कंफर्म बर्थ की सुविधा मिल रही है जिससे उनको सुगम व आरामदायक यात्रा का आनंद मिल रहा है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से चलने/गुजरने वाली समर स्पेशल ट्रेनें इस प्रकार है-

समर स्पेशल ट्रेन- 08475/08476 पुरी-निज़ामुद्दीन-पुरी साप्ताहिक समर स्पेशल 10 फेरों के लिए-08475 पुरी-निज़ामुद्दीन, पुरी से 19 अप्रैल से 28 जून' 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को तथा 08476 निज़ामुद्दीन-पुरी, निज़ामुद्दीन से 20 अप्रैल से 29 जून' 2024 तक प्रत्येक शनिवार को। 08793/08794 गोंदिया-पटना-गोंदिया साप्ताहिक समर स्पेशल 03 फेरों के लिए-08793 गोंदिया-पटना, गोंदिया से 10 मई से 24 मई 2024 तक प्रत्येक शुक्रवार को तथा 08794 पटना-गोंदिया, पटना से 11 मई से 25 मई 2024 तक प्रत्येक शनिवार को। 08795/08796 गोंदिया-छपरा-गोंदिया साप्ताहिक समर स्पेशल 03 फेरों के लिए-08795 गोंदिया-छपरा, गोंदिया से 06 मई से 20 मई 2024 तक प्रत्येक सोमवार को तथा 08796 छपरा-गोंदिया, छपरा से 07 मई से 21 मई 2024 तक प्रत्येक मंगलवार को। 01701/01702 जबलपुर-दुर्ग-जबलपुर साप्ताहिक समर स्पेशल 09 फेरों के लिए-01701 जबलपुर-दुर्ग, जबलपुर से 22 अप्रैल से 17 जून' 2024 तक प्रत्येक सोमवार को तथा 01702 दुर्ग-जबलपुर, दुर्ग से 23 अप्रैल से 18 जून' 2024 तक प्रत्येक मंगलवार को। 08471/08472 पुरी-उधना-पुरी द्वि-साप्ताहिक समर स्पेशल 17 फेरों के लिए-08471 पुरी-उधना, पुरी से 25 अप्रैल से 27 जून 2024 तक प्रत्येक सोमवार व गुरुवार को तथा 08472 उधना-पुरी, उधना से 26 अप्रैल से 28 जून 2024 तक प्रत्येक मंगलवार व शुक्रवार को। 08291/08292 बिलासपुर-यशवंतपुर-बिलासपुर द्वि-साप्ताहिक समर स्पेशल 09 फेरों के लिए-08291 बिलासपुर-यशवंतपुर, बिलासपुर से दिनांक 30 अप्रैल से 28 मई 2024 तक प्रत्येक मंगलवार व शनिवार को तथा 08292 यशवंतपुर-बिलासपुर, यशवंतपुर से दिनांक 02 मई से 30 मई 2024 तक प्रत्येक गुरुवार व सोमवार को।

गर्मियों के मौसम में यात्रियों के लिए सुगम और आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने किए गए हैं अनेक प्रयास

भीड़भाड़ प्रबंधन- मंडल के सभी प्रमुख और महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ के नियंत्रण की व्यापक व्यवस्था की गई है। भीड़भाड़ को व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने के लिए सभी गतिविधियों की निगरानी के लिए स्टेशनों पर पर्यवेक्षक तैनात हैं। आवश्यकतानुसार सामान्य श्रेणी के डिब्बों में प्रवेश के लिए कतार प्रणाली सुनिश्चित करने आरपीएफ व टिकट चेकिंग कर्मियों की तैनाती की गई है। भीड़भाड़ वाली जगहों पर कड़ी नजर रखने और यात्रियों को वास्तविक समय पर सहायता प्रदान करने के लिए सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष में कुशल आरपीएफ कर्मचारी तैनात किए गए हैं। ट्रेनों में भारी भीड़ के दौरान भगदड़ जैसी स्थिति से बचने, भीड़ को सुचारू रूप से नियंत्रित करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल और टिकट चेकिंग कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है।

पर्याप्त पानी की उपलब्धता

ग्रीष्मकालीन मौसम के दौरान पड़ रही भीषण गर्मी के मद्देनजर पानी की अधिक आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए रायपुर रेल मंडल रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों को स्वच्छ व शीतल पेयजल उपलब्ध कराने के लिए पर्याप्त मात्रा में वाटर कूलर व वाटर नल की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। यात्रा के दौरान स्टेशन में यात्रियों को पानी के लिए परेशान न होना पड़े इसका विशेष ध्यान रखा जा रहा है। स्टेशन पर यात्रियों को शीतल जल उपलब्ध कराकर पेयजल की अतिरिक्त आवश्यकता की पूर्ति की जा रही है।

'हेड एवं नेक कैंसर माह'- एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल में 45 वर्षीय व्यक्ति को मिला नया जीवन

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रति वर्ष अप्रैल महीने को 'हेड एवं नेक कैंसर माह' के रूप में मनाया जाता है। इस महीने का उद्देश्य हेड एवं नेक में होने वाले कैंसर के बारे में जागरूकता फैलाना और सही इलाज के लिए काम करना है। कैंसर मौत का एक बड़ा कारण है। इस महीने का महत्व यह भी है कि हम सही समय पर हेड और नेक कैंसर का पता लगा सके और सही समय पर उपचार करवा सकेएवं इस बारे में जागरूकता बढ़ाएं।

ऐसा ही एक दुर्ग ज़िले के रहने वाले 45 साल के चेलाराम जी, मुख कैंसर की दुर्लभ बीमारी से जूझ रहे थे। चेलाराम जी की बीमारी कुछ महीने पहले शुरू हुई, जिसमें उन्हें अपने मुँह को खोलने में मुश्किल होती थी और कमजोरी महसूस हो रही थी। इसके बाद उन्हे एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर लाया गया जहा डॉ यश चड्ढा (हेड एवं नेक, ओरल ऑन्कोलॉजी सर्जन) ने जांच में पाया की उनके बायें गालके अंदर कैंसर है। इसके बाद डॉ. यश चड्ढा ने चेलाराम जी का हौसला बढ़ाया और उनका इलाज शुरू किया। चेलाराम जी को ठीक करने के लिए उनका ऑपरेशन किया गया, जिसमें उनकी बाएं गाल की परत और गर्दन के लिम्फ नोड्स हटाया गया। अस्पताल में छह दिन रहने के बाद, उनकी फाइनल बायोप्सी के परिणाम में स्टेज फोर कैंसर का पता लगा। इसके बाद उन्हें रेडिएशन थेरेपी दी गई। साथ ही, डॉक्टर ने उनकी छाती से त्वचा ली और उनके चेहरे को फिर से पहले जैसा किया। चेलाराम जी अब पूरी तरह कैंसर से ठीक हो चुके हैं। उन्हें एक नया जीवन मिला है, और वे डॉ. यश चड्ढा एवं एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल का बहुत आभार मानते है। अब वह पूरी तरह से स्वस्थ हैं और नियमित जाँच के लिए एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल रायपुर आते हैं। एमएमआई नारायणा हॉस्पिटल मे कैंसर रोगियों के लिए सुपर-स्पेशियलिटी बैकअप, जिसमे दुर्लभ और सबसे जटिल मामलों का संचालन करने के लिए सहायता प्रदान की जाती है, 24×7 आपातकालीन सेवा भी उपलब्ध है। हॉस्पिटल में एडवांस ब्रेकी थेरेपी रेडिएशन मशीन, ऑपरेशन थिएटर और डे केयर पूरी तरह से उपकरण सुसज्जित है।

मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित करने बाल गोपाल हॉस्पिटल दे रहा है विशेष छूट

रायपुर में मतदान 7 मई को सुबह 7 बजे से शाम 6 बजे तक

वोटर्स व मतदान कर्मियों के लिए शुद्ध पेयजल, नींबू पानी, ओआरएस भी देगा अस्पताल

नर्सिंग स्टाफ भी देंगे अपनी निःशुल्क सेवा

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर के प्रतिष्ठित शिशु चिकित्सालय बाल गोपाल हॉस्पिटल रायपुर के मतदाताओं को प्रेरित करने परामर्श शुल्क व जांच में छूट की घोषणा की है। यह छूट मतदान तिथि 07 मई से 12 मई तक मतदाताओं को प्राप्त होगी। इसके लिए उन्हें अंगुली का निशान दिखाना होगा। हॉस्पिटल के फाउंडर डॉ. अशोक भट्टर ने इस आशय की घोषणा करते हुए रायपुर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव कुमार सिंह से मुलाकात कर इस संबंध में अवगत कराया है।

रायपुर के मतदाताओं को मताधिकार का प्रयोग हेतु प्रेरित करने नगर के कई बड़े अस्पताल, होटल सहित चेम्बर ऑफ कॉमर्स से जुड़े व्यापारिक समूह लगातार अपनी सेवा शुल्क में छूट की घोषणा कर रहे हैं। इसी क्रम में आज बाल गोपाल हॉस्पिटल ने भी मतदान तिथि 07 से लेकर 12 मई तक मतदाता के बच्चों के हेल्थ चेकअप व ओपीडी परामर्श पर 30 प्रतिशत व टेस्टिंग में 10 प्रतिशत छूट दिए जाने की घोषणा की है। हॉस्पिटल के फाउंडर डॉ. भट्टर ने कहा कि प्रत्येक मतदाता का मतदान देश की उन्नति के लिए आवश्यक है, ऐसे में उन्होंने मतदाताओं को प्रेरित करने इस छूट की घोषणा की है।

डॉ. भट्टर ने आगे बताया कि मतदान दिवस 07 मई को ग्रीष्म ऋतु में मतदान के लिए आने वाले वोटर्स और वहां नियुक्त मतदान कर्मियों व पुलिस बल को डिहाइड्रेशन से बचाने के लिए बाल गोपाल अस्पताल द्वारा ओआरएस, शुद्ध ठंडा पेयजल, नींबू पानी आदि की व्यवस्था भी की जाएगी।

इसके अलावा अस्पताल का नर्सिंग स्टाफ भी सहायता के लिए कटोरा तालाब क्षेत्र के बूथ पर उपस्थित रहेगा।

ISHRAE (इश्रे) रायपुर सब चैप्टर के नये अध्यक्ष रवि जग्गी एवं उपाध्यक्ष सिद्धांत शर्मा ने ली शपथ

रायपुर (विश्व परिवार)। आज जेल रोड रायपुर स्थित वैनिंगटन कोर्ट में ISHRAE (इश्रे) रायपुर सब चैप्टर का स्थापना समारोह बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस आयोजन में नव नियुक्त नेतृत्व टीम के अध्यक्ष श्री रवि जग्गी जी, उपाध्यक्ष श्री सिद्धांत शर्मा, सचिव श्री इंद्रजीत पटेल, और कोषाध्यक्ष श्री दिलीप महोबे ने अपनी शपथ ग्रहण की।

पिछले वर्ष अध्यक्ष पद पर सेवाएं देने वाले श्री के.के. वर्मा भी इस अवसर पर उपस्थित थे और उन्होंने अपने कार्यकाल की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। नेतृत्व में यह परिवर्तन संगठन के अंदर निरन्तरता और प्रगति का प्रतीक है।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री के.के. मित्रा, पूर्वी क्षेत्र के निदेशक थे, जिन्होंने मूल्यवान विचार साझा किए और नए नेतृत्व दल को अपनी शुभकामनाएँ दीं। गेस्ट ऑफ ऑनर श्री उत्पल बिस्वास, राष्ट्रीय सचिव, ने चैप्टर की हीटिंग, वेंटिलेशन, एयर कंडीशनिंग और रेफ्रिजरेशन इंजीनियरिंग के कला और विज्ञान को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता की सराहना की।

पाँच समिति के सदस्यों ने भी अपनी शपथ ली, जो ISHRAE के मूल्यों और उद्देश्यों को बनाए रखने का संकल्प लेते हैं। यह स्थापना समारोह चैप्टर के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था, जो वृद्धि और विकास के नए युग की शुरुआत के लिए मंच तैयार करता है। ISHRAE, जो हीटिंग, वेंटिलेशन, एयर कंडीशनिंग और रेफ्रिजरेशन इंजीनियरिंग की कला और विज्ञान के उन्नति के लिए समर्पित है, अपने सदस्यों और इच्छुक व्यक्तियों को व्याख्यान, कार्यशालाओं, उत्पाद प्रस्तुतियों, प्रकाशनों और प्रदर्शनियों के माध्यम से निरंतर शिक्षा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। संगठन उद्योग से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर जनता को शिक्षित करने और समाज के लाभ के लिए आयोजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समारोह एक सकारात्मक नोट पर समाप्त हुआ, जिसमें सदस्यों ने ISHRAE के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने और HVAC&R इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक स्थायी भविष्य की ओर काम करने के अपने संकल्प को व्यक्त किया।

कलिंगा विश्वविद्यालय ने IEEE MP रोबोटेक क्वेस्ट, IEEE R10 रोबोटिक्स प्रतियोगिता 2024 : स्टेज -1 का आयोजन किया

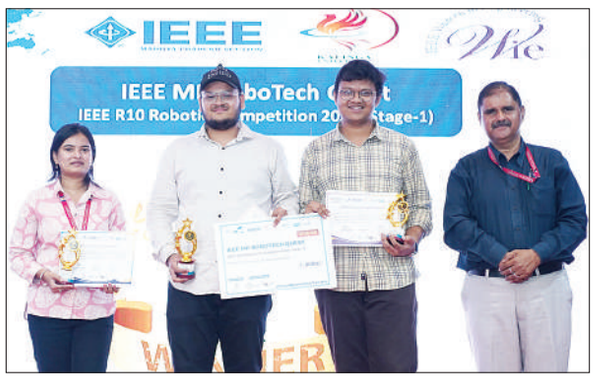

रायपुर (विश्व परिवार)। आईई मध्य प्रदेश खंड और आईईईई कलिंगा विश्वविद्यालय छात्र शाखा ने आज कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर में आईईईई आर10 रोबोटिक्स प्रतियोगिता 2024: चरण-1 का आयोजन किया। यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम सरनबास्वा विश्वविद्यालय, कलबुर्गी आईईईई जीएनडीईसी, बीदर और आईईईई एसबी जैन कॉलेज, नागपुर के सहयोग से आयोजित किया गया था। सरनबास्वा विश्वविद्यालय के कुलसचिव के साथ देश भर के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों के संकाय सदस्यों, छात्रों, प्रतिभागियों और स्वयंसेवकों ने हाइब्रिड मोड में इस कार्यक्रम में भाग लिया। सुश्री रूपल गुप्ता, रिसर्च एसोसिएट, कलिंगा विश्वविद्यालय उद्घाटन समारोह के संचालिका थी।

आईई एमपी सेक्शन के चेयरपर्सन प्रोफेसर जीएस तोमर ने विश्वविद्यालय और सभी प्रतिभागियों को बधाई दी जिन्होंने इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए अथक प्रयास किया। उन्होंने आईईईई डब्ल्यूआईई एजी एमपी सेक्शन की चेयरपर्सन डॉ. विजयलक्ष्मी की उनके समर्पण और प्रयासों के लिए सराहना की।

कलिंगा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. संदीप गांधी ने रोबोट शब्द के शाब्दिक अर्थ और पहले रोबोटिक इंजीनियर के बारे में बताया। उन्होंने छात्रों को इस तरह के आयोजनों में भाग लेने और बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया। सीसीआरसी के निदेशक श्री पंकज तिवारी ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस प्रतियोगिता की डॉ बी संगमेश, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग, जेएनयू, नई दिल्ली कनेक्टेड ऑनलाइन और श्री प्रवीण कुलकर्णी, वरिष्ठ महाप्रबंधक, आर एंड डी और प्रोजेक्ट्स, गोदावरी इलेक्ट्रिक मोटर्स प्राइवेट लिमिटेड, छत्तीसगढ़ द्वारा गहनता से जांच की गई थी। रोबोटिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित विभिन्न मापदंडों का पालन करते हुए प्रत्येक विशेषज्ञ द्वारा 150 अंकों से मूल्यांकन किया गया। इस आयोजन में 7 विभिन्न राज्यों की कुल 23 टीमों ने भाग लिया। कई स्कूली छात्रों ने भी इस कार्यक्रम को देखा और विज्ञान एवं रोबोटिक्स शिक्षा के प्रति प्रेरित हुए।

श्री प्रथम और टीम जिसमें एमिटी यूनिवर्सिटी, रायपुर और कलिंगा यूनिवर्सिटी, रायपुर के छात्र थे 8000/- रुपये के नकद पुरस्कार के साथ प्रतियोगिता के विजेता रहे। चेन्नई के श्री सोमसुंदरम एस और टीम ने 4000/- रुपये के नकद पुरस्कार के साथ प्रथम रनरअप स्थान हासिल किया और आईटीएम विश्वविद्यालय, ग्वालियर के श्री अंशित मिश्रा और टीम ने 2500/- रुपये के नकद पुरस्कार के साथ दूसरे रनरअप का स्थान हासिल किया।। प्रतियोगिता के दूसरे चरण के लिए शीर्ष दो टीमों को नामांकित किया जाएगा।

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों के निवासियों को रेलवे ने दी 58 स्पेशल ट्रेनों की सुविधा

दुर्ग-छपरा व दुर्ग-पटना समर स्पेशल एक्सप्रेस का गोंदिया स्टेशन तक विस्तार, बिलासपुर से यशवंतपुर तक चलेगी स्पेशल ट्रेन

रायपुर/बिलासपुर (विश्व परिवार)। अप्रैल, मई एवं जून महीने में जब स्कूलों की छुट्टियाँ शुरू होती है, शादी ब्याह एवं त्योहारों का भी समय होता है, ऐसे में स्टेशनों एवं ट्रेनों में यात्रियों की बहुत ज्यादा भीड़-भाड़ होती है। इन सभी को ध्यान में रखकर रेलवे द्वारा रेलयात्रियों की सुविधा के लिए योजनबद्ध तरीके से कार्य किया जाता है। रेल यात्रियों को अधिक से अधिक कनफर्म बर्थ की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु स्पेशल ट्रेन एवं महत्वपूर्ण ट्रेनों में अतिरिक्त कोच की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। इसी कड़ी में इस वर्ष दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे में उपलब्ध कराई गई स्पेशल ट्रेनों एवं ट्रेनों के विस्तार की जानकारी इस प्रकार है:-

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र राज्य के प्रमुख शहरों के निवासियों के लिए 58 स्पेशल ट्रेनों की सुविधा : ग्रीष्मकाल के दौरान ट्रेनों में होने वाली अतिरिक्त भीड़-भाड़ को नियंत्रित करने तथा छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र राज्य के प्रमुख शहरों के निवासियों जो कि ग्रीष्मावकाश के दौरान परिवार के साथ देश के अन्य शहरों में छुट्टियाँ बिताने व शादी ब्याह में सम्मिलित होने के लिए जाते है, उनकी सुविधा के लिए 58 स्पेशल ट्रेने चलाई जा रही है। ये ट्रेनें दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के अंतर्गत छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र राज्य में अवस्थित प्रमुख शहरों से सम्बलपुर, पुरी, विशाखापट्टनम, सिकंदराबाद, हैदराबाद, पटना, हटिया, रक्सौल, छपरा, जबलपुर, मदुरै आदि शहरों को जोड़ रही है।

मई महीने के दौरान दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर देश के प्रमुख शहरों के लिए 48 स्पेशल ट्रेन चलाने की योजना

दुर्ग-छपरा व दुर्ग-पटना समर स्पेशल का गोंदिया स्टेशन तक विस्तार- दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के दुर्ग से छपरा एवं दुर्ग से पटना तक चलाई जा रही समर स्पेशल एक्सप्रेस का गोंदिया स्टेशन तक विस्तार किया गया है। इन ट्रेनों के विस्तार से न सिर्फ महाराष्ट्र राज्य के अंतर्गत प्रमुख शहर गोंदिया के निवासियों को उत्तर भारत के प्रमुख शहरों के लिए सीधी कनेक्टिविटी मिलेगी बल्कि छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग, राजनांदगांव, डोंगरगढ़ के निवासियों को भी गोंदिया तक आवागमन के लिए अतिरिक्त ट्रेन की सुविधा मिलेगी।

बिलासपुर से यशवंतपुर के लिए स्पेशल ट्रेन की सुविधा- दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर से यशवंतपुर तक दिनांक 30 अप्रैल से 09 फेरों के लिए समर स्पेशल ट्रेन की सुविधा दी जा रही है। इस ट्रेन के शुरू होने से बिलासपुर, भाटापारा, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगाव, डोंगरगढ़ एवं गोंदिया के निवासियों को दक्षिण भारत की ओर यात्रा के लिए एक अतिरिक्त ट्रेन की सुविधा मिलेगी।

मई महीने के दौरान दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से होकर देश के प्रमुख शहरों के लिए 48 स्पेशल ट्रेन चलाने की योजना- रेल प्रशासन के द्वारा मई महीने में ट्रेनों में होने वाली भीड़-भाड़ को राहत देने के लिए 48 स्पेशल ट्रेनों के परिचालन की योजना बनाई गई है। जरूरत पड़ने पर इस सुविधा में विस्तार कर इस क्षेत्र के निवासियों को ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान अतिरिक्त सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354